THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO.
MBB—1971— 139-74

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

IASWR

MICROFILM PROJECT MBB — II

MBB-1973-139
1. Film strip number

56
2. Source

BHADRAKALPĀVADĀNA
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. + 880 = A.D.
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ
8. Script

12 cm. x 36 cm.
9. Size

7
10. Lines to a page

48
11. Number of leaves in complete work

12. Missing leaves

13. Author and Date of composition (if given)

14. Number of Chapters

15. Remarks This is thirteenth chapter of BHADRAKALPĀVADĀNA one complete story of Kuśa.

Feb. 5, 1973
Date photographed

रुतु आदि [illegible] मन्त्रा [illegible] ससलक्षं ॥ निग्रपू कथं म्य ला । स्मिनान नामृ नीन्यत्रः ॥ साधून्नृ मला राया कथयामि [illegible] थं निर्वा
[illegible] लिनर्वा [illegible] विभ्रमो ॥ पुना कथ हेतु पार्थ विभ्रमामि सदार्जुनः ॥ विनूप वाण हिंसुनः सस्य क्रम समन्वितः ॥ कः
[illegible] धियपुरुः ॥ सवन्धु नाम हमीश्रो वाना ध्यस्यौ नराधिपः ॥ नीतिधर्मान् सात्वही सर्व लोकान्नुवाध
य नाम समनहम [illegible] लिवासनन्दय ॥ [illegible] ह्वनालिमसल्लुस्य सर्व लोकाधिपाऽपि ॥ धर्मानुष्ठान सनिहक्षा पुत्रसद्नन्मा
दिंका ॥ मह्रपुसा [illegible] स्यस्य मे ॥ सङाम हीति वृस्या [illegible] प्रावकवालनकवी ॥ त्रवर्ध धर्माधिवाजस्य सर्वदिमार्थ स्टिट
म ॥ रुपार्ल [illegible] प्रिताः ॥ त सर्वतिरु [illegible] धर्मानुवानितः ॥ महत्व्यस्यौ तयस्यापि सन्ति नवेरा
र वह ॥ त्रवैला [illegible] सल्लान्विनवे [illegible] यतिः ॥ ऋमो [illegible] र्व मन्वविनाय ॥ [illegible] यदैश्वर्यं सम्पतिः विद्यन

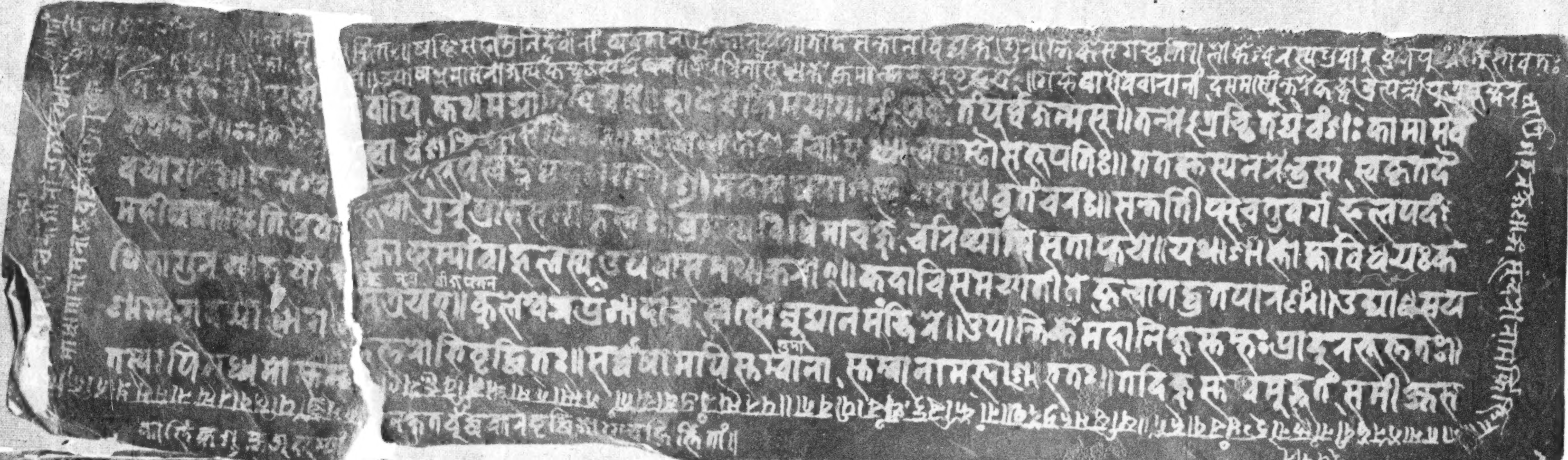

कौस्तव

ततः नारद सर्वमा त्या गत्य मव सह द्रम गी ॥ १

ति प[illegible] त्रिरुग्मिणिडाकृत्वा यज्ञश्चित्रि नमस्या ग्रथ गाँ ततः सनृपतियाज्ञा विस्मयापन्नमानसः । पृथ्वादि गम्य पाद्यमर्ध्यं स

मा म[illegible] लमेमहाध्याने मन्दिरं सयनाभय ॥ ततः श्रीकृष्णश्री महाभाद्र र्लं गाद्ध नाव प्रकित तः ॥ तस्यापि मध्यम

[illegible] गः ॥ कृष्णानामपि तच्चेष्टा सभे लारिभा प्रतिनतः ॥ तत्रिमि कौं समालोक्य गुरी वाक्यसैं गुर्लं रवैत्तम ॥

[illegible] धर्यिगुमर्द सि ॥ ततः इति स्थित्वा धर्मराजा निगम्य सपृ वादितः ॥ गत्य तिरात्रगत्वा ग । मिकृ कृष्णं च लोक

[illegible] च सचिवैर्श्च स्मो भारतः ॥ [illegible] नमि कि र्लं मत्वा । नृपतिमव मखैरि विः ॥ वाकु र्लं इ ध्य गाकस्य । नैमिरू र्लं र

[illegible] लं तयर्लं । मत्सीति श्च तुध्य [illegible] श्रीश्च तसपादि र्लं [illegible] स्वादियाथि गानृपः ॥ सत्त्व मवर्त वर्न नमि

[illegible] नानि [illegible] त्वा मा[illegible] मागा सेना [illegible] नित्रि का [illegible] याज्ञकः पृथि का सर्वाः समे स्या नन्दि माय यः

गः क्रमेण [illegible] निरुद्धा महानरकम्॥ यस्मात्परत्र सुखाय [illegible] गर्हि: प्रवचनं॥ एवं गमाध्यमील्कथं प्रयच्छेत् समीक्ष्य सम्॥
यन्धूर्नृपाति [illegible] सम्यग्व समृपाजयेत्॥ तद्वदनस्य मही [illegible] महीक्षी [illegible] मवानी [illegible]॥ सूनवि वाहिश्च उद्धृ सङ्गी गनैः समाहितो
[illegible] सवि स्याहि [illegible]॥ निभमपि [illegible] एवं सह मुदाग्रय [illegible]॥ नयादो पथि भयाम दानका दिव्यसन्दनः
[illegible] यन्तमातिन यथो॥ [illegible] निवा [illegible] दानकोदिव्यसन्दनं॥ उपलोदाय समीक्ष्य महीष्या वायय सदाः॥
[illegible] मासाहि नमुन्धता॥ [illegible] सदवर्जमकाविनं॥ समीक्ष्य नीसवर्षहं वसूलकुसमाधिनी॥ दिवा
[illegible] प्रसादितः॥ नागापि नसमासीक [illegible] नीयमिलासनी॥ पू [illegible] सचास्य नीलो स्यतसलो वद्दी॥ [illegible]
[illegible] नृपानिर्व वाः॥ [illegible] तिविका॥ विसर्जितामा [illegible] विनविचाकयन्॥ पूराहितमा॥ पिनं [illegible] नाजलकुसमहिनी॥

[illegible] थय [illegible] सुना मच्छार्यं यक्ष वित्तं ॥ विश्रय सर्व लोक [illegible] प्रवानयं [illegible] गिना ह्वा दिगं कृत्वा पूर्वादि ग वियरूपः ॥ [illegible] सपा लोक्क समू विधि [illegible] कयकृ ॥ ३
[illegible]
नृपर्षि तसमा [illegible] स्तं पग्ध्रे वमब्रुवीत ॥ समाहि नन्दगों नाम [illegible] शिवां दिशि ॥ दवस्व [illegible] दल [illegible] ध्रुनाकुर्वी ॥ [illegible]
[illegible] हिमन्दि गीनमः ॥ [illegible] प्रददो [illegible] सर्वार्थ [illegible] थ [illegible] ॥ ततः सपृथिवीनाथ [illegible] यथा विधि ॥ [illegible]
[illegible] सर्वान्यर्वदय ॥ ततो हि नन्दिना [illegible] सर्वनवनीयति ॥ पूर्वादि [illegible] समामन्त्र्य बमब्रुवीत् [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] नाम [illegible] ॥ [illegible] पूर्वा [illegible] विय [illegible] ॥
[illegible] सब्र्वा [illegible] ॥ नामन्त्र [illegible] काम [illegible] यत [illegible] ॥ [illegible]
नाम [illegible] ॥ [illegible] विद्ध्याते नाम [illegible] पर्यन्त [illegible]
[illegible] नाम [illegible] समकाः [illegible] ॥ ततः सपान [illegible] त्वयि [illegible] कम्पिता

कम

भूक्का स्कउपसाहास्य ःसैपानक्षत्तमर्थिगः॥उच्चर्लनेनूक्ताद्यौक्ष्यानः सूमनूपालितः॥द्वास्यौश्री लप्रदानेनसूक्ष्ममानाशिनक्रिः
मा ला मूलान्दूप्रजाव समपक्रूष्पाक्षपालयः॥उत्तलगानरामाक्षय क्काद्यौसमनूपालितः॥एवंसंपास्वमानाशौ सर्वाशिनूपमारुति
पलि [illegible] कौरुद्रुदरूमिवपङ्कजौ॥एवंयलिश्च रूणि सर्वोत्रः कूमानः सफवर्षिकः॥गुनूर्वौलिपिश्म लायां नाह्णप्रवीण
गल [illegible] ःसर्वः॥शिष्यस्थामा॥त्नयपाक्काम॥क्षितिपीनामाधुसर्वासा मयिपार्नीसमायया॥नको व्याकरनमकाषालैकाया
द्धिय [illegible] मसपि अक्राहभूमामेहुपालीसमायेयू॥फवानः॥एवंक्रेमदसर्वासां कलानमिमपिपावराः॥समवृद्धिगु
नूस [illegible] पनदर्यः॥ नकः सर्वावलानालीजा दर्गमीथा॥ तिसन्द्रनः॥राजान्वसमसमानूक्ष मूदानमसहायकंशेतनःस
म्रूपानिहा [illegible] धर्मानवानिदी॥दत्वा गश्छिधिनानभै स्रोवनाशापददवी॥नगयमूवातःशः काकृ यीवनागपदंमदा॥संडायका

[illegible] नु वा [illegible] प्रकथ्य॥ स पूर्व [illegible] नृप [illegible] महा [illegible] प्रार्थ्यते॥ नृपो [illegible] संवरः॥ वनदृष्टी पकात्रीर्यो [illegible] मा [illegible]
[illegible] संपूर्ण [illegible] घालयत॥ २
र्थ्यया स[illegible] धर्मसमाचरणं॥ ततः स नृपतिर्वृद्धिः सर्वभूमिनिरोगान्वियः॥ [illegible] काकूर्ण महावीर्ये समन्नृपस्य वाधयत॥ त्रि
विंय [illegible] नृपासन॥ सर्वधर्माधिपं कृत्वा सर्वलोकाधिपं व्यधात्॥ ततः स नृपतिः श्रीमान् निःकाकः पृथिवीश्व
नः॥ [illegible] निः[illegible] सर्वलोकान् अपालयत्॥ एवं स नृपतिर्नोगा सर्वधर्महितार्थरत्॥ श्रीतमजानिव संपाल्य सर्वासमस्तानन्दयत्।
तस्य [illegible] सर्वलोकाधिपा अपि॥ सदा तस्य समीपस्थाः प्रावर्तयत सदा शुभं॥ एवं तस्य नरेन्द्रस्य विषये प्रसमन्ततः॥ नि
नृ[illegible] कानन्नकेनी॥ एवं [illegible] सत्यधर्मार्थसाधिपः॥ न प्रजाद्रुहि नाचापि वेरूव दैवयोगतः॥ ततः
स नृप[illegible] सर्वदा निशीः॥ सद्धर्मनीतिमतीः कान्ता उदय भयचाधिर्विवि॥ कालिः ससस संनको नृपतिः संप्रमादिकः॥
यथा [illegible] [illegible] सर्वी॥ [illegible] नृपतिसुविनादपि॥ न प्रजाद्रुहिना वापि वेरूव दैवयोगतः॥

गणः स नृपोत्तिनृपैर्नाज्ञा वं अत्यक्ति निरा भि ॥ कृ वं नम न ला मनक्षेवंधा विक्रय ॥ ः यंमा ध्वरी स म्य त्तापन्न स नृपस
म ॥ न पूज्ञा दृहिता वापि विग्रमकेन द गुना ॥ ः त्रिस्रै त्रि स्य समी ड ः काकृः सन्मानिः छ ति ॥ पूत्रा हि ति समा मन्हा संपभ्रत्र व म
[illegible] नम पूज्ञा दृहिता वाथि विग्रम ॥ अपक्रा मृ ष्ठ ना ग्र क्षा यीयां नूनमक्ष ग ति ॥ नादि दी विषयं स र्ध मोजमा ख्या किडा
[illegible] स्कृ दृ पार्यी समा हि थिडा ॥ ॥ ः ति स प्रार्थि गी नाह्य पूत्रा हि का नि अभ्यासः ॥ वि व क्रा छ भ न ग्रेन्द्री सं समी क्षे व
[illegible] महापाय यदि वेगे त्रि मि सिा तन्भे र त्र व व र्म ग्रि त्वा सं साधयत थप्र हा ॥ ॥ म घ्य था हि त्रि क्षप क गुः
[illegible] पं व म्यां व वं तु र्द त्रो हु छप्रस व वै त सा ॥ स्व क्रा क ः पूनि का ना मा स र्था ः स्व स्कन्द वानि का ॥ क त्वा पूं सा ति नः
[illegible] र र्व ॥ उ व ं ग व र्त व ः पूत्रा ः प्रत वि व्या क्ति साध व था न त ः का कृवी उभयं विस्की ष्ठि त व्य ा व ला ॥ उ व सा स्का स मा

[illegible] पुष्पा [illegible] वीस्वामिनाकृत कृष्णं [illegible] ॥ तत्प्रवदननप्रा [illegible] सा [illegible] दा कृपि नमूकाल कृतिमत्रा [illegible] वचुत्रा [illegible] नाम्भ विचना [illegible] लाग [illegible] मि [illegible] पन सालि नव [illegible] न कृतायउक्ता ॥
[illegible] ममना [illegible] कुम कृ [illegible] न कि प्रथ्या [illegible] ॥

दिर्वनि [illegible] मा मनना धिपश ॥ समनूमादि [illegible] स्थ्म कर्णुसमे [illegible] ॥ तत्कः नृपति [illegible] र्या मलिका नामसत्प्रियाँ ॥ नात कृ [illegible] प्रतिष्ठाप
[illegible] ॥ ततः पूत्रा [illegible] मादृता [illegible] पृथयवा [illegible] ॥ सादर्नसमूपामथ्य सं पत्न्या [illegible] वमत्रवी [illegible] ॥ [illegible] ना ः स्वामिनानाङ्गवं
[illegible] सवा [illegible] र्या [illegible] पिरपक्का [illegible] वियपवसि ॥ [illegible] ना ः प्रमच्य ः सर्वा [illegible] वास्वर [illegible] वाचित्री ॥ [illegible] सि
मन [illegible] ॥ [illegible] गि [illegible] समादिदृ [illegible] ना ः [illegible] ना ः ॥ तत्र दीपि प्रतिष्ठ [illegible] ततस्कः पृथयपुः ॥ तत्र्या कः पु
ति [illegible] ॥ [illegible] वदक वर्तीकाली [illegible] ना सर्वन्य वपदय ॥ [illegible] लोकः पूनिकोः काश्चि [illegible] बनितुमी [illegible] ॥ काश्चि
लक्षा [illegible] तिष्ठि [illegible] ॥ [illegible] समा [illegible] समीक्ष्या ॥ किमर्व प्रमदा [illegible] नृपत्नी [illegible] विकयत [illegible] ॥ [illegible] र्थ
मिमिति [illegible] नन्द [illegible] कथ्य ॥ [illegible] ना [illegible] ॥ [illegible] तिसं [illegible] नृपधृ [illegible] ॥ स्वर्गि [illegible]

९३

समा[illegible]नाय राजधानमभ्यागमन ॥ तत्रीति क समाश्रित्य श्राद्धा हसन्ती ॥ श्रीगन्द्रिय ॥ ध्यानयात्तस समामन्त्र्य सपद्मपत्रेन मब्रुवी ॥ ध्यान
पालाद मायामि गृहे त्वास्यनृप यौयक्ष ॥ तत्वम सामसीन्द्रस्य दर्शनमानुपादिम ॥ इति गत्वार्पितं कृत्वा प्रतिसानरूथ तिस्थास्व
सायुनमो [illegible] त्वा स्वामिन्द्र वमब्रवी ॥ देव समागता विप्र ह विमानी श्रीगन्द्रियथ ॥ रुवसादर्शनकांक्षं मिच्छन्तानीति तिष्ठति ॥ इ
ति [illegible] ता नृपतिनति नर्थिते ॥ ध्यानपालेन नामन्त्र्य सादरमथ वमब्रवी ॥ गच्छ स्वीया लपालात्र आश्रु समानय ॥ इ
यद [illegible] गृह्याति पूनर्यामद ॥ इति नाज्ञा समादिष्टं ध्यानपाला[illegible]नि सम्पास ॥ गच्छितं स समाहृय याज्ञा कि कमपा
नय [illegible] हक्षु सह्यात्कि कमृदा त्रैसे ॥ जय राजाशिषं दत्वा नाज्ञागत्र समाश्रय ॥ तच्छित्वं स समृपायातं समीक्ष्य स
सनत्रादि[illegible] सर्थमिदब्राया सि वद स्थिति समादिश ॥ इति नाज्ञा समादिष्टं श्रुत्वा सनत्रकुमारि वाधिपः ॥ काश्रीकीयमृपाम

न्त साधन म [illegible] शिला ण॥ राजन त्वमि मे विप्र मक्त पूर्व प्रदर्शय॥ यस्याप्य सामनो नकू मसे णां दाशिमिनी॥ एवता सास मादिष्टं का
कृ कौ [illegible] कार्य ॥ मार्थ ण्याकृत्य पूर्तं विप्र मक्त ४ पूर्वे त्वं प्रदर्शय॥ पा ४ मर्षा ४ प्रमदाः का का समीक्ष्य सधि गज मा ण्॥ नो सा मे का मः
पि [illegible] [illegible] नि [illegible] चा यू पश्री पं ४ स डाक्र ठी मत्य नवे कुसप्र ना गतः॥ अप्रु सन्न मृत्वा फां गं ४ ज्ञ मे नेव मत्ता एक॥ या मन्ये नर्षास्त
का [illegible] मला मम्भा गनत्तरी वि मतिन्द्रा फें सदर्शयन्तुम नृपा॥ [illegible] तिन्त्वा शिं तंड्रो त्वा नृपाविस ४ महा मति ४॥ डाक्र हा ई
दी [illegible] यक्ष्य वनसादि ण ४॥ अप्रवित्र कर्षे पूद्धि सत्वा यो सृग्न ति वर्णे णा॥ गतस्य धैर्य से मा तं च याच स्वया रघ मवति॥ नवा
नि वो दि मे सर्व वा सामि मृ जया व्यहं॥ गतु दर्श मया ठार्य सक्षाव्य समा सत्वं॥ ः णिया हां दि तंड्रो त्वा डाक्रत्ता म ति वाधि त॥

क ३५
कृ ९

नृणि पितं मन्दा तल समभक्तवेयमडविण॥ नार्दना कन्तामिन्त्रमि सागमेडयर्या किंचन॥ यति तविध्यग वाक्क मतिन्काम वद दिम॥ इति
तकृक मनकपृ। सनृपयाति विचितिक॥ किं कृर्यामननवत्रा [illegible] सान किविधिचितः त्रवौहितनृपे [illegible] कृक्का लिन्दाम खीसर्वी॥ माला
का [illegible] छिकमवसांबुविण॥ अनविप्रा मसर्ले कथमवडगषस॥ अलि कामदितिर्विं नाहः॥ प्रियामपि यदि कुसि॥ अहः
ति [illegible] याबल्लाशीति भालिया॥ साडकमापनवकृत नमातिक्वग गान्यतया॥ इति तया दिनंग्र सा अक्क रहसारिक
प्रिय [illegible] भकमवग सलं कृक्काभवमरामवतः॥ अं मैत्र कृ कुवदवमा मालाभवविचिग्या॥ अलिन्कामवभविलं प्र दृवाग्धसे
किनावमा॥ इति गगतृक्षमाकर्णं त्रिनिकागान्ध डषिका। अक्क तंगीलिंतां गीती पक्ष्मनेयमरागता॥ अनआक्कसमूरासि कथम

वपुरावरा ॥ अलिन्दा मत्प्रिया नाद्य यदस्यामर्पितं मनः ॥ यच्चापि सौविदश्चित्रा राम रु[illegible] कक्षानिद्वलक्षा ॥ अवरूर्ज्जन्विकास्तु [illegible]वी
नविरतम[illegible] प्रतिलिन्द्रा श्रीसमादर्वीकाकादिव्यानि सुन्दरी ॥ यूवविकल्प समाला. सर्वे[illegible]क ल्पारितमाद्रिजयगत्वौ विकृदनूपर्सा. द्रष्टुं
मपिन[illegible] [illegible] [illegible]वापिनवोद्धगरा कुङ्कुमकथं त्वया विना ॥ इति गन्धत्रमाणिष्ठ. नगिरातृतीयदोद्वसि ॥ प्रमदयान्यया सार्द्धं सदमस्य
याथ[illegible] [illegible]णिवलापत्याप्राकं [illegible] त्वाद्वि [illegible] ॥ दीपानित्वकृषायगन्धकांवति भवमखवीत ॥ अनमनानमनके मन्या
सूव[illegible] ॥ तस्मादमयमावंदि सुगन्धमवपयया ॥ अलिन्दा मववाञ्छिमि. नलमिवनृपाह्वया ॥ तदिमी संगृही त्वार्द्धं अकयस्वात
यंङ्गी ॥ यच्चालिकामयासार्द्धं. नमिगुर्लिवयावगा ॥ नन्नंश्याचिनादस्थान्तासिकृष्यासती मयि ॥ इति [illegible]कारिनक्ताश्री. [illegible] ४ सपत
त्वमन् ॥ कामलिन्दावलनापि. गृहिगुंसमूपासनम् ॥ पद्धिजमरिनकार्क. सन्त्यक्तवीसमूपागाती वितान्क्वणसितामवी. लिवेलापप्रकल्पि
गा

कृ म

गा। कां स्कन्दकीर्तिमिं वीक्ष्य सर्वांपि गसर्वीजनाः॥ कानूष्म रितस्ता रक्षेस्यां रीताउश्चेविस्तापित्र॥ चिरं गिल्ला पतवंश्रुत्वा सतरत्नं समृद्धि
तः॥ सुहृत्साकं पूर्वागत्वा गणालिङ्गालयं ययौ॥ तत्रा मांमहि॥ श्रीदेवी मलिन्दा मरिमूर्द्धिगी छङ्का नृपसमासखासर्व दक्षायग्र्यं मवायं
यः॥ [illegible] ही समाश्रय प्राप्त मांगप्रियंप्रस्तौ॥ क्षेर्वमात्यैयगिछात् मा विषी दत्तयंनाग॥ यत्र पूजानपूजीव गनपूनाहिताभूया।
मम [illegible] हत्कृत्य धर्ममयाहि॥ गादस्वामन्नाजो सर्वं ग्रन्थयासमपाछिताग॥ अस्या शिवा लिङ्गं गत्वा मनः सीतविगाविश्या
[illegible] समादिष्टं निष्पमाणा॥ अथतिन्दाग्र रितिं प्रास्या मौनी रत्नान्यर्पदिताः॥ गताः सन्नृपति सर्वो नगागत्वा लिङ्गा
सर्वी॥ [illegible] मातीत गाव्हि गादेव विकियमा॥ तताः सखा कतो सत्य पूतस्य वर्द्धित किंकं॥ अरितिन मायिदानिङ्ग [illegible]मतया रिगी
लिङ्गी गृहं गत्वा नमस्कृत्य [illegible] घटं [illegible] मृन्मयं [illegible] कमण्डलु [illegible] मृन्मयं॥ प्रविनिर्मायदानि [illegible] निलयं सधिकं सकलाः॥ ता

श्री २ १६

नाविश्रमनन शाश्वमानापि सासती॥ कस्य गृहे भाया [illegible] मेवा सुदयमिष्टमः। गृहे ख्यान [illegible] काया प्या। न्सदिशा प्याशिनकृयिन॥
वरनापि [illegible] स्वाय [illegible] दिकृतो सुकर्णमः॥ गगस्य मूर्ति [illegible] शा क्ष। सा म्हा। अ प्यानिनार्मांगः॥ हरूं धृ स्वावमनोपि, गृहनं पुं ताका चयपूा
सानि [illegible] नि ज्ञाक्षा [illegible] न स्वपापि ना॥ [illegible] वातस्य, आक्ष [illegible] स्यान्वगम [illegible] नेः॥ गठसज्ञा क्षमनी त्वा तामलिन्दाः
निक [illegible] त्रिय सम्यग्भवं वव मे [illegible] वी॥ आगत्य हसमा त्रिय, रक्षा दानं मयासह॥ नृति दानपुदे खाम, मसा
नन [illegible] दिगं क्रसो, मालिन्यानति शांधिताः॥ तत्र रक्ष्म सन सी [illegible] न्मविदनयनाप्नुषि॥ मत्र रक्षम सनासीः
नीं पन [illegible] मः॥ ज्ञाक्षः शिग्घट [illegible] सम्यग्भव वव मडेवी॥ [illegible] का क सु [illegible] मया सह॥ पुह प्कांः
मांसमा [illegible] मनाम [illegible] भाषयः॥ वसेज्ञाधंमानापि [illegible] नन्दिगन्मना॥ [illegible] समयि निवाकाक्षी। किञ्चिदपि वराघन॥
[illegible] प्रत्नं त्य मनेस्वत्वा सुर्षा नाग्निय लंघयन॥ पुराणं सा निर्माय [illegible] मयं गृहं। नत्व मया सन [illegible] नृपंमदर्शय॥ गजनृपतिमा [illegible] मयं

मलिन्तां समाला। कु गुरिष्विषु समूपायातं दृष्ट्वा लिन्दाघिसा समी॥ गत्वा न्यग्रालयं गृहे मोनी रू नाय प्राद्युम्नी॥ मत्तासी नी समी क्ष
सै श्राक्र [illegible] नाद्यूरवी॥ पूर्वोरा त्वा समा त्वाक्ष ऊरु सरू तसेवी गनाऽ॥ गत्पुरु तिन नवं गृ त्वा सर्वोपा निनापिका॥ यः प्पनमृत्युः
यमा [illegible] वीस [illegible] ल नेव मकर्षय॥ वला क्वा लक्षा गादि द्वी त्वालयं भैमतुमध्यगा॥ तं दृष्ट्वा विप्रमा त्वाक्ष ताः सम्बर्द्ध्वेवमविख्रत
यक्ष [illegible] रथा लङ्घ्याद्दर्शं द्विरा पर्ति॥ यथाश्रि ल खिगंगी यं रू स्वा लर्ग सदासर्व॥ ६ विगतकथितं गृ त्वा दवी लक्षीति
नाथि ना [illegible] पतिनाम समूद्धार्यं विललापमहत्त्व न॥ तां दृष्ट्वा कि सगीं दृष्ट्वा सर्वां सख्यापि लक्षिणा॥ गत दगृ कि लिकास्यः
पुविलयमहत्त्व नेश्च नर्धि लापनवं गृ त्वा सनने श्रिति गं किना॥ सहसा त्वायेगु नष्ट्रदृ अ कः पूनमपासय न॥ नत्रालिन्धनू
दान्ति मां दृष्ट्वा पतिनमाधिप॥ गतः सखा कृतः पक्ष ननि कां ससति मापि॥ सन्निधमवक्षुषा पक्ष्य गृह नतनुमवाधयत॥ गननाः
त्रि

श्री गं स्वस्ति [illegible] विसमर्यं पयो॥ नमः साक्षाय मूर्त्तय पदवनाज समीक्षगीत प्रदत्वा सोमे लिखित परमा। की निश्चयं स्तुतिया। नामवसंहिता गौवीक्ष देवराजः प्रराखनः [illegible] त्रिरघवक्त्र पालिता तं परम नैवम।
[illegible] सदसदा तित॥ [illegible] प्रथम त्वा मजः॥ पूर्जो नाम्निवाङ्सितायिव॥ मदंगवीजमा दायक खंदा मिसा वजे॥ यदी [illegible] मसपूजा [illegible] गुटिकामिमां [illegible] यासामन
[illegible] यिव [illegible] खूनामरू [illegible] त्वा मजा वीन॥ सर्वगुणाहि मस्ति मः॥ सधी॥ श्रीमान मसात्स्वाम सीय ति॥ समृ हवन॥ किंत्वं यधवर्त्तुन विच्छन्दाडवितासि
[illegible] यित विशुद्धात्मा [illegible] पाशवन॥ यन्मयितमनायकं संत मितं नवांक्ष मि मतन विरसत्र यो।गाड वस्तु॥ सत वदपि॥ यदि सदानूयकोत्वं स्थमि
[illegible] तमातवल [illegible] दिव्यमन्दय॥ ॐ स्वादिम्यसतगक्रमनमक ध्यायि गदं कम॥ गत्वा यदवसता मा ध्यसर्वभमतसमादिगमृ॥ प्रगतसर्वसमा
दिर्व [illegible] त्वा सर्वं यिममन [illegible] तिसम वे कवन्नूनं मि भिडा क्षकमाखजनू॥ मना लिच्यायिसादवी मृ वश्रगु टिकां मदा॥ वद्धांगुकेप सत्रा त्वामत्वा न॥ यू तसमा विगद
त्वान॥ पूय [illegible] निसानां सद्य सत्र मरवा मृजां॥ दक्षा सनयमि मम सदता नव॥ य वन मृ॥ मत सीनामलिच्यांकांम सब्रू मस्वामजा समीक्ष्य पसरसमीत॥ प्रयक्ष
वंसनादनानू॥ किंप्रियमत्य विभय्य मन॥ संसा यिनत्वया॥ ससनदं ममा [illegible] वन ध मीयमिक्ष मि॥ ॐ स्वादिसंतयन्त्र॥ श्री स्वासिं दासतीमृ दारजगतसर्वभवकानकनत॥ पु
६॥ [illegible]॥ [illegible]

[illegible]

ग्न्य वदयम् ॥ ७ वं हृाषिनं ॐ न्वा सनन्न डामि विभ्मिन ४ विनृयम्क नवत्यूतु, ॐ मिनं ध थ्व्यापिन ४ ॥ नन ४ सनन्य मिन र्ल नां म दि षीं सनीमयि । क्वा अग्नि यवतु वायत्र्य
न्य स्वादि । ओ वमडवीन ॥ ७ ज वयद्र्मन मदयम्भन आ सनं न्वया पलांधि न्वामा षिनं यायें, नर्जै ख्वयिहु र्ग दं ॥ ॐ मिण्वा कानू पावी ऋ नस्या जं गुकव ध्विमां ॥ ज्ञाखिय मा
ग हीरू र्लानि षघ्न गु डिको स्वयां ॥ नड सनन्य मिनर्लाम यर्स्मात्र मघी ४ ष्डिया ४ अम मूया मन्म मां ध त्वाद र्मयन्नवमादि अनू ॥ छ्रयि सर्ब्वा ४ ष्डियायु यमे षद्म गु टिका मिमां ॥ य
घा म्यू ना कु मा ॥ ७ ष डादा [illegible] न्वाम ॥ ॐ मिन र्जुस मा दि ष्मं ॐ न्वना ४ ङ मनाव्र यि । सर्वा ४ मा न नि मिर्खं स्वरू थयारु तमि क्वि थ ॥ नन स्कां गु टि कां न र्लाघर्ष यि त्वाय
[illegible] ना ॥ न स्या मदाम य [illegible] आ रुव यदये ॥ सर्बा स्वया षिमा नर्न्नु ४ ष्डिया ४ सृत्रिगध मान सा ४ ॥ नत्युद रू कु आ ॥ ७ घड स्यकें वि ॥ ङ्कु मा स्त्यनू ॥ नत्स मा कर्न्त्र सा लन्वाम
[illegible] लसृ षियां स्वरवीं । स्व ह मा त [illegible] डूय पथ य रू वं समादयानू ॥ न ड दषं त्वं याय षं के षद्म गु टि कं वृ दत । यज्ञा यस नि ष षं नं नतु सं द र्मयङ्क नं ॥ ॐ मि न र्व्वास मा दि षं ॐ
न्वामा स्थड्या स्वरवी ॥ नाम लि न्यां स्वमी स्ववी, सम्यम्य न्वाव मेडवी नू ॥ म वियफायस घ षं, न स्नयाम न नि स्क न ॥ जम ध्मिन्न्र प सघ षं नत्स ङ स्वयदी क्वं मि ॥ ७ ह्रि दा विम

यासार्द्ध नसंदर्नया म्यदं नजसमिश्र नकार्य्यं । नक्रुन् त्याकिवाक्किनं ॥ ॐ ॥ किनउक माक नर्ह्य साद्वी सद सानया । सख्यास हसम ल्लाय न उड मु मयासन नु ॥ नजाय
यासरवीमानमयलं दयाष्ठ [illegible] र्य्यन न द र्गिंमं समानीक्क सानजसमपश्चन ॥ मदीघथीक गालि फं द क्रू भक्ताव्य साम्बुनाम न कृ आ ग्र गक्षादाय विन्दु मकं समाद्दन नु ॥
[illegible] मायनसत्वार तुजन [illegible] दनानु ॥ पविवक्रनालस्यायाशुवर्मुक मांगिका ॥ ॐ वं नाष्ठ मदा ४ सर्वष्ठ कानज्ञ नयं वकाश्न दाश्वशी भ नावनगा पृं न्यश्र भानवन्न
या ॥ जमघयाशुवर्मुंम [illegible] क मांगिका ॥ अपर्छि नक्रनाजासत्वजमघवर्ष्किमादनाश्न ॥ नन श सामसि वी दवी, समयस नदायकं । इवर्लु कृ पृ मयांगंस्त्र लपादंम
सादनं ॥ तंभ्या र्फे स्त्र लम क्रू न स्तु लयाम सियान दें नस्त्र लकर्दुवदत्राक्षी. स्त्र लजि र्द्धं वदन्मूखं ॥ ॐ ह्रद्यपूजं इयाकाचें माफालिन्दाससमीक्ष सा । दायाय मिनिभास्कोवनस्त्र सं
क्षिन्नमानसा । नमीह र्दु नानाकोन समीक्ष नत्स खीजनेश ॥ सायाह स्तुदयंपूजं नथंसंजायनक्किदं ॥ ॐ ॥ किभा न्हा प्य का श स र्व्वा श सख्या फि विस्मयान्वि ना श ना मलिन्यां भिया
दवींस मान्श्रस्येव मब्रवीन् ॥ द वि माज विशीदस्व नि सख्यालं व्याधेर्य्य नां जवम्यं नाविनावादि. नवकिसर्व्वद हिनां ॥ ॐ ॥ किनन्नदिनंरु त्वासालिन्यानासि वीय सम नमास

ॐ विकस्वांगमः४थि सदादः पालयमू ।। आज्ञपियाथि न ४ सर्वांज्ञकांत म न पंचकाः४ ।। भामव न स्क म ज्ञेव प्रयकें दायकं स नमं ।। सर्वं न दायकाः४ काकाः४ स वर्न्मुदिव्य सन्द
नाः४ देशनो था स्य स नः ।। ४ स स न्क थो नि म ज्ञि माः४ ।। काः४ सर्वा मा न व ४ स्वं स्वं दायकं दिव्य मून्द यं । संभूजा नं समाली क्क भाग्यनन्द न्भ वाथि न ४ ।। दायका संभूजा न न्का सर्वा
दिव्याणि सुन्द नानां भ्रं वानि नन्दि ता वाजा थि माडव्य मूपाम व न यां न ज्ञ स ज्ञ न वो ताजा सर्वा न्मा न्दिव्य सून्द वा नूः ज्ञ म गा ति समाली क्क भाग्यनन्द न्भ मा दि न ४ ।। न न ४ स
जनकस्क थां सर्व वा न मपिस [illegible] थानि वा ज्ञि नं ड यं स वर्थि स्था मूदा द दो ।। न न क थां स पूजा गां सर्वे षां स पिता न्द प ४ ज्ञ म ग जा न क स्मा नू यथा विधिं व्य धा प य मू ।।
[illegible] स्क थां स्व पूजा मा सि व [illegible] ४ थि ता कू मा मि ज्ञ नि ना मा नि कूत्वा भा वा न य ज्ञ वि ।। ५ थ मस ठ्ठ उक्कू ओ ना म भ्रु क्क कू ।। द्वि ती य क ४ द व कू म स्क नी य ध ज्ञ वि कू ग
तु र्थ क ४ ।। कू भा डू म स्क मा न्य य ।। पष्ठा म त्न ज ४ स्म न ४ ।। म त्ता कू मा रव्या न व मा दं ज्ञ म्क न्ना य व ४ ज्ञी वर कू ज्ञ स्क मा न्य य म य यू न कू म ठ्ठ त्वा पि ।। ज्ञ वं न थां स पूजा गां सर्वे
वां न पति म मि या ।। कूर्ग म ज्ञ ति ना मा नि कूत्वा भा वा न य ज्ञ वि ।। न न स्क न्दा य का स्वं या ल न ना ति न क्क ग ज्ञ जी म्म मू प मा हू गां स मा पर्यि त्यि मा न्द प ४ ।। न न स्क दा य का ४ स

र्थ श्री हिस्क हितात्मना ४ स्व स्वाधिकान संयाल्य मा ना ४ संयं विव र्द्धिका ४ आयचियूष्ठ न्द्रिया ४ का का दर्शनीयाम ना स्ताक्ष सम हि (अ हि मा ज्ञा सन्य मा ४ कू व सधीन्नूसा
ज्ञान्निसायाक्ष सूनस्यव विद्र न्यवदूयाकू न ४ अज्ञानक र्म्मादिसं स्कायं ना ४ कावेयत्तिय मा यिस ४ आस स्यनामज नन्म व कू अ मि नि भुवा यि नं ॥ न त्राम्नाय प्रथिन ४ सो स्त्रद
न्याम नयाकु वि ॥ न न ४ [illegible] क्ष्ठा कूर्वान्य श्री ज्ञायना न्यचि ॥ न घाम यि हि सर्व षां दा यका नां द दो मू दा ॥ कू अ स्थि व द दो ने व कि चि न्क्री ज्ञायनं नू षा ४ कू भस्मान्य वि
सर्वा गि स मी स्नू या द द स्य [illegible] ४ श्री ज्ञाय ने ४ स वे ४ प्रव मि ल्वाय (थ क्रया ४ पूव स्मान्य यि स र्वा गि ज्ञा ह्र षां प्र द दो मू दा ॥ न न स्क षां कू मा या घां सर्व षाम यि हृ य नि ४ ॥ गमम
गा स्य नागम नां व मयानं मरन्द दो ॥ कू अ स्थि व द दो ना यि क चि ध्यानं यि ना यि स ४ कू अ स्क षू स मा यू स्क स्व यं व भय (थ क्रया ॥ न न ४ स ता नि स र्वा गि ज्ञा ह्र षां प्र द दो यू न ४
न न स्व षू ह मा नू स्क , सर्व न ज्ञा न या व म न ॥ न न ४ सर्व कू मा या स्कय यि यू ष्ठ द्विया ४ या ४ ॥ वि अ व आ य न यि ज्ञा स क्रू नू गां स म र्पि ता ४ ॥ न न स्क नू गु व व ४ स र्वा न स्वगि क्षा पयास्ति
पी ४ कू भ प्र का नक स्था यि गु या र्हत स म र्पि त ४ ॥ कू (आ गा ल्वा ल्व यं न ज्ञा ह नि ४ स त स क्रु या ४ ॥ लि पि श्री ली मू पा ग्रि स्य न स्को प र्य्य स मा स्कि क ४ आ मा नू ता ल्क क्रि क्रि तां

सर्वास्मनीक्ष्य सान्तवाधितः॥ सर्वेषाम्यजाताह्यांलिपीनायालमायच्योगतः॥ सर्वकुमारस्य उज्जियाध्यनुजिज्ञिः॥ताजेपिसानुजिज्ञिस्वास्वयमवान्वाधितः॥
ततः सर्वकुमाराक्ष सर्वभक्तानुजिज्ञिताः॥काव्यपिसानुजिज्ञित्वास्वयमवाय्यवृध्यतः॥ततक्षजातनः॥सर्वकलाविद्यानुजिज्ञिताः॥ताजेपिसानुजिज्ञित्वास्वयंसर्वा
जेष्ठ्यतः॥एवंसर्वासुविद्यासुकुशलीसकृगः॥सधीः॥सर्वेषामपिजाताह्यांविशिष्टाहृच्चिवक्षः॥एवंविद्यांमहात्मत्वंकृगमितिविचक्षणैः॥गत्वा समीक्ष्य समीक्ष्य॥
यितायिविस्मयंययौ।ततः ... तकायाजासमीक्ष्य ताविवक्षणान्॥ममाक्षकारवडाजाक्षवामिनिव्यांचिकयन्॥ततः॥सतत्पश्चात्कुर्यन्त्रयांदिनपापातवनः॥मिमा
ययममजासमवमिति ... ता॥ततः॥सजनकायाजा॥मायकानांमहत्त्वं॥एकंसमाधायनिष्ठाप्यमहत्त्वाशिमकान्वयतः॥ततस्तानां तमजान्सर्वान्ययंवगतकुमार
... पुनरततः॥सममपामन्त्रस्य ... वमठवीन्॥ताकुमाराकृप्याशिमांदकानांसमीक्ष्य ता॥जेष्ठकममकमादाययसर्वजागच्छतेकं॥ ... किंपितासमादिष्टनिमेयक
कुमाराकाः॥सर्वततथनिस्ताष्यसदसातद्राववयन्॥ततमादकांताशिंता॥समीक्ष्य तकुमारकाः॥एककमकसमादाय॥सर्वपर्यामसचारिप्य॥कुआपिसदसा॥ततः

पधिगावन्तु

ज्ञातमायस्य श्रीव्रजनन्दनस्य मोपदं वीक्ष समादाय मृदा मवनृ॥ नन्दम्ह मोदकं ध्वृत्वा समागतं समीक्ष्य नरकुंगं सज्जनका याजा ध्यास्थ्यें वंसमविक्रयन॥ नृ मैनेयकु ओवि
मा कृत न याहवकृ॥ ६॥ कि निधि सहित्वा स्यक्त स्के सम्क्षित ठ्रियष॥ नन ४ सन्त्यकि धैर्यं समानं व्यसमोक्षितन ४॥ मिमांसयं नर्वाचमिल्य वं समविक्रयन यामम
स्वं दस्कातुं स्यास्या स्मेतवातन वडाजानं गोमि त्यम मन्य ना॥ नमामृय ४ स ६ स्ता कृतोजनसमयसूनानृ॥ नासर्वा समया मंतु सयस्यत्र व मत्तवीन
कुमाया समायान स मना मत्य समाश्रिम मयां मार्दै नाउनमस्य न किठ्नं॥ ६॥ नियिमात मादिस्य त्वात सर्वं यिन सनाम॥ च त्वात नस मात्रि यसं
न त्रि यथाउ मं॥ कु॥ ४ प समालन्को नन हृय रस्कीन लि पिठु ४ समस्व मा त्रि यन कैय सत्व न हियष॥ नन त्व स ४ कुमाय स्य ४ याउ निधा ष्य नाउ नं य यथा क
स्युम्यत वें स्य ४ समरीक यनृ॥ नन ४ सर्वकु मालां स नाउ नं मूयदीकिनं याउ नि हित मादाय प्रवृत्त ज्ञ ४ प्रमोदिता॥ कृ अः याउ मनी च न्स नाउ नं य थि मिल्लाम
मे सर्वं ति अयसं य भउ नकं वृत्तु जन्मदा॥ कृ गे भनं उक्रुज्ञानं समम्ब्भ स यिमान्य ४॥ ननमवकु॥ ओवाजा हवदउ यमन्यन॥ नन ४ सर्पृथिवीयालउ याध्मायं

वच क्षः यं । कं च द सि सम म न्क्षु प्र य क्ष वं समा द वा कृ ॥ उ पा ध्याय कु मा [illegible] थां म वा या न प कि र्द वि । न स मी क्ष नः वा न्भ तु म ष ना द पू म हृ मि ॥ ॐ मि सं डा र्थि न या ह्याय पू
[illegible] दि ता नि स म्य स । म र्व यां त क्ष हं वी क्ष कु मा या घां य्य वा न य कृ ॥ स म्य ग्वि द्वा र्य स र्व षां कु मा या घां स त क्ष थं । कु ग स्य स ड पा ध्या या म त्वो या ह स्म था व द कृ ॥ या उ न्न षां कु
कु मा या घां कु । भा स व न्त्र या क्ष व य त्कु । भा सो म दा स्वा धी या वि ह् ४ स धी ४ क मी ॥ म दा त्मा सी म सा प्रा ह् ४ स र्व वि ध्या वि य क्ष घ ॥ न स्मा द तु स व डा जा न व द न्क कु ग ४ स्व सू
[illegible] ॐ मि भा स्म क्षि उ ना कं नि [illegible] न वा धि य थ ज प्रि य स्य गु द्यां कृ त्वा म दा द्द ४ स्वा कु सा न व कृ ॥ न न ४ स न य ॐ क्षा कु र्म सा ड् ४ स्वा ग्नि ता यि न ठ । स्व यां धै र्य स मा तं व्य पु न यू
[illegible] नि न्क य कृ ॥ उ या या [illegible] उ य न त स्मा त्कृ । भा न य ४ ॐ मि यि न्का वि ष क्षी त्मा न स्क्षे सा न्य प्य ना द व ४ ॥ न ना स न्न प की नू षा ध ना नि स त क ला न्य पि । दा ग मं [illegible]
[illegible] तु क न वि क्ष य्य स मा । भा व य कृ ॥ न न ४ स न्न प कि म त्वा ४ स म य स मृ या ग न ॥ जो मा त्वा न्म त्रि द ४ स र्वा न्स मा म न्त्रि व म द्ध वी न ॥ ना न ग वं न ४ ग ध्रं म वा क्यं स र्व स मा
सि मा ४ य थ धृ ना म या ख्या न क था उ क र्मु म द थ ॥ य न्म त्वा ४ स म या म तु सां य नं स मृ या ग न ४ न न्म मा न्क कु यो मो घा म षां या यि न पा ह व कृ ॥ न म वा तु म सा या उ म हि

सुवर्णप्रभासोत्तम

पिंग्य यथा विधि नर्यामनुष्यमि स्त्रायन यंकृत्वा शिभव्या माश्वामयाये निधयाश्च नकाशसृगुफननिश्वयिमामनात्समीक्ष्मसमृद्ध समसर्वान्नक्षमेघयक्षमा॥ममाहृयशस

ठंकाकुलिखि त्वा मामय हक्षन निश्चिनिहिमदंशानिदत्वामां॥ येवमंत्र वीम॥ मवकालिखिमान्यत्रमाश्रयहमयास्वर्यां॥ ममाह्यकुमाया यांमिमंयगुंद्यक्षमा॥

यत्रभलिखिमानीक्षमन [illegible] मसर्वम॥ श्यादसमान्नि धीन्सर्वान्समामालीक्षात्रदीयमि॥ ममवाउनयंकृत्वा सवीयूयंसमामाहिमा॥ असदायिससूयहिक्वानन्द

यमानुसव्यम॥ ॐ हादिम [illegible] सश्ससमाममजायूयादिमंत्र श्वानमक्रिया सक्षसमर्याभायक्ष॥ मनात्रयत्र मायायम॥ थमिसानृमामिम॥ अपूयादिमंन

यसे मंत्रघत्वा स्वालयययथा॥ मनमहा प्रयत्नस लिखिमानियथाकुमें॥ समीक्षानूयधित्वा वसृगुफेसंन्यधायय॥ ममश्सनय ॐ स्त्राकुश्कालाभामायूजान्वि

मक्षसप्त्वा कुलघ वंध्मत्वा दसंस्यक्ष्मादिवंययो॥ मदस्दंनिर्गमंवाधं सर्वयिममदामजाश्व विधिनावक्रिसंस्कायंकृत्वा॥ आकव्यनादयम॥ ममश सर्वकुमायास्मा

जामा हषक्षवां॥ क्षिनश समीक्षमक्रियश सर्वप्रावृनवंपूयाहिमं॥ उयाध्यायऊथयास्त्रासमादियंमथाधुना॥ सर्वषांत्वं कुमायायांमामयत्रप्रदर्शय॥ ॐ स्मुकं

मान्त्रिमा ४ सर्वे निर्गम्य तपूर्यादि नक्षत्र थानथां कुमाया दां कामुपत्रम दर्शयन्ति ॥ तुम्नासर्व कुमाया स्फनाम्रय जं समीक्ष्नं ॥ पूर्यादिनस मीक्ष्न ४ सायस्यमवम
तुवता ॥ डयाध्यायाज्ञयत्रं त्वोलिखिता नियथाज्ञ मेसयति त्वात थासर्वान स्मान्तं प्रति वाध्यये ॥ ॐ ॥ सर्वे ४ कुमाये स्फे ४ समारव्यानं निश्चम्य स ४ ॥ डयाध्या
यक्षमायाय, कामुयजं समीक्षनत यथाहि लिखितं नत्र नथासर्वम गावता ॐ निधि वहि थायि, मध्य वानि हि मानि धिश्चा चतु र्थी याजता तानां वत्वाया
निधया धनिता समण्ड निधि [illegible] निधि नकथमागय ॥ याजनं निधि, नक व्यनिधिय कथमावना ॥ वक्ता ण निधिय कथ्य पर्वमा ण निधि कथा ॥ यमण्ड दति
वर्षं गुस, जापि निहिता [illegible] ॥ यन व्यार्थं गमातानुक्त जापि निहिता निधि ४ आयुर्द वामसीय जिनजापि निहिता निधि ४ ॥ कुमायाजनक नेकनि वयानि दि
नाशु वितमा नियाचिज्ञाना निमजवनयनि र्वनु ॥ ॐ ॥ फिवाजनक नाज्ञ, पत्र संलिखिता निये मानु ॥ निधिन्न नषृदा गषृ, समभ्रु त्या निगमा ॥ याविह्मय
समारम्ल सजवजियतांनय ४ ॥ ॐ ॥ तस्मान्समपादि ध्यमतन तच्छावजद्दिवं ॥ ॐ ॥ स्तुपाध्यायपरव्यानं जु त्वासर्व कुमाव का ४ त नमः माज्ञजा नन्ता मिथ्या दक्षा

तिलकस्थिन ॥ तकल ४ कुम ४ सविश्चायस र्वो-स्थाति हिमात्रिधीन्रड स्कुफान्मक्ति ग्ध ४ सर्वा-स्रमामन्त्रेवमब्रवीत् ॥ एवंमामक्ति ग्ध ४ सर्वसत्यंसंधानुमर्दथामर्वा

नमात्रिधी-वीस्क्षसमादयांसमकत ४ ॥ तयुयंमक्ति ग्ध ४ सक ४ समायानेमयासदातमात्रिधी त्रिस्मिता-सर्वा-स्रमृद्ध त्यादहाम्य हं ॥ ॐ स्कु स्क्षसकु ॥ आविरू ४ सम

कायालिनन्द्रिम ४ समभ्रि [illegible] ति ४ माढें निधीन्ड पृं तमावरमृ ॥ जकयाऊकुलघायदहस्यानिहिमानिधि ४ जुत्यकयनमृद्ध त्यसंपश्यत्कृगाब्धादद ॥ वही

याऊकुलघायदहस्यानि [illegible] नधि ४ वाऊ रुविनमृद्ध त्यपश्यत्कृ ग ४ समादद ॥ नास्यकयनवाक्षकतद हस्यामध्यमदिति ४ निम्रितस्कंसमृद्ध त्यसमाक्षस

मृद्धदीनस्वकृ र्धुंयाऊगालानांवत्वायानिधयोधमिस्यते स्त्रोकृयश ४ गमयर्ये केस्वगुनिर्भिगनस्यादानांहुवे श्रीयवत्वायानिधयोधमिसगिलितास्मा-समृद्धय

सर्वा-वीक्षसे आदद ॥ समृद्ध निहिमायस्कमृग्यानसेवसाधमिरमात्रिधिंसमम स्कृत्यसमालाक्षमदाग्रदीन्-मागायनिहिमायस्कं स्वानेमालादेयानकनिधिस्कंसर्व

मृद्ध त्यसमम्यस्यसमसमादद ॥ याऊमनिहिमायस्कृयानेयाजानृयाद्धि कंरमका निधिंसमृद्ध त्यकंसमीक्षसज्जादह ॥ मावमनिहिमायस्कृयानंयत्र विमाविनं ॥ अं

सुयाल्तमयथास

सपालदियथास

ह्रामसा वृद्धिविवर्द्धकः ॥४॥ नन्नमस्थ राजा सर्वधर्माधिपायान ॥ ५४ ॥ ॐ ह्रीं निरन्तक्षयिनं गुरु त्वां सर्वयिमकुमार्यकाः ॥४॥ कुलआत्रिया विनत्वा काः ॥४॥ नमः कृः ॥४॥ संस्कृतिमन्त्रिया
॥४॥ नत्ला मीश्र प्रधानायः ॥४॥ सर्वधर्मानुक्रियाः सुधीः ॥४॥ ममसर्वान्मक्रियः मायान्त ममामन्त्रे वमद्भवीमा ॥ तव नः ॥४॥ उ यमांसर्वर्यन्मयाउ समस्थम ॥ नथा सर्वनुमादनः ॥४॥ कुवकु
नथ्या ध्यावितं ॥ यत्कुलमायं ... जातिस्मृगुप्तनिक्षिमान्यपिन्नदनन गुरु तंतूनमन्यस्मादिदिनिश्चियं ॥ मदस्तमस्थ पूनता विमीमान्सी तु मिक्षात्मस्नरानरुः वनः ॥४॥ पु
सीदनः ॥४॥ कनक्र मर्हक्रुमवयः ॐ निन्नमादिनं गुरु त्वां सर्वनमक्रियः यामृदान्ज मायान्त्वप्रधानतं मक्रियमयमञ्जवन् ॥ मसांक्रिं ह्वयाष्ट्वं गुरु त्वां ममदावयामस्त ॥
यन्धूविनं समासाध्ककृत्सर्वं समीसिनं ॥ ॐ निन्नेगदिनस्मवे ॥४॥ ससस्मञ्जीविवर्द्धकः ॥४॥ सर्वराजकुमारान्क्षम समामन्त्रे वमद्भवीम ॥ हा कुमारनेमस्कृत्यदेवः ॥४॥ सिंहास
नानाये प्रथममात्रयाउ सज्ज वन्नयमिभ्रुवं ॥ ॐ निन्नकदिनं गुरु त्वां सर्वनन्यनन्दनाः ॥४॥ यानमानृक्षदेवानां वन्दिकं समूपावचनं ॥ नतक्र प्रथमनंतु सिंहास
नकु जाकृनं कत्वा प्रदक्षिणं देवान्स्त्वान त्वासमात्रयत ॥ नमवं प्रथमं कठ सिंहासननसमाक्रियं समीक्षमक्रियः मायाः ॥४॥ सर्वनिविस्मययययुः ॥४॥ नन ॥४॥ सूसेमति

४

च सर्वं समन्तमुखसमी[illegible]दीप ॥ वज्रा[illegible]नि दिशाय स्कन्द सर्वतमस्कृ[illegible] स्कम ४ अजय दीपवज्रवीयज्ञ न स्वक्काया नि या नि का [illegible] याज्ञयान धम्मयो धो निधी

निधि [illegible] विरमो ठावपि मेसेक्ष स्य समी श्रेकृगजाद द ॥ मद्दक्षु मक्रि द ४ सर्वविसर्वयं मम पायपु ४ अपर्व म निदिमाय श्रवाङ्क ४ स्वानमदक्रिसा मदधसिसमूढ स

गं सर्वं कृगजादद ॥ यजुवेदाव नाजान स्कज यानि दिमानि धि ४ अछ्न्क्र मे ४ सपूजा मा सीउ न क ४ पे थि वी प नि ४ ॥ न धन्नकमूछ स्य मंव सर्वं कृ ॥ आग्रसीन ॥ क

सर्वं श्रुसमाकर्ष्व सर्वमनि[illegible]यं यपृ ४ ॥ वस्ताकर्यास्तु[illegible]यज्ञ न तु या नि दिमानि धि ४ छन्क्रा कृ न पनि र्यजु द संदि स्वादि वं ग न ४ ॥ समी श्रुमंस मक्ष स सर्वं कृ

ग ४ समादद ॥ यजुदवामस[illegible]न तु यानि दिमानि धि ४ छन्क्रा कृ नाम सही न्द्रध सछ कास रुवाध क्षि ॥ निधं सर्व कृ मोया स्क लाजन यथिव गि ना ४ समी श्रुमंसम

द स्य सर्वं कृ म ४ समादद ॥ यजुदवामान्य पिनि क्ष ना नि नि दिमानि म सीम ल र कृ ॥ आम स्वा सम मक्षु स्य समादाय स मप्र दीप ॥ न समी श्रु निम स्या यि पृथा दिमादयादि

जौ ॥ सर्वं स्व मक्रि ॥ गामा ख्यात द्या ४ सैन्य ग धा ज पि ॥ थीया जान प दा गम्या नेगमाजन्य द नि ना ४ कृ ग स्थैव म सा वृद्धि मत्वे वं सर्वज्ञ विध ॥ जस्ताकृ ॥ गा म ता वि

१८ घद

मक्तिः स्फुमा वान्मक्तिः लोजनानु । रुस्यानपि समामन्त्यु सयस्य न्न वमत्रवीकृ । रुवनाद्रव्य मषकु । आधर्माकृताववानू । यफ थायं कुमायानां राजाफ वमिसर्व
सयायफ कुं । गां यमितास्मामितिवहितवहिचिंत्य यथाविधिरन्त यासनप्रतिष्ठाप्य केनश्रीयामही पनिश्चा ठं गिफ कृ दि नं कु त्वा सर्वफम क्तिः । लाजनाश्च जुमा स्या श्च नुमा
सफ थातीनि मम हिय । फनस्क मक्ति । लो मावाश्च पृयासि नं क्विजाधियं सादवं ममयामं प्रसर्वयवं वताप्रिय । उयाथ्मयय थादिष्ट मिन्द्राकु नाफ थावयं । ठं मंकू
मं मताविहूं नयं कुर्म ठं हाश्च लाफ्रस्वा न्कु गमफ वमहि षिंच्य यथाविधिरनयासनप्रतिष्ठाप्यमदीपनिं नयंकु प्रा । उवं नफा विनं कु त्वा पृयासि नश्च सनं कु अंतज
हिषिंचयप्रतिष्ठाप्य याञ्च नयं व्याधाकृ ॥ फनस्कमक्तिः । लोमावाश्च सर्वमित्याधियाजपि । कुअहस्व न्यपफ स्व कृ रंजनमसि नन्दिनाश्चा । फथा सर्वकुमायास्फ ज्ञाफयाय्यति
नाधिताश्चा नं कुसं नपनिं विहमूयल्लिनाश्चप्रफ जिय ॥ फथासर्वजनास स्याधीयाग्रमग्या श्वने गमाश्च । जानपदा श्च सर्वपि कु गंनपंप्रफ जिय । जलिन्या जनानीमायिन
यफ फकृ अम मनं समीक्ष्य विस्मयानन्द समाकुलाअयास्तव मृ ॥ फनश्च सकृअ ज्ञासाय्यनाञ्जमे स्व र्यसयदं ॥ सर्वलोकाधिया राजावरूव पृथिवीपतिश्च ॥ फनश्च सन्त प

ना राजानीनि धर्म्मार्थसाधक ॥ अस्य यात्मसकला लोका कुलधर्म्मञ्च चायन्मा ॥ तन्त्र म्यनि समालोक्य सर्व्वलोका ॥ प्रमादिना ॥ नस्यानुरुजनं कत्वा संच त्रियम वाक्युर

मतं संचरि मालोक्य सर्व्व लोका क्षिया जपि ॥ सदिना विषयसक्त समीक्ष्य सर्व्वे दायथवनु ॥ नतहरक्षितु हव ननस्मित्रास्य समन्त ॥ निवृत्या तं गुरु साक्षादं, भाव र्त्तन

सन्तयेत नतम्या कीर्ति मी ... भन मं: नि नसमन्त ॥ समताभ्राय मदा सर्व्वलोका जनि भषदिय ॥ ननक्षय मतीहतु विवादसमया गान ॥ माला निजालया सीनासमी

... वा विक्रय मन ॥ हा मम ... याराजान्मजायमसीकुजयाक्ष यि मुन्दवी पुत्री भार्या ॥ संप्रमा स्यनि ॥ विप्रायाय विप्रेयेव, भार्याया ... नि दास्यत ॥ विप्रया

... नी त्र ॥ कथं भार्यासम ... ॥ कथं राजा मतीन्द्राय भार्या धर्म्मानु चार्चिषी ॥ विना संवनि संचाय ॥ कुलधर्मसमाचर्य ॥ धर्म्म विनाज संसायज मजीवचर्ानिस

... सम्यन्तयन या ह्यनि यथं नाक्ष साधनं ॥ ॐ नि चिन्ता विषयं स्यामा सान्नि याजननीप्रसा ॥ कुगस्य ... येन याक्ष ... व्याकुल मानसा ॥ ७ वं चिन्तां विषय ... सां कास

नी ... तमज ॥ कुग ॥ सुधी विद्युयास लसम्य ... व मत्र वी नृ ॥ किमयान ... मय ... म न्दना ... स्मिया पितीः यदात्मजा विवर्ज्जि ... विप्रायाड् चिन्ता कनी ॥ ॥

ग्नौ हयमनय डाय. त्वामा हार्यी ऊदास्यमा सन्दवी च मगी का न्ना नाहीकत्वां विरूपकं ॥ विरूपानसमीकत्वं. वाजान्त पमित्र मनाः ॥ ॐ मि चिन्नाविषार्ल्हसं मिका
ध्यवं विषादिना ॥ ऊनहू४स्वं ममामान्यक्लि चिरे न विषम धूता ऊन छ्रिन्ना कूरहा का मि हाम्थवं नयाधिय ॥ ॐ मिमाऊज्ञिनं ह्रे त्वा कृ अ४स ज्ञात्मज४ सृथी३ मामतं
नी समत्ताताक विहस्तत्त्वे मऊवी नृ ॥ ज्ञान्द्रवंवद मि त्वं किं. यडाजाहं नयाधिय४नदऊ सृन्दवी का न्ना हार्या मादायद हिम ॥ विरूपां च मगी हार्या मनाम नाहि याव
मिनन्ना हार्या हरडां, गी डा … ऊ मर्हं मि ॥ ॐ ह्यात्मज ममा रव्वा मं ह्रे त्वालिचापस्य पू ३४अ न मात्मजं कृ भं वी रं सं पश्यं न्हवेव मऊवी नृ ॥ याह्नयि नन य न्डाय. वि
हृयाय क्षमि नस त्वा … मिन … ी कन्यां नृप मि४ऊ दास्य मि ॥ ॐ मिमाऊादि न ह्रे त्वा कृामामानी ऊगक्लि न४ माणयं ना विव र्ल्हिस्यां. पश्य न्हवेव मवाय नृ ॥ वि
… क्षा मनी हार्या नय न्द्रस्थ ने अ न न रूपेव मरडां गी हार्या याह्नि यि हृयन४ आस्तस धर्मा न संच का हि नक ज्ञी नवन्न हि ॥ विरूपयस्य ॥ विरूपेव मस्क्षस हि नसा
धिनी सस्थि याच मि सय का धर्मान्नू त्वा विधी नव नृ ॥ याह्नयि हि विरूपस्य. हन्दवी न ऊियं व मार सदाक्क या हि निच्चन्नी निः स्कस्कस वन्नी नव नृ ॥ वीर्यवकं मसाहि

नयमयिविनूपकं। सन्दरी कामिनी कान्नाउ क्षमयितवाक्का सि।। यदिकस्या ग्रनूयान ह्यार्या नीयसमर्यिना। साफनूयं समाला क्कनि ८ स्न ह्याख्वनसंखुजन्हा।। न
ह्याग्याविनूयेवह्यार्यासह्विगमानसी। यथाहिवाक्कि नंह्याम्यन्तुक्षायमत्वयासस्। नक्किनूयांसमायायांसछीनांधर्मयाविगीरिसा श्रीमानीयनह्यार्यीस्यामि
सन्मनींसनी।। नयासमक्षान् मन्नक्ष ८ कूलधर्मसमायचन्। संपालयन्सदा सा कान्सर्वान्सखं समायच।। ८ं नि माजादिनक्कु खासजान्मजाछुवाथिन ८ अह्यायिनां
पहयन्ध्यसाक्ष्रपमनमङ यां नाज्ञेयचदूर्मकमान विनूपायदियाह्यक्षि।। स्यर्गनदर्गनवायिनस्या ८ कूर्यामहं नक्षि।। यक्किन क्किमयिस्त्र ८ स्तनूयांचमह्यींस
गं। यथविथिसमानीयमसि धिं संछ दक्षिम।। यक्कनसन्दरीं दया विनूपामवदास्यक्षिसर्वान्यचिगु ह्यान्स्त्रिखागमिथ्याक्षिन पावनं।। ८ं ६ स्यात्मजूसमारवान
ह्रे खालिन्ताछसपुन ८ नमात्मजं कुमारूपं समध्य अह्यवमखवीन।। वसदा कुंसमिक्कमिह्यार्यानसन्दरींसमीं।। कानदयानविनूपाययाहू यिसन्दरीससीं।। नुन
मह्यायिनं ह्रे लासकु अ८ ज्ञात्मज ८ सश्रीश्रमानयं मासमालाक्कपूनयवमहाय मा।। यजनह्यायमनूपं मसकनायिन्ध्यनेइचदेआलनाय लादानीयमक्षिसचर्वी।।

१८

॥ ꣸ इति युक्तादिनेशेन स्वाजननी साध्वी वाधिता मन्त्रिगणसमूह्यामन्त्र्य सर्वमनन्त्य वदयन् ॥ जगत्सर्वं प्रवृत्तानां कुर्वाणं समुदीचितं । श्रुत्वा ससन्मतिर्मला क्रीन
ध्वनित्रिभुवनं ध्वगत ॥ ततः स सस्मतिर्मलाक्षी पुत्रादिनेशं द्विजं प्रत्यूचे । विज्ञाप्य मन्त्रिगणामात्यान् समानान् सद्गुणं समब्रवीत् ॥ यन्त्र । आयसे धिर्विज्ञः ४ सर्वे विवस्वतः ४ विव
स्वत्यकादि ख्यानयन्त्रापि न ऋमतः ॥ तदस्य त्वमतीकामकामार्या धर्मान्वाविहीं । तद्विकुंकाम मिच्छन् कृतिया या मिता प्रजायत्तन ज्ञाय यन्नृपं नास्यक नायि द
ध्यतत्वद शात्मसमानीयसुन्दरीं कृतियात्मजां । कृतियांस्नान्महीपालान् संप्रार्थ्य सम्पेसादयन् ॥ समानीय सतां कन्यां कुर्याः प्रसन्नमर्पय ॥ ꣸ इति मन्त्रिसमाख्या
तं निशम्य सपुत्रादितिः ॥ तथासीति प्रतिज्ञाय तमा निजालयं ययौ ॥ ततः सद्भाक्षणान्विज्ञः संत्रैलक्ष्मविवस्वतान् ॥ सादरं समूह्याम मन्त्रसमक्षं ब्रवम ब्रवीत् ॥ तव
सेनयन्त्राय संप्रार्थ्य क्षत्रियान्सतां । सुन्दरीं नमगीं कन्यामितानयत गच्छत ॥ ꣸ इति शास्त्रादिनेशे श्रुत्वा सर्वे तद्भाक्षणाम्मुदा । तथासीति प्रतिज्ञाय सप्रभक्तिमानसा
वन्तः ॥ ततस्ततनगरंच्यत्रगत्वा नाहद्याः तिनाः ४ । कुआयसुन्दरीं कन्या मात्मजां तयया याचिरः ॥ सा पिता जाकृगंतस्वा विदूर्यं इति मानकृति ॥ स्वात्मजां सुन्दरीं

कान्कों नेव दाङुं समि कं नि ॥ न न स्क विषयं न्थ ज गा ना वाक्ष ॰ पूव ॰ हि का ॰ आत्मजां सुन्दरीं कन्यां कुमायाहिय याविव ॥ नुवं स भाक्ष गा ग त्वा षाउ । मधूपु

त्रस्थ पिं । न्ह्याघा मा त्मजा कन्यां कुमायाहिय याविव ॥ न पिस वेन्ह्या म त्वा विव यं न्ह्य पिं कुगं । त्वा त्मजां सुन्दरीं कन्यां नेव दाङुं समी क्विथ ॥ न न स्क भाक्ष घाड

य अ्थ स नजना स्यद । न या यं क र्ण कु डार्खं समी क्ष समू या सव नू ॥ न उ वाज कुल गत्वा मङ कायम सी ऊज ॥ ज यस डा नि षदे त्वा सर्व न स मू या सव नू ॥ न

पास व स मा श्रि स्य सर्व पि न । छ आम ष दा । न्ह्य पि नि सं समा न्हुप उ्थ कन त्र वम बुव नू ॥ वाज न्ह यं य द र्थ ज स मा ग ना ॰ प्र मा दि ना ॰ न स्व वा न्त्री म स त्कार्य स नि छंक उ

न हृ नि ॥ य ॰ कामी पूय वाजा. कृ । आना म म सी य नि ॰ । ॐ हृ्कौ की न्ह य न ॰ पु ज्री. म सा वीर्य य वाजमी ॥ स द्धर्म स धना त्साक्षी सर्व स त्व हि ता र्थ रू न राम दा स त्व ॰

सृ श्री विहू ॰ सर्व विद्या वि व क्ष घ ॰ ॥ स न व सा त्मजा कन्यां ॐ । त्वा दिव्या नि सुन्दरीं । म सु वा ग म नु संच क्षा म सि षी म हि वांछ नि ॥ न द र्थ श्री पि न अर्थ न कु स्थान श्री गुह्य

र्थ ना । न व न ॰ सुन्दरी कन्या अर्थिं हुं वय मा ग ना ॰ । न हृ वा न्त्वा त्मजां कन्यां द त्वा न स्मि म सा सन ॥ न उ श्री गुह्य म स्की र्लि च त्वं भा क ॰ स्र खं व म ॥ ॐ नि न त्व थि नं

[illegible]त्वा कुमस्य सकु[illegible] नृपदास समस्ति नन्दिका[illegible]मास नृपेन्द्र वंश्य विक्रम[illegible]॥ यस्कुमा[illegible] मसाम त्यामदी[illegible]नृपनी [illegible] विरू॥ सर्व कला विद्या
[illegible]वक्र[illegible]॥ [illegible] नसमस्त[illegible]कर[illegible] मयि सर्व[illegible]मयायि[illegible]की[illegible]॥ सर्व[illegible] पुत्र यकु[illegible]वि॥ [illegible]दि मां स्वात्मजां [illegible]श्री स्व[illegible] यां सुद[illegible]नां। सं[illegible]दा स्या मि
[illegible]कंस्या कुमाय श्री[illegible]॥ [illegible] निधि[illegible]यालामड[illegible]सा हि नन्दि[illegible]॥ [illegible]माम[illegible]म[illegible]त्र व म[illegible]वीन॥ [illegible]सोकु[illegible]वाजा[illegible]य स्या म
[illegible]यि य[illegible]यात्मजां समां[illegible]यां[illegible]स मृत मस॥ [illegible]सपुसन्ना[illegible]स्वात्मजां[illegible]सदर्शनां। सं[illegible]याम[illegible]समर्थ्य[illegible]य[illegible]॥ [illegible]दर्शित
[illegible]डां[illegible]लंकाव[illegible]सदर्शनां समादाय सर्व[illegible]आनन्दि[illegible]सर्व[illegible]समा[illegible]हि[illegible]॥ [illegible]यान[illegible]याय स्व[illegible]खी[illegible]समन्वि
[illegible]मड[illegible]नयमाम[illegible]सर्व[illegible]प्राव न[illegible]॥ [illegible]सर्व प्रवय[illegible]मदाग[illegible]कन्यां सम यानीय वा[illegible]स्या म[illegible]यय[illegible]॥ [illegible]यान[illegible]यात[illegible]सं
[illegible]य्य समन्वित। सर्व[illegible]समा[illegible]हि[illegible]॥ [illegible]वां कवि[illegible]याग[illegible]पू[illegible]स्य मकु[illegible]न[illegible]पाये[illegible]मन्त्रा[illegible]॥ य स्या

ऽर्थं उपाध्याय. ह्रवन्तापु षिमावयां तदर्थी सिद्धात् तस्माकं तत्र यम हि तन्वय॥ अथ समाहि ध्वदंगे. कन्यकृष्णु हि धर मडकस्य तवन्द्रस्य कन्यात्मजा हि सुच
वी। सुदर्शना हि श्रीकन्या रण्डलक्ष्मगमञ्जिका। कृश्नाय प्रार्थिता स्माहि॥ पिता मृदा समर्पिता॥ जस्मा हि चिस्सानीय. स्कयि माध्यान मन्त्रिय॥ तांस मीक्षत वान्त
मसात्मादं॥ समानय॥ निके॥ कथितं त्वा पूर्या हि मा हि तन्वित॥ सर्व मन्त्रवलकं मक्रिश भाववदन्तभृया॥ मकृत्वा मन्त्रि धर्मा मा ह्या॥ सर्वस्म महितन्वित माउ
जिलिन्याया मसादव्या॥ पूर्वकृथा न्यवदयम्॥ साधि मामान थाक र्षयं तथा सम महितन्विता। जात्मजस्य कृष्णस्याप्त विय तत्र गच्छ तत्सर मा धूना॥ सवर्णया न जावाय
कन्यां मडकात्मजां मसात्मादं चि सानीय मातुर्दस्क हियक्कत॥ ॐ ह्यादिसं नवन्द्र त्वा मम मन्त्रि धाजना॥ ज्ञमा ह्यास्म मयाध्याये. पुत्राध्याय सदा वचन॥ तत्र
पि तगत्वा तां कन्यां दिव्य सुन्दरी सम मीक्ष विस्मयाय न्वांस कृष्ण॥ सं दृषिमा भया॥ आकत॥ सवर्णया नतां कन्यां सखी सखीसमन्विता॥ समानाय्य मसात्मा
वन्ध्रोज कृ॥ पुत्रनयम्॥ तत्र तां सुदर्शी कन्यां रण्डलक्ष्मगमञ्जिकां॥ जलिन्या सम यानीतां समीक्षे वं व्यक्ति कयम्॥ अथा कन्या च मा कान्काय मिनूया हि स

…यी रकु । गो विरुद्धय नूयां । आइर्व ॐ इर्त गमकत्रि ४ ॥ क धंस माग मश्री ति र्दम्य सा व क या हव म ॥ नन म षाकु मं ह स्वा निस्त्र सा नव मद पि ॥ ष्ठ ॥ कि खिन्का वि

…र्लासा. मासाकु भ स्य रूय न ४ । ञ्जुमत्ते मूरवा म्हाजा निवृत्त मासात्य नि ष्ठ न ॥ न मा व मार्यया ना लोकं न्यां स रवीज नाञ्चिमा ॥ ञ मा स्या म क्रि घ म्ह स्या ञ्ञलिन्द्र

४ पुयं नय मरा ॥ मष्टा लि डाम साय वीम मी श्र मो ३ ३ गाति कार । डा दा य स्वा लय नीत्वा. स्वास नस न्य षदय न ॥ न न ४ पुया सि मी या ञ्र म्ह मीय यसय मूक । विवास

र्म ष्ठा यै ष्य वि धिना सम मा धय न ॥ म मा यऋ यदी फर । गो धू मे र्वा यिस मन न न ४ प्र दीय निष्ठ ह श्री म्ह र न लि ल क्लि न नूपके ॥ जावार्या दम्य मी य ऋ का व यि स्वा प्रद

ग्रीसुद र्भ नां न य स्राय कृ स्य विधि नार्यय न ॥ न न ४ कृ ग ४ ध्र मत्रा त्मा पुया दि न मूरवा न्हि जा नू । ञ्र य च्यं द क्लि गां द स्वा स वी न्स म स्य मा वय न ॥ न न ४ समा य्य मल

र्म सह सा स कृ ग म्ह न ४ नि गं ष्य स विवे ४ सा र्द्ध. निजा लय स मा भय नू ॥ न न म छ्य ना गा य स्व न य य पि । ञ्चा धि म । प ह दा म क ला या दि स म स्ले का य म स्लि न ॥ ग वा

वहि न ग ह. निष्ठ्रा मि ध न मा व. न । ह म य त्त विमा ना हि म स्लि न य यि । मा हि म ॥ ना ना स गं धि सा य स्य स धू प नामि धू यि म । स मरव द्वा य यि यो ट न ला स न स का म…

सकौ॥ भयसमाचुञ्, सकडु काय ञनके। ॐ वंसंकलिम युम्थ अयनालयउह मा॥ प्रदाथख बिमामाजा सञ्ज्ञात्मडा ४ कु। आगनक ४ अर्य्यासनसमाप्ति हानम्ह्वे वि
नाप्रदीपकं॥ ककालिन्द्राम हादवी थ्वगु, ह्मु थां सदर्शनां। कांकन्यांस्वय माञ्जयनउ अर्य्यासननयनु॥ ककालिन्द्राम हाद्धवी, अर्य्यासनकु आकिक नांतायांसमू
यस्कयनिर्गय ह्वस्वालयंयथां॥ नन ४ सकु गजामन्कुमांताया मति वाधयनु॥ समालिंम्ब समायुका ४ स थ्वायप्रतिनन्दिन ४। नन ४ यान ४ समुत्कय, प्रासाद प्रावय
सुमथ ४ सदर्शनाथिमात्काय, थेम्बालयसमासननु॥ कांस्नु थांसमूपायाकांसमीक्षडाहिनन्दिका। साथ्वगु, समूयामन्कुह्वासननसंन्यवमयनु॥ ॐ वंद्विह
दिनंमहनिआयांअयनालय। हक्रीमसहाहिसह्वासा, याम ४ अव थ्वालयवयनु॥ मउसासमूयाछियथ्वम्बासस्याक्षसदर्शना। सुविचं मरवमालाक्वाविस्मिके
वंव्याविम्कयनु॥ महाजाक्षसमहक्वयिदीयानअयनालय। ॐ नकवउमहात्रु नंयत्सुदीयानदीयमन॥ ॐ हि चिन्काविघर्जुहा, सदर्शनानाकिचरनु। उवाथा। आमू
स्वानक्षेनक्कंकावासनाअया। ॐ वोस्किनांस्नुथांनांमाथ्वगु, ठ ह्वाहिमंकिना। हसीक्वीसमामंछ्रुहायचभवमत्रवीनु॥ हडकिंमथूनाइ ४ रवं, यस्वांकिचिर

वहाघस। जन्मभेन त्पूयावाद्यंभेव। अय्य भिद त्वया॥ ॐ हि श्वन्भु समकं यि सा लज्ञान मिमाननाः। किंचिद यथ वद न्थेव म स्के गं कादनामया॥ ननट सा
षिका श्वम्भ निमी। थभयनालय। गगाभाम्या तनासीना ह्वो निडा हि वर्जि ना॥ नदासकु भज्ञा गय को ह्कि को भयनासन। सायी सदर्शना का कीमाहिरयस पुम
वसन्॥ दथासाव मधी साया सुदर्शनाहि सं किमा। सल्लं कूअ मान्नि ष्यय प्रकेवंस मादयान्। मस्त्राक्ष समन्छ यि। दीपान भयनोलय। अनच्छ तुर्मसान हिनत
सं वदनास वान॥ ॐ हिमायादिनं ॐ त्वामत्ला कू। अमदाम निक्ष जहमयिनज्ञानापि श्वंॐ पङ्क जिप्रावदन्॥ ॐ जिहलादिनं ॐ त्वाय मधीसा सदर्शना। अजि
कादमीनिडाको नि आम ह्वल घथन्। न न ट साया न वृ न्ह्य म्ब न्ञ्रा ज्ञा क ट पूत यथो॥ नत्र न स्याउ याभ्नि ष्यय प्रकेवं न मानना॥ मामायाजसमन समन्छ विदीपान भ
यतालय। अनच्छ तुर्मसा न्हू नं म सम्मा। खमा दिम पूत ट॥ ॐ नि व धूदिनं ॐ त्वासालिंया पवित्रं किमां। मांहू थांसमनिमत्वा सं पश्य न्ह्यव मखवीमा। अथि ह्नू षस
माभय मगु ष्ठाजमथीव्यम। अनच्छ तुर्मसान हिनच्छ त्वामाविषीदथा ट॥ यत्वंश्री सन्यचीका का स्तीय स्त्वं जिस निता॥ सजीयिभ सलज्ञा स ट का का दिव्या जि

स्वच्छन्दभाग्यसुतां दम्पती काञ्चीप्रसमीक्ष्य परस्परं । महानन्दसुखात्स्याद्मानसोद्भवविभ्रमः ॥ आगत्य कन्या ४ प्रदीपान दीप्यमानमयनालयः । नवन्यथा उत्संकामा
कर्ल्लभामस्वयोहत्पूर्वरयदायामात्मजाज्ञानक ४ पृथ्वीवापिनदारवस्त्र । दम्पतीसार्वप्रदास्यामिसंदर्शनिसमागम ॥ संयाच्यमकूलज्ञान, संनतिर्वामयाभूतानन
मीमप्रसादात्संसंगति ४ ग्रहवदयि ॥ उपादिकूलधर्मानायावज्ञामानसंगति ४ दम्पत्याद्दर्शनिंतावत्समागमकदापिन । नूनंतफ्रहवत्पूत ४ पृथ्वीवाप्यवि
विनात्स्वपूर्वसंदर्शनंतदावाप्यात्मसमागमसदासुखं ॥ ॐ इति श्रवणे समाख्यातं निजमपसासुदर्शना । इति विस्मयसंज्ञाकर्त्तयावेवव्यविकेयत ॥ सामयाकिं
कृतंयावर्यैनाक्रुद्धाप्यायति ४ उमारकूलधर्मादि ग्रामयाकुमापिन ॥ ॐ इति विकाविघातीमासुदर्शनाति संकिता । स्वालयस्वासनासीना, नरश्च विवर्द्धु
मानसा ॥ तमान्यपूर्व ४ समक्कायभाग निजालयगता । तासखीसमेयामकुत्रतत्स्वैवमपश्चत ॥ अपि तडकूसापि स्वपश्यति तं कूगंतये । कीदृक्पंतयस्या
मू. तत्सत्यं मयथावद ॥ एवं तद्कुमाकर्ण्य. तासखीरुद्रमानसा । देवीदर्शनात्व्यां सपञ्चान्यवमेभवीत ॥ देवितदत्यमकापिर्त्तासतकयावन । ज्ञायत

...ता पि तू पं या रू ४ प म स्क व ।। ॐ फि स र ख्या न या र ख्या नं नि अ म्य सा सू दर्श ना न ज्ञ फि गं का कू ल स्वा का न स्को सं मा हि न न्दि या । ञ्च वं सा य म गी का का र हु दर्श
...ला ल सा न रा ज न यि हि र सा हीं व कू वा न हि न च्छि का ।। न का न्य स्मि न्धि न चा पि. सा ङ्क भा त्या स ना ग या ग्व स्था ग र्हा ल य ग स्वा. पु य स्क स म्र पा ज्य य नृ ।। न नु स मी
ता पं व र्ग्रे. पु स न्वा त दर्श ना र स र्हि सं दर्श ना य का कू या य्य व न ।। मो ना या ह्म म ही न्ड स्पे. स म हि ड प्कू म स्म त । म तं. य ष्य छ सा मर्हि. म क श्र प्या हि द र्श य ।। ॐ फि
न या जि धा ष्ठा का ग्रे. त्वा लि न्या कू भ प्र स र । स मी क्ष नां स्तू पां मू ग्ध मं म न से वं व्या वि क य न ।। य स्य स्प्ये दर्श नं न हु वा ङ्का दा स्या मि स र्व था । व त म षा मू ग्ध. न फि ष्ठ त्व गृ
स व ज नृ ।। ॐ फि नि ष्वि स्या ग्व ग्रे. तृ षां का का सं दर्श नां न म गी नां स मा म क्र स मी क्ष क्षे व म व वी नृ ।। न ड सं दर्श यि ष्या मि. स म य स्व प न म स्वं । ॐ दा नी न स य
स्या मि. कू स स्य दि व्य तू यि न ४ । य दा दर्श न आ ला यां त हा म ध्ये स मा ग्रि न ४ । ला क स्या दर्श न द ष्या त्म मी क्ष स्व प फुं न दा ।। ॐ फि स्व ग्रे. व व ४ ग्रे. त्वा न (थ फि प्र फि वा
ता ।। स दर्श ना पु स त्रा स्या स्वा ल यं स म्र पा ज्य य नृ । न मा सि च्या म हा द वी. मा ना नं कू भ मा म जं र स्वा ल य स म्र पा मं ग्र स म्य न्थ स म व वी नृ ।। जपि म दर्श नं ना र्या. स ह

र्शनात्सिद्धानि फलद्वयायनमस्ते स्वयंभूपं संदर्शय प्रकाश॥४॥ ॐ नमो मात्रादि नमो त्वा सकुलोत्पन्नपतितः सर्वीश॥ नमः पतितप्रतितं नमो त्वा त्वा स्त्वयासनमात्रिश्च॥ उपाय

यं समासं धुतसमक्तिसवमन्त्रवीत्॥ नवकामानां न्यंड स्वयंभूधार्थयतिसदर्शनानमत्कथं दर्शयिष्यामि तद्वयायं प्रवक्ष्यामि॥ ॐ नमो यादा हि कुलोऽनाकां नमो त्वा विह

पूर्वाहितः॥ मक्तिसंसन्मालिं विड्डं समभ्यर्च्य त्वं समन्त्रवीत्॥ अथ भूमक्तिमयायष्ट महापायं प्रवक्ष्यामि॥ जनननम पतत्रूपं सत्वं दर्शयसदर्शनां॥ तथ्यथसर्वज्ञ

हि मां कुमायाहां कुमड्डमः॥ सत्वयानिःसतडागः॥ कामः॥ सर्वमनाद्य॥ नमः सर्वपर्षदाम॥ प्रतिष्ठाप्यन्यासमनः सर्वज्ञाः॥ पूर्वस्कलानिष्ठकुसमूपस्थिताः॥

जनननसमवायनमस्त्वोन्त्यं कुमानुडं नमस्ते संदर्शनायेनमः फलविमितिदर्शय॥ ॐ नमो चाचार्यसमादिर्ष नमो त्वासनपतिः कुमः मक्तिसंसन्मतिं पश्यन्नेवं कु

विनं प्रावदत्॥ स्वलनह्लासमाय नाह्लामन्त्री तमन्सतिः॥ कुमड्डः संसमामस्तुसर्वमनन्यवदयत्॥ सर्वमनन्यवलाकं लिगन्यसकुमड्डमः॥ प्रवाधिनमः

थाहितिप्रतिष्ठायालहावम॥ ननः॥ ससन्मतिमन्त्री कुमड्डमं नत्वा कर्मिं कत्वा दर्शनमालायां प्रतिष्ठाप्यन्यासमन॥ कुमार्थेत्राहितिः॥ सर्वेः॥ पूनस्कृतं समस्त

सूत्रोदितं समाश्रय स्थैर्यं पश्यन्नुपाश्रयत ॥ नमाहिताम दाविरा ४ सक्रावदान यावगा ४ गथामतिगा ४ सर्वमदामायगागाऊ ना ४ सर्वसेन्याधिया
पियशिवयोतिगक्रिय ॥ एवमदसमायों से दूवल्हिदयिताकनिश्चकूंधत्वाकु आना ४ यूष्ट ४ समूपाश्रयत ॥ एवं ससम्मतिर्मकी कृत्वा मसतां महत्वी
स्थैमदर्शनादथैदर्शनार्थमदर्शय [illegible] कदालिच्यामहादेवी दिव्यां स्तूपां सदर्शनां ॥ समयामकुपश्यकीसादयमवमतवीमू ॥ एवं ससतनिर्मलीकृत्वा मसतां
ल ॥ कतत्रयासनासीनं तंपंपश्यपुकुंकूर्म ॥ [illegible] निग्वक्रमसमादिष्टनिम्नमध्यासा सदर्शनानर्लावंत्यमिंतसमहित दूसेकन ॥ नमालिच्यामदायवी सर्वस
समस्त्विनासदर्शनां पूथा अमयपुवनत्तिसंदयंरुत ॥ गतसास्तूपयासार्द्ध सर्वालीनि ४ समन्विनानमारूपनिसहांद्दद्वा पुद्धासन समामयतू ॥ नत्रालिच्यामसा
समीक्षकांसतांमूयासदर्शनात्तूथांमूर्ध्वां संयश्यन्स्पवमतवीनापश्यवत्तसमतामध्यानयासनसमाश्रितां नर्लानकंमहीयालं सर्वलोकानिसंडवं ॥ ०
निनत्वधिमंके त्वासदर्शनाप्रसादिनानसमीक्षकांसतांसर्वी ददर्शनंतवाधिपं ॥ समीक्षकंसरूडाअं [illegible] वांनिरुवयंतपं सदर्शनामसद्धीनिनन्विने व

शिक्रयन्त॥ हामयायं सत्कृत्वाभं ४ सर्वलोकाहितसुन्दय ४ महावाजान्त्यानर्लालिखमतु स्तवनायन ४ आयुन ४ साक्षिपुसंत्रासमयम्य सत्काजनानु। कृतधर्यं विनुप
कं। यथ्यन्त्यवंध्यनिन्दयन्॥ धिग्धिकृतधवं नाञ्छाद्रूयंड। विनाकर्मिं। यच्छंदसीसमा। गोकांनिसहसमूयामिन ४॥ छं फिमंत्रिदिनेशु त्वा, सालिन्याऊनत्रिय
सा ४॥ सुदर्शनानां सत्वांकाकारे। यथ्यन्त्यवमकायन। वत्समेवदस्वाऊनजानीय स्यमकुशानु। जयकृतधयायाइ ४ सर्वमक्रिविचक्रदा ४॥ प्राज्ञाधीय ४ सुधीवि
हकलाविद्यान्कयायग ४॥ नीतिधर्मानुसानहा, महावीर्य ४ यवाजमी॥ दामान्भूयामहासत्व ४ सर्वसत्वहितार्थकृत॥ सद्धर्मसाधनीत्मासी, सर्वलोकानयालक ४
जस्यवीर्यानुकावनवाक्तोस्य विजयेसवा। सर्वयिकक्रियाकृयाकृतकिं भवद्यक्तिका ४। किंस्वमूयद्यकर्लव्यंननाद्यांसकुशेविना। सकुशमवसर्वज्ञमान्यमनियु
जीस्यन॥ कुशलीन ४ सदूयायिमान्यमनकुशायिहीन। नत्सकुशमहायत्वं सर्वहितार्थसाधनं॥ छं फिमत्वास्यधीनस्य सुवीर्यस्य महामते ४ शतजीसकुशाध्यवंदूय
मानिन्ध किंचन॥ छं फिश्वक्रसनास्थानं, निशम्य सा सुदर्शना। प्रसन्नमुखाम्भोजा तस्यैसंदिग्धमानसा॥ नमालिमहायवी, समुत्क्रायसुदर्शनांसत्वांकाका

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

।नत्वा कुशमरा वत्नं सर्वसर्वार्थसाधनं ॥ ॐ भिनस्यस्य धीवस्यस्य वीर्यस्य मरामन । तत्र श्री सद्गुणाधायायं रूपमातिं दकियाउन ॥ ॐ भिनर्जुसमादिषं, गुरु त्वाहार्या
सदर्शना । ज्ञनहिनथिंनस्वा काम क्रोध हुन मानसा ॥ नन ४ भाज ४ समूला यकू भ ४ समन्द नानय ४ । माजुर्गह्निालयग त्वा, पुनन ४ समूपासयनु ॥ नजेकोजन
नीं छ्वाप्रग त्वा समूमा स्मजु ४ यूनन ४ समूयाछ्रिय, समप्यत्यन्त्र वमछवीनू । जम्वछू याकवडव्यू मिक्क मिनांस दर्शना । नहांमानव्याय, नसदर्शयि त्वम पुनः
॥ ॐ भिपूजाधिनं गुरु त्वासालिधाजननी सधी ४ नमात्मजं कूमं विड्ढं समपचयन्त्या वमछवीनू ॥ जयियय भिनवाक्का, सड्छूनांसदर्शनां ॥ कासलं दर्शयि व्यामि:
समीक्षस्व नना लडु ॥ ॐ भि माजाधिनं गुरु त्वा सजात्मजाहि वाधिन ४ मानवकांसमा मन्थु निजालयड्नं ययो ॥ नदन्य पूपू याग त्वाग्वग्राज न ४ यूनमूदान सदर्श
नासमाछ्रिय, पुनयव मराचन ॥ मानवंह पुत्राग्रानं डव्यू मिक्क मि सांछनं । नकहवकी समागय, मां दर्शयि कुमर्हनि ॥ ॐ भिनन्धाथिनं गुरु त्वासाग्वग्र नांसदर्शनां, द
र्शयि व्यामि वनं ग्व ॐ भि समीक्ष भावमनू ॥ नकु त्वासास्तु या मुग माडव्यू मूयान मतेका । गत्वा निजालयन क्को, सर्वी जन समन्वि मना ॥ नमालिख्या मराध्वी, मामानं

कूंगमा सऊ स्वालयसमनुपामन्हुसंपग्यन्यवमवुवीन्॥ पूजमाचमरीकान्का. नवनार्य्यासुदर्शना। छुन्कनिंद्रखूमुयानं. नन्कं४संदर्शयानिन्हि॥ नतुलंपुथ

मंग श्वार द्व्यमामामसहायक४। लगुफकूआ आजिस. संनिव्वखसमाक्षिन४। यदाकपूवजार्यानासाखसरवीजनाञ्चिना। नदानछिवचा स्वप्न. वमरीनांसुदर्शनां

कुं नि मात्रा नि नं ठुं त्वान पनि४ सानि वाधिन४ नथनि भनिहा पिखा. स्वालयडाचवन्मूदा॥ नमान्ययूवनुन्हांस. समामायसुदर्शना। डुखूंनतुमसाय्यानस

ऊ ने४ ससाचवन्॥ नदानतुथमंगत्वामकू। मानि४ सहायक४। नतुकूआ ममाछि यनहोड खूं सुदर्शनां। नदासरवीऊ ने४ माछिसड खूं सासुदर्शना॥ मूसायास्व

समीर्यानी. भववाव समनन४। नतुकूआ उयायानां. वमरीनांसुदर्शनां। समीक्षसकू। मानर्लासमनिनञ्चिनानवनु॥ नतुसमीक्षसर्वत्रसंदपिनासुदर्शना। न

पुहायानाइवम्भमूदालयसमायपी॥ नहे नसर्ववना नंभ्वग्वापूवानिवयसा॥ सुदर्शनानीजावास. ययोसरवीजनाञ्चिना॥ ननान्यसू४ यनसुतु पूक्षिविदी

मनाचमां। सतीक्षिडमाहीकन्हीग्वम्वापूयान्यवदयनु॥ मानवदसमिन्हामिडखूं नतुसयावचां। नयदनूहांपुदत्वास. मन४ समनिनव्यया॥ कुंनिनत्याथिन

ॐ स्वस्ति श्री ग्वर्‌गु सां स्वदर्शनां स्तूपां मग्धां समीक्षां कीविहारस्थे व महाचमन॥ जयि वक्षे समि क्षा क्षिय दिड दृं स याव वां। म्मा गस्वा मां मनाव म्यां समीक्ष स्वय।थक्रया
॥ कूमि ग्वश्रु समारख्या मं तिभम्य मा स्वदर्शनार न।थ हस्व नू मादन्की निजास्य समाव नू॥ ननाव्यपृ ४ समामन्धु. सालि स्वाञ तनी सृ मं न्हार्यासंड दृ मिश्च कं समस्य
व मङुवी नृ॥ व लस्यय स क्षिन वांक सड दृं व स्वदर्शनां। नजा स्यप्र थमं गस्वां सं मिच स्वसया वे स्व। कठमाजुडल मगन ४ समा क्ष यम मम क्कं। यप्र मस्स्य ता भे स्वं समा ऽ
न समाहिन स्य या सा सन्या या नाय प्रानि प्र दिं ठुं मृ मा। न सा मां दंवी हार्का समी क स या। पक्षया॥ छू मिमाजा दिनं ॐ स्वा कु म ४ सय चि वाधिन ४ म ह था न ठु समा।
मिश्र. मां न्हार्यां ड दृ मे स म॥ न न ४ युा न ४ सम् क्षायम स्वा न ठु सयाव व। यथ माजा समादि पं न थासकु म जा ठु यनू। न मा स्वदर्शनाकाम्मा स्व स रखी हि ४ स म वि
मा न ठु स व हिप भा ति. ६ छ्र दा ठुं मृ माव न नृ॥ न ठु मा सस्मी प स्प प्रा त्यसा दि मा हिन॥ ६ छ्र वनी यं सायाना त्रा स व ड मि ठुं मृ दा॥ न ज सभी श्र प मा ति
मर, स्य पृ वि याथि मा। स्वदर्शनास मा दा ठुं कु भी क्विक मृ याव न नृ। मां न्हार्या मि मया या मां समी श्र स दृ। गा मूला। स्त स मा गस ट मा सिं गम्व वृ मि स्वा मा द मा य थो॥

कं न प्र सिता … का, हीनाश्च सर्वा म स्वीज ना ४। सह सा की य मू लीर्य स मी क्ष वा नि न क्षि च ॥ सुदर्शना न माला क्ष री घ ह ३ यि मा कु नि सं त्र स्का हा स ना स्मी
खा चे ना य स च न ॥ ना का र्यी त्र सि नां वी क्ष न ली कु अव्य मू च इ ना न न की न स मू लीर्य स स्वी नां स मू या व न न ॥ स मी क्ष नो मू या या नां स वा ४ स स्व ४ पू या ॥
श्च क थं लं न म मू का सि प्र प क्रू यि नि सा द चं ॥ ॐ नि न लू ष मो ली क्ष सा त्रा स क म्पि ना श या न चि या न्मं द स्व यो नो सां पु न य व म सा घ न ॥ न त्रा हं स स मा लि ख ः
न्वि ना द क ना क्र ना न न क्ष ना नि मू का सं दे व ना त्र स मा ग ना ॥ ॐ नि न क्र दि नं क्रे स्वा स र्व ४ स स्व ४ स मी क्ष नी ॥ सु दर्श ना सं स मा ग्भ स्प व कु क्षे र्य स मा दि नां ॥
न ४ य मा नि सा ध स्वा स र्वं स्वा रु ना न्वि ना ४ वि का ल स मू या ग त्य स्वा ल य स मू या त्र य नृ ॥ न न ४ सा अ य ना ग र नि क्षि नि क्ष ग ना नि शि ४ अ र्या स ने स न स मा गि स्व र
सि स स मा त्रे य नृ ॥ न त्र स न य नि र्ल ली य म गी नां सं द अ नां ४ का र्यी प्रि यां स मा म कु प प्र क्के वं स मा य या नृ ॥ अ यि प्रि य म सा घा ने सं प न्य सि स आ व च यु
स्वा नि स मा या ये प मा नि किं सू पा ग ना ॥ ॐ प्र वं स्वा मि ना प क्ष स प्रि या ता स दर्श ना ४ न र्ला नं नं स लिं य वि या ध व म सा घ न ॥ स्वा मि न्य श्य म प्र सं न त्र म सा घा

नमस्मावश्च। पृथुवीकानिरुन्धानि सोचयानि समन्तत् ४ ततो नियुक्षमदौकुं सर्वसत्त्वोजनान्विमार्गस्थापाननावनीर्याहृचमन्नी समायध्यं नदानतज्जला
सीमातीयरक्षादकयाक्रसः ४ ६ द्धामां सहस्माधपरोप्रमितुं समयागतः ४ ततो दृष्ट्वा समृधायानेनी षयंदकयाक्रसं सर्वसत्त्वोजनानीताः ४ समस्तानीयमागता
४ भगनाहतसहस्रासिंग्यबुद्धविन्धाः यचिमाधिमाः। देवनन्नीयमहीर्यसत्त्वीनां समयागतानानततामि ४ समाज्वरत्य सर्वाभिवदमादयाम्नः। विनाशध्वेर्यता
कृत्वा समामोीयेनिजालय ॥ तत्र च ज्ञगधयायायादकुंकादक्षदकेयाक्रसः ४ स्मृत्वा नज्जनयमः ध्यायि। सनाभपचिकाम्यितं ॥ ८ ॥ मित्रायाधिनेके त्वानर्लासवि
सर्वज्ञगः ४ यमनीमाछियांशार्यां समालिंग्य एवमब्रवीत् ॥ अयितत्र मसादृष्ट्वा विघ्नदकयाक्रसः ४ तन्त्रागमतत्र सयाचितस्थम् यिकदावनः। ८ ॥ मितर्लात
समामिसंतिसम्यासस्तर्भता प्रबोधिताय तस्कतत्रागतेनेवात्सवांच्छ तां ततो स्नायशः ४ समानीतमात्रयोलिक्षस्यालिंगितं। आमरुलं समालाक्षसद्गता ध्येवा
कुलागिरत्नमायमं नाकुं समीच्छ नीसद्गता। स्वच्छ ४ पूज ४ समाश्रियसंयक्ष्यकं एवमब्रवीत् ॥ मातत्र हं समिच्छामि तत्र्छ मात्रवनेमसदा। तदनुस्त्रप्रदत्वा

Bhadrakalpāvadana

LMhj 000,297 2/3
MBB II-139

The Institute for Advanced Studies of World Religions

×अ१

सममाहितनयां धुनाः ॥ ततः खलु सुधनः श्रेष्ठिदारकः मालिन्या जननीयमाहा ॥ सदर्शनात् सुधां सत्त्वां संपश्यन्नेव समन्तभद्रं वीनु ॥ अपि तु सुधनः श्रेष्ठिदारकः मां प्रवनं तम
तत्र सत्त्वसमूयास्तु सत्संपश्यां प्रवनं मदा ॥ एवं ततः खलु सुधनः श्रेष्ठिदारकः सदर्शनाद्बमादिना ॥ ततो हलमामाय समभिज्ञं तु समेकं तत ॥ ततः सुधनः श्रेष्ठिदारकः सर्वतो लोकं तथा
हितनिश्चितश्च नतत्सुथ मंगत्वा समन्तभद्रस्य समयाश्रयत ॥ समालापनु संपश्यन्नेव कमलसमाधिं तत्र सदर्शनात् गामियश्च स्थितं श्रीगुप्तसमाहितश्च ततः सायोनं
समन्तात्सर्वसत्त्वाजनान्विता ॥ तया समन्तदाता मे समीक्षितुं समवचनं ॥ तत्रावचक्षयानात् सा सदर्शनात् हितनिश्चिता ॥ सर्वालिङ्गश्च सर्वत्र पश्यन्ती प्रावच
भूषा ॥ ततः समन्तभद्रस्य संपश्यतः समीक्ष्य सा सदर्शनात् समान्तं तु समीक्षन्ती ॥ ततः सत्त्वसमूयासवनं ॥ ततः सा समूयायां सदर्शनात् समीक्ष्य सत्त्व सहस्री तत्र प्रवालिंस्व
वृक्षसमन्तवम तुलं ॥ ततः सत्त्वसमालिंग्य प्रवाणिकां समीक्षकां सर्वसत्त्वाजनाहिताश्च सहस्रा संपश्याचितानश्च ॥ तांस्तायीजसितां समुत्थां समीक्ष्य तत्सत्त्वप्रभुश्च य
तिम स्थितमान्यज सत्त्वगुप्तसमयाश्रयत ॥ ततः सत्त्वे तिमकाला सदर्शनात् हितकम्पिता ॥ सहस्रा समूयायां सत्त्वानां प्रवज्ञाश्रयत ॥ तत्रापि सायिअवंतम

त्स त्याहि माहिमार्यसुचिवविष्टि त्रास्यानष्ठे निभ्वलिमण्डियाा मोदवीमाहिमां धाासर्वयिमसरवीज नाक्षमतमास्वास्ययहेनप्रवाधयिजुमूयययूषा
नजुकासांप्रयहेनाधेर्यमासाध्यमाजने ठ निश्चवमनीसमालीन्यनाक्षसरवीयवमसवीनूासीलायामयिआयन. समसालिंथवच्चिमार ननस्यविसुका
से देवादिहसमागमा॥ ॐ मिनज्ञदिनं गु त्वासर्वयिमसरवीड नाक्षयदवीसदर्गनांवीश्रीसमाह्यनाष्ठ्ये वमवुनीमरादवी धेर्यसमालंवपसमोक्ष वुजामदेरास
यिअवागमाद्वव ॐ भान्यदुपवायिमर नजुअर्यासमासीनार ननूदेस्य भिकम्पिमार नर्दुयागहि मिवनीनस्ले निडायया मूत्वाामस्कारेसमसास त्वारसर्ली
कुगष्टसमागमष्ठ मांअयासनासीना. सनाश्रिध्येवमवुवीनू॥ कुमजासुरुसंयकं समासतु. युअक्रूयांनजुयिमावमावानसेमीक्षासं पवायिमाा नजुसमस
हसागमुसंपञ्यन्मांपवायिमार क्षक्ष्ट्रसालिगवचूमानमक्रकेमनााफदर्गनालिसंजरक्ष्मसं माहिमण्डियालिमार ननक्षमयिआवनयपविमकाधिया
दहा॥ स्वयं धेर्य समालंव्यसरवीनांसमूयागमा॥ नजुमांसमयायामांसर्वयिमसरिवजनाक्षमकसासमयागह. समाह्यास्यालिकम्पिमांध त्वासर्वयिमसं

वीक्ष प्रानय क्रि नि जासय ॥ जत्रा यिन मनू स्म त्वा. मनाम मा है कम्पिमस मकूयास र्व मायक्ष संपालयितु सर्द मिा मवक्ष रुधया का यायार क्ष्य दकया क्र स क्ष मा
दखवन यिमा या सी मन्य मा त्ठ नम सा दया मृ ॥ ॐ मि सार्याम मारखा मंक्रलाम लानिय ४ कृ अ ४ ॥ वि स स्ना प्रियां सार्याम माङ्वा स्येव मखु वी मृ ॥ जयिम त्रु यिमा या लि
म तु स्व मा पूनर्द्ध उ अम यास स मयानी म मा मेरुक्षा स रयं वय ॥ ॐ मि स लाँ ममादि सं निम र्या सा सह अर्भनास प्रवाधिमा यून म उगा स्तु मैवा त्यवा क मा ॥ म म ४ स मुदि
मा म लोय मध्य मार्य या म या न स सजीज स रवं रु क्षावूरुड निजा स रवं मयदा ॥ म म ४ प्राम ४ स मू त्वा य मलो सन्यमि धकू अ ४ स्वाल यस द सा गत्वा. संमस्क सविवे
स मा ॥ सदर्भ ना यि सा मार्या समत्का यम मी ग मा ॥ ख वग्रो ४ पूय ४ स मा कि स. मखु वृ लिं न्यव वदय मृ ॥ मस्त मा कर्पो मा ङ्वक्रु सं स्तू वां स यक म्पि मां ॥ सम भ नां स मा ङ्वा
स्य सं पन्य न्यव म त्रु वी मृ ॥ मर्ड का वियम म त्र यिमा या स यिमा क निक्ष म स्र्या म जयू नर्द स्कं मा प्रसे यक मा व मा ॥ ॐ मिङ्व क्रु स मा दि सं नि अ म्य सा सदर्भ ना ॥ प्रवा
धिमा पून स्र उगस्तु मैवा त्यवा क मा ॥ म मान्य यु ४ स खी का का. सदर्भना लयग मा ॥ या स्तवा स न स जो र्ध्य स दा या नो पूया वद मृ ॥ म स रव्वावि सिं म क्रु त्वा. सदर्भना

भू मा दि मा न्या ह स्का न्वा दना स्सर्व्वा ज्ञ मी ज्ञि तु म वां क न ॥ न क्रू न हा षि कं क्रु त्वा, या जा कू । अ न्वा धि त ४ ग त्वा न तु स मा ज्ञि स्य हा र्य ना डं छ्रू से क न ॥ न न स यु थ मं ग
त्वा, । आ ध यि त्वा स न क न ४ । य । था वि मे व सं का ये ४ सर्व्वा न्द स्सी न म ज्ञ य न ॥ न मा नि या दि व भं स कू । आ ध्व त्वा ह्व यं मू मा । तु का न्क स क्ति आँ ग्रां स क्ति य ष्ट स मा ज्ञे
यू ॥ न मा स स्वी ज ने ४ स्या र्कं, सु दर्भे ना स म क न ४ । प न्थ्या । क्री ह क्ति आ ला या से क्ति ड छ्रू मू या व य न ॥ न त स मी क्ष्म मा द वी ह स्सी न्म र्व्वा न्तु । आ हि मा न्नस स म हि न च्छि
ह स्वा न्का य ध्व न्की वि न या ज्ञ या न ॥ न त्र मा स वि वं र स्का स्य र्क स र्वी ज ने भू या । न न ४ स्वा ल य या ग न्तु ये या भू र्वा व य च ने ४ न तु ये या भू र्वी र का सु द र्भे मा स मी क्ष्म स
न कि ज्ञ स्या ४ स व स्त्रु क न्द क्ति स । रु व आ लि य न ॥ न न ४ पु ष्या ग मि त्वा मा स द र्भे ना नि जा ल य । द द र्भ न प्प व स्त्रु न्क ह क्ति ल ज्ञ हि म ज्ञि न ॥ न न्म स्सा मा प्र कृ नं म त्वा, स द
र्भे ना हि न्वा षि मा । ब्व भु अ न न्यु व स्का न्क नि व र्थे वं पु न्ना व द न ॥ मां न य सी म हा मा जा, न्वा ह्मा म सा प का य क ४ म द ज्ञ ४ स म दा इ स्वा य म व स्तु वि ना भ क न ॥ ठं ० ति न त्वा
थि नं ग्र त्वा सा न्व ग्र स्क्री स द र्भे ना नं ज क्ति नू स्का ग यां स त्वा स मी क न्वे व म त वी न ॥ अ द रु ज्ञा मा यि व । ध्या यं, य दि न वा प का य क ४ स्य जा ज्ञा सो म दा मा तु ४ स र्वे ना मा ति

नकः ४ ॥ ॐ नमः शिवं गुरु समाख्यातं निर्मल्यसा सुदर्शना समक्षि वाभिमता क्रान्तिं कृत्वा सर्व त्रिजालयं ॥ ततानि आभूरवणात्वा, सातत्रअय मालय । अयासुमसमाछिल्लन स्के
नम मानसा ॥ मसा तत्रकृ ॥ आहि र्मसमागतः ४ सुदर्शना यमधीतासमाप्नियाय ध्रुकं वं समापदत्तानू ॥ जय त्वं दृक्तिमालायां, दसीन्द्रकृ मपागता ॥ तां मवासना सर्वा
अयसकिंच ॥ आहितानू ॥ ॐ कियदृनयन्ड ॥ स्वामिना सा सुदर्शना । सर्व मतत्त्व कालांकं निवध्येवमवावनू ॥ स्वामि न सोमसमा ओदः । आयदपक लव । तन
समवक्षुन सतकिलसुनसायितं ॥ ॐ किताय्यां दिकं गुरु त्वा तत्सम विसस कृ अ४ सुदर्शनायियतमां समाग्वध्येवमवबीत ॥ यियक्ष मत्वयतन, कतं नवा
आयकं ॥ यदसोममसमा गुरु ४ सर्वनागाहि यालकः ४ ॥ ॐ नितर्लसमाधियं, गुरु त्वा सुदर्शनायियाय्रवाधिमातमालिंप्यतलीय मस्वयत्सूस्वं ॥ तत ४ डात ४ समूक
तलीसय्रासवकृ अ४ तत ४ यश्चअर्हंमासी, सुदर्शना निजालयं । ततान्यपूर्जने ४ भ्राकमस्वानामयिसक्रुधं गुरुत्वा सुदर्शनाद्रक्ष्मेसमकलान्सयानयि ॥ तकुने ४ क
तं गुरु त्वा तत्सममृमितः ४ कृ अक्षत्तउवर्दयभालायां, छि त्वा तांड क्ष्मेककततकत्युथमंगत्वा तत्रसयालयस्वयं धत्वा स्वयालकाकायं सोधयक्षसमाग्रयनू ॥

मदानन्दमया सर्वान्सर्वज्ञक्ष्मासमुद्गता। नमाम्यहं सर्वविज्ञानेत्रं सार्द्धं पञ्चकीसम्पासत्य नमः॥ तत्र तान्युवान न्वान्समीक्ष्य साप्रमादिन्तां निजालयं समागता। कुंतन ४ पयाम्बू
त्वाय यो॥ विमस्वीनृत्य संयामां ८ क्ष्मा तावमर्षीं कृतक्ष समद्दृत्तायस्य तवस्तु प्वल तुना त्यल्पयनः॥ सामनीक्ष्य स्वव क्रुक्रु त्यसञ्ज्ञितिलयिनं। ननु ४ प्र क्षागमान्वस्रु
४ महसानं ४ पूच सवनः॥ ॐ नमः श्री ४ पूर्वाग स्वायूवितासात्म्य षर्गनार। निवधे तत्य वलाकंयस्य न्त्वषमतावन॥ मानय सौमसाङ्क्षादस्तु नीयाश्च पालक क्षय स्माडाह्ना
महीन्दु सनमताड्डा तायकावकृनः॥ ॐ नमः निनइकृ माकर्ष्मं सालिन्वाऊ ननीयुरा ४ याधितां तास्वु यांमखा. संपञ्च्य सुवमभवी नृ॥ जमजमाकृ थयावंत क्षमस्वायया धन्त।
यदसोस्वाभिनी वाङ्क्ष ४ सुवाञ्च छनियालक ४॥ ॐ नमः निग्व क्रुममादिस्रं निजम्प मात्सुदर्गनार। कथस्त्रिवाधिमा कृ. निजालयसवहुन ४॥ नजासन समासीना. सार्द्ध सखी
तवे कृस्वा॥ तन स्वयालकंकृ क्षम निनि स्थालयन्मक्र ४॥ ननानिस्त्राम स्ववनुत्र गताम्मा जयनालयं। अर्यासनसमाश्रित. नक्षे तक्षनमानसा॥ नदानन्दसमायामा सल्लसि
त्यपति ४ कृतमतां सार्यासमयास्व स्यपदृक्षे वंमृपाद याम्॥ जयिसवे यिसो वस्वाषडलकृगमश्रिताभवा सनताम मसेचर्यत्र. सद्भ्यकं चयाधूना॥ छ क्ष मियम नचडुग. नही

ह्वा सुदर्शना । तमथ श्रीसुप्रियासार्थवाहो धैर्यं प्रत्याषिता ॥ स्वामिन्सर्वपि दस्यमकं. वाद नामकहि महिमा ४ किं त्वकः ४ समम सादूका. वनुनीयास्थयात्लकः ४ आयहूतनमम
कुञ्जे तयत्वसुनलिप्पमनमर्मा हस्तापयाधत्वं. नमास्र्यं मनहर्षं ॥ ०॥ इति मायादिमं श्रुत्वा हर्लासुननयमि ४ कुत ४ आयम श्रीसुप्रियां सार्थ विहसन्त्रवमब्रवीत् ॥ जा
यि मतक धन्या धैर्यदर्शी भस्वयात्लकः ४ मन्दस्तु यिनकर्तव्य मस्यात्मसूयियस्यम ॥ ०॥ इति हर्षित मादिश्य निभाम्य मास सुदर्शनार मथाहि वाधिका लिप्य. सुस्वाय मंपमि मदा ॥ न
४ ग्राम ४ समसूत्राय नरत्नाप्तिसूत्र यतिं ४ कूत ४ गत्वा स्वालय आम्रिलसंमस्कसचिवे ४ सह ॥ मनन ४ सुदर्शना सायि समसूत्राय निजालयर गत्वा सखीजने ४ सार्द्ध कत्वा लायमुदा भुय
॥ मनुसखीजनैरवाप्त वथयाना निवीक्षितुं मपदतुर्ष प्रदत्वा ममन ४ समहिनन्यय ॥ ०॥ इति मत्वार्थिनं श्रुत्वा सालिन्यासम निर्मर्यादर सूर्यां सुदर्शनां तां व. सयस्य स्यवमब्रवी
॥ हूथययाक्षिप्त वाञ्छावथयाना हिंदर्शन गच्छ सखीजने ४ सार्द्ध समीक्ष स्वयं रथयात्रा ॥ मनु नेपकथिमं श्रुत्वा सर्लाकू आनूमादिम ४ आगत्वा मनुथमं मनुवथयान मूयाश्रयनू
मनु सससारत्वा. आध्ययि त्वा समन मन ४ अयरथावि मेयतं कार्ये वथयानान्यमनुयम ॥ मन ४ सवथयात्सर्व त्वर्गाध त्वा समसादि ४ स समीप वथयानानी सुगुपतं सूर्या श्रुत्वा ॥
०॥ इति श्रुत्वा सुदर्शनानि नृपति ... अङ्कमेरु प्रागतः सानमती कान्ता सुदर्शना रिमादिता ॥ ... पूर्वं गत्वा पुनर्नवमरण ॥ मागत सुसमीपमि वथयाना ॥ ३

कमलानां स्त्रियी मजमृदर्शनासमागतानमृयासखीजने ॥ साद्धेव थयानाप्यसयकृ ॥ कजसमी क्रसर्व, सुदिनासास्दर्शना सुचियंमानिसर्बोधिय थयानान्यियमध्यमा ॥ मदहिद
र्शनाकुस, नदिनासासृदर्शना ॥ मना निजालयग कुंयचा मूरवानमनासयकृ ॥ मन ॥ समांप्रियांद स्वायचा मूरव निवर्लिनां सह मामपूयासु ध्यनयु क्षसमृयासवकृ ॥ नमकृ
स्या ॥ स्वलार्याया, वसुन्मनिधु ॥ मा हिनसर्ला ॥ मामययिधुनयुद ख्वा समसलयथकृ ॥ मलसमीश्च हिवशासासृदर्शनानमाधकं ॥ जलि न्यायामसदवा ॥ श्च मुनजनो ॥ पूर्व यया
मलामसमृयाधिष्ठमृदर्शनास्नु यानु यमसर्वमनत्वुवनालकं निवश्वेवनाधन ॥ मानय सीमदाइ स्थानयमय थयालक ॥ मल यडाहि ॥ धादगु ॥ कर्या यहिमानिन ॥ ...न
...दि ... मा यन्ने सांसृदर्शनांनलक्ष्माहियाधिमांनखावाधय न्धवमख वीनना ॥ यिमाजकू था ॥ कार्य, यदसोय थयानरु नु मद्व ॥ धमञ्जदा ॥ आपि, सर्वुवात्मसम ॥ प्रिय
...समाखामं निमम्यहा सृदर्शनानम थाहिवाधिनानस्के कत्वालापं सखीजने ॥ आनवाययह कालन, हक्षि आला निदासिका ॥ नद निप्रठलक्षीपं द स्थानस क्षि
यालकां ॥ मनानिर्त्वविना ॥ प्राज्वे ॥ अ यमप्राप्यडडवू ॥ अनमन्निंय भमीकर्तु पूनमजाहिडडवू ॥ मड्यामयवंकृ ख्वा, सर्वं यिम क्रिथाजमा ॥ आजमा धा ॥ सव कालरुया ॥
[illegible] ॥ २

नित्याधियाश्च योनिकाः ॥ अनदग्निय्र गभीक र्तुंस समानद्विपद्रु माः ॥ अननानानायायविधानेस्कंगा नकव र्तुनस्ताकिंअननानायायविधानैस्त्यु कवे ॥ भागिनियूनसुः ॥ समदस्कीलाद्दि
गाधीफनेवाद्दिप्र गमंययो ॥ नमग्निंमलिंफंद्रु स्का सर्वा न ॥ पूयिकाक्रियः ॥ यदस्ताजकूलवमिस्तजासंशिवमानसा । फमान्यजगस्मगर्नुसहसानिगमिास्तन ॥ अञ्जलिस्थाप्रमू
नाः ॥ सर्वानामाज्र न ॥ पूयाक्षिमा ॥ ममन ॥ सदर्गेनामापिसर्वसरवीजने ॥ समहः । स्वाक ॥ पूयाद सिर्गत्वामसस्मान्यमस्तवचनू ॥ मत ॥ नासवकलायामाञ्जलिस्थापमसगः
कुयः ॥ नमग्निमशिनंड्र स्तुंभासाधायविप्रासौचवनू ॥ नतमास्तुमिनाः ॥ सर्वा ॥ समीक्षनंमहस्त्रिस्वं । पचस्पचमाहीकन्यस्ताक्षिनाहुंवनस्क्रिय ॥ मदासक गाज्ञानूक्ष
नागर्ड्रनगवद्दित्तिः ॥ अउद्योनस्वचिवे ॥ सार्द्धचममा । यायचनमू ॥ मयानतजनस्तस्यसहसासरुयागन ॥ अयादावुप्रधर्मिंकत्वायूवस्क ञवमर्वोत्विनु ॥ दवसवा
विजानीहि । मसास्यानप्रवर्हमे । यदग्निनाधूनाहस्किंभालाक्विकद्विदजन ॥ नानानायायविधाने ॥ सप्रतमंनाहिगाकनि ॥ याजकूलंदस्तदा ति सर्वठसन्कियोयिकाः ॥
हिनिनस्प्रदिमंङ्स्वावपनि ॥ समकूगलन ॥ असहसागजमानस्थ मजाहिसंमस्वावचनू ॥ मजापिस्कन्धमर्हीपंसमीक्षसन्यः ॥ कृमः ॥ अदवन्द्रमनसास्मत्वा । प्राथ

आ कांडो धावत्तीकृत ग्रीलाक... ॥

प्रहृष्टमनुस्मृतानु ॥ नमोऽस्मि नाथ स्वयंभु॥ त्वाचव्रजव्रजनानि म॥ सर्वा लक्ष्मी चिमा विल्वा, नमो वन्दित्यवाचयनं ॥ यवाग्निपविकीफस्का नामायस्तस्ता स्वर्यस्तमकि
प्रकमान्यत सर्वा लक्ष्मी उवकस॥ ॥ मत्समीक्ष सयन्त्रा यिमतसोम्भूवदानूयेनान् ॥ संपुसार्यनदानत्र मसाव स्थिंन्ययानयन ॥ नदम्भूपथिमिकासो वक्रिर्मितलिन
प्रवृक्ष सर्वज्ञापिमङ्गलेन निः॥ अघपुत्रामं यथौ ॥ मत्समीक्ष महवीर्यं कुगस्यन्त पम॥ प्रसा॥ सर्वसिद्धिकामनसाल्का भजयमर्थं मेवाचयमेन ॥ नत्समीक्ष समाकर्षसा
का॥ सर्वी निविस्मिता॥ धन्यायं नयनिर्वीयकृ निपाक्षप्रवयियन सर्वधिमक्ति लोमालार ला॥ सेन्याधियाजना॥ ह्रिजादयापियोयाम्व सर्वज्ञामस्तुदर्षिका॥ ॥ जसि
न्यापिमहादेवी सर्वज्ञ॥ पूर्वाक्षिता॥ स्त्रियापितमस्तु॥ कान्नावसूर्वहितनक्षिता॥ ॥ नदृक्षदासिकाकूद्राकूगंस्यन्तयनमूदार नस्यवीर्यप्रसावानि सार्वभूवमूनाव
नमः ॥ यायाजाकाक्षियाधीया, मालावीर्याविवक्ष॥ धर्मश्रीमत्कुणाक्षया, नद्रसमक्षणमाक्षिन॥ ॥ मनेवमतलासर्वे, हस्तिन॥ यविवक्षिता॥ छूदंयाजकूलंवायि समति
वक्षिनंस्वस ॥ जस्य धर्मान्नृतावन, महावक्षि॥ प्रवर्हितास्वमग्निमहात्यानं भगमिनंतृवलपि ॥ धन्यायं सूमनीयाजा, कुम॥ सर्वन्तयाधिय॥ रुद्रायश्मान्य,

यकामं । किंच स्वयूथ वत्सजाक्षा छ्ं॥ निर्गता सम मारवां छ्ं। खासन्नपमि ४ कूम ४ कूद्रायेमू दिनमस्ये । ददोप्रसाधनं धनं ॥ काशिकान्यपि वस्तूतिसर्वाशिह्व पद्मान्य
पिन्दस्वा वारो मिनम क्त्या दास्या ४ समस्यन न्दयनू ॥ मद्धतुप्राय मां गता । सर्वालिकाव हूषिताम मे पिना प्रमदान तत्र वाज कूलन्मूदा ॥ तत्स मारवा ममाकर्ण्य । कूरस्य
वीर्यमूलमं नार्या सूदर्शनामूग्ध्या विक्षिप्ते वं व्यविकयनू ॥ यनेवं दक्षिणालायां । तलिमागि ४ गामीव्हनक्ष स्ह क्षिनाय क्षिता ४ सवै । नज्ञोनाम्वा शियक्षिता ४ ॥ न्त
सथकू ॥ गा वाजा । तर्लीमन्न पमि ४ कूम ४ छ्ं॥ मि निक्षिस्य सामूग्ध्या पूनयवं व्यविकयनू ॥ कनमद त्तं नंनस्य नर्तुर्द्धिन नदीय म ॥ वाजाव पिसदानेवप्र दी प ४ मयना
नय ॥ सा के ४ सर्वजने धूर्ते । वीचिमाम पिना पि स ४ य यन त्वचने वाङ्ह छ्ं॥ ६ आयद दामि मां ॥ जगाद किं कवि ष्यामिदेवने वा स्मि प्रवि माम छ्ं॥ द फलुत्रामहाय काव
नकिं निवसस्य दा ॥ कथमीदृक्षि वृ यन । दककज्वा भिनायदं तं च मित्वा सर्वदायवं । सार्द्धमूदाव श्रय दिशा ॥ छ्ं॥ निविविसमा मूग्ध्या सूदर्शना विषादिता ॥ स्वसखी
सभ्यामस्थन हस्ये वमे नाथ न ॥ जूपिस दिवसह हस्तां क्षियदिस्त क्षाक्षितमयि ॥ यविय ष्ट मया यह स स नास्वा तु मदृति ॥ यननिर्वापि मावाक्षि दक्षिणालाहि

दास्मि स॥ अवक्लिमा॥ द स्मिन॥ सर्वं । छाड्वित्वा वथे नान्ययथैं ॥ जेतोसन्त्यमी राजा । कु॥ आनिवीर्यवान्त्रमी ट्टू याइ चिमा काया । वन पिग्नयस न्नि ह क्षा स लने नत्व
सख्याहि यदि स्व स्वाहि क म यि॥ मया हि मन्त्र क नूनं महो राजा । कु॥ आन्त प क्षायय स्व तं स्वामिनी मन्ये । स्वसख्या सह स दा स्वया॥ स ह ने म स्व मारव्याय । छियनी
मं न य म म॥ दे॥ कि मया सम मारव्यानं स्व स्वामिन्या निक्रम्य मा॥ सखी छिया यि किं विन्त्रय सु लव म या स्य न॥ नछिया गर्भं का हि स न विनि त्र मा न सा॥ लज्जा विस
ड्रिया न क्ले मम्कि म वान न मा न मा॥ अव हि मा सखी नां मा । सुदर्शना नि शीं किमा॥ स मीक्ष विस्मया आ कवि ला य व म सा च म॥ जय य इ म न॥ सड्ड कथं कि वि
न साव न॥ न क्लिं स्व सामि स अ ख्य॥ स्व सख्या ज यि क म यि॥ नूनं म सो मया स्तु मा । न र्ला म न्य य नि॥ कु म॥ दक्षाया स सि आला यां । इ व र्लि इ चि मा क निक्षा॥ दे॥ किमइ
कमा क र्ल मा सखी ह कि मान सी॥ सुदर्शनां स मा लोक्य स्वामिनी म व म स्व वी नाम व या स्वामि निष्क्रान्ता । दक्षा यि स॥ कु म॥ प्रकुक्ष म द त्र किं मया स्या । व क्ष म म न्यु
सीम इ॥ दे॥ कि सख्या मया स्या कं निक्रम्य मा सुदर्शना॥ निश्व स्य डा य निश्व स्ता क स्क्रे निस न मान सा॥ कथं धैर्य स मा ले व्य । निश्वस्य सूक्ष्म कु मुं इ॥ सखि यदेवस

येथं कत्ताम नेय्वव मताधन । तदेव किंमयायायं प्रकृनं पृथ्वडुन्मनिायनेघड् यिमाकायीहर्लोज्ञा ययमनयाः॥ कृमिद्याकाहिनूकासाकुञ्जायेप्रतिका
यिमा। कृमनूपय।आवर्हूमहितिन्ड्रीवमडवीनू॥ छाहन्ववासन्यस्थ द्ववर्षुस्यड्वाकमभाज पियावर्षुयस्थववृयंगुगंवलंयनक्षा।नस्या डि कासमून्त
सतासेक सेंवलावन।हमस्यावलिनासार्डेप्रदापपिहुमूत्तसेतन छं किनक्कौथिनं गु। खासाकृवुसहीनमानसा।मतत्साधलयञ्चक्लीयूचनवमताबन॥
वुमार्जयमिशाजापिवंधननवधनय॥नद्विवर्न्हनताघामियक्रिहुंजीवमासें नक्ष॥ छूमिनयादिनंगुत्वा सृदगेनाहिवाधितानन मसोकु।आनात्यायायक
यानसाकृति ४॥छं किनिखिय सायामासृदगेनाहिनूत्सवा॥सोयस्येहाजनहाकुंयाकुंयानंवनेछून॥मखामोंवियनासायांसा४लिन्धानपानं४प्रस४सह्साय
सपन्थकीहूघामवमनाबन॥जयिवत्समसूषराडुं किंमड् ४खंसिजायनं।सोयस्यंसागयमाहतुंयानंवयन्नवाकूसि॥नदृ४खंभयूयावत्सनि४भंकावहुमह
सि।डाघथ्यंयघमासानङुक्कयानंवसोयस॥कृस्यवंवड्।धाकोपिम्वग्रा ह्नुसादलिन्दया।सृषासृदगेनासानकिचि। त्यसूलयंदसो॥समीक्षवेक्लिमांमांसा।

मामोग्व गु विषाविकाःसुयिव मति यथ्य नी मन नसेवं व्याविन्तयनु ॥ नन म वाकु गं मखा, कुर्लायं नाति वाक्रमिःमठ्रजु किंकचि ष्यामि, तुनं यिक्रागस्वंगुड

नु ॥ ७ कति निमिखि सु साल्लिन्चा, देवी नन्म, तकु जंकयाःस्थस्तइ ७ स्वाग्नि संगे फगखान स्कोनिजालय स्तकमा मन थ मी चाजा कुम ४ सैन्य समन्चिन ४ अड कुंजनयकासा

हं, मसा सा हेमंदा वननु ॥ मतुजा नयपड कुंगनं मखा कुगं प्रकुं ॥ ग्व गुअमा तु ४ पूया गखा, सद गनेव मखवीनु ॥ मानय हेगा मि ष्यामिड कुं यिजा मस्वा म्बुजंमइ,

नुक्षांयुदखा मप्रात्नं वक्रिलु मर्हसि ॥ ७ कतिन ख्यार्थि मगुस्वा, सालिन्चा कवूधरनु कानूनं यिहग स्य याया न्तसुं वैषस्य विन्कयनु ॥ ७ वंनि थिसु सा विन्चा, देवी ग्व

गुसु मीक्ष नां स्तु यां सु दनं नाभव मका षन विचाच्छ ने ४ यदि यिजा मस्वा मोजं संड कुमति वाको मि सग कुसमीक्ष नुयाजु, खेंस मायाकु मर्हसि ॥ ७ कति ग्व गु स

माधिसं निम स्थ सासु र्नता ःमस्वा ४ ग्व गुअ ४ यदोन खाम मावचन्ति जालय ॥ मतु सात नुयामजा, ख तस्वी मनुचा थिसी, सर्व मनत्युव ला कं, स मास्व्यायेव मखवी

नु ॥ ७ सिसयिगानिष्याव ४ यिजाइं कुं मुस्वा म्बुजं यदि न क्षिमयिसत ४ समायाहि मयासद ॥ ७ कति नयादिनं गुस्वा, सासस्वी हि मसा षिसी ॥ स्वा मिनीं नां समा

लोकनाथस्य स्त्यैवमब्रवीत् ॥ इदं विनाकथं पितार्ई षकुलजव ४ स्मां प्रमेयदाइ तच्छ्रायान लस्मायाख्यावदस्तवत ॥ तच्छ्रुतिन क्ष दिनं भगवन् आसदर्भनासमीक्षवांस्सर्वा
सत्वं कीम त्वां सम्यग् स्यैवमब्रवीत् ॥ अथ यिलड तच्छ्रुत्वा कुलं सर्वथा नास्ति मत्सदं । कथं सद्यि भावत यति स्मार्कुं वसयद्धि ॥ तच्छ्रुत्वा क्ष सानयास्त्वास्समन्चितास्सद
ता लज स्वयानं समानुक्षतत ४ संप्राक्षिनावचनं ॥ लउमा । गतिमालाक्षसर्वज्ञ साप्रभादिताप्रवचनं किं इद गतेकन्यकूलाक्षिकयये ॥ भगवान् आपलागतांदवीसद
नीन्त्र पात्मजां । प्रत्यक्ष तोज्ज्वस्य तसर्वमानुष्क्ष स्वीजनाक्ष ॥ तत्र सम्यमांदवी प्रगत्वाकस्स्वीजनाक्ष निर्यादवात्सुयनी त्वायाजकूलमूपानयन ॥ तजावकों
तिर्दवीकियज सत्तमादयात सर्वसर्वबीजनामानुषनक्ष ४ पूर्वड यानयनां ॥ इस्थानउप्रविक्षसाप्रगत्वामानुष्यालये । यादम्बूउपद त्वा भगवन् क्षियक्यासमया ।
यत् ॥ तामभगवन् विलिफायांसमीक्षे सस्साप्रसविक्षिमास्वयमालिङ्ग्यप्रकृ एवं समादयात् ॥ अथ यिप्राहसमपूजिकिमर्थना भगवन् सर्वक्षि । किंमइ ४ स्वंप्रजानंदि
स्य दत्वप्रयाममा ॥ तच्छ्रुत्वा यिमाजासासमालज्ञादतांभयाभा । अक्षम्रस्वाक्षिताने विकिधि प्रसूलवंदये ॥ ततक्षाजननीतस्यामस्वंइ स्थानि विस्मिता । ततस्

स्वीतां मया मनुष्यप्रापय्यैवं समादपयामि ॥ किमर्थं ग्रे विमूर्च्छी । क्लिकाजे षाममा त्मजा र किम स्याजाय मद्ग ४ स्वं नत्समाहितिमपूर्व ४ ॐ मियष नया माक्ता स्वामि
मिन्या मा सर्वी विनामि । निश्चय स्येनत्य्र वत्सा कं विसत्य गन्या वदयामि ॥ नयानि ताधिनं ॐ त्वा सर्व सा विस्म यान्वि मा ॥ स्वात्मजां नो स मा स्व सौं स्य न्याव मैं वीनि ॥ जयि
जा माधिक पूर्ज विषाय मनु माक था ४ यथ ष्णि नं प्रकुं जा ना मया मा र्षे स्व वं व स ४ ॐ नि मा जा यि नं ग्रे त्वा मा त्मजा यि स भिना र न यथ स्क्ता नू मा दनी मा तु ४ भय स
माक्रियनि ॥ नस्या ४ सर्व प्रव त्सा कं निसम्य मयि कान्तय ४ ॥ सहसा नो स नो ड्र ष्टं न जाय योप विहि न ४ न जागा नं समा त्मा ष्ठ जन कं नं स द भ ना । जा त्मजा स स मा त्सा
यनत्वा मा तु नू पा ख्य नि ॥ नां लक्ष्मि नितां पूर्जी समी क्ष यि कान्त य ४ स्व द विस्म यय का स्य ४ स मा स्वा स्थैव मनु वी नि ॥ जयि वत्स समा धाय । निष्ठ किं न विषाद ना ।
मजा सद समा निष्ठा तु कं प्रि नं स्व वं चना ७ वं मां स्वा त्मजा वी क्ष्य सक्ष्मि नि मि नांल्ले य ४ स्व द विस्मये यू का स्य ४ प्रो मा द मा च्चियव वंनि ॥ न त स द ग्रे ना मा हु य ना ।
पूर्व समा निष्ठा । स्वी नि ४ स्वि द य का ति ४ सा र्ध न दा स मा चय नि ॥ समी क्ष न त्य वत्सा नं न स्य स ना ४ पूर्वा व द नि ॥ न कृत्वा ज न नी प्रो कां स ले स न्य य नि ४ कृ म ४ मो ता

नमिनां ॥ उनफः समा स्वाम्प २

नै२ मा२

यावे महीसम् त्वामस्थे नि श्चलिम ड्रिय ४ श्रीमकार धैर्यसमालंब्य मामव मांसं ज्ञात्मज ४ सदर्शनाय युयगाकुं सत्वका तमेवमब्रवीत्॥ मामव दंगमिष्यमि, सुद
र्शनापि ड ४ युव ४ सतं जिघ्र स्यामि वक्रकी, त्वा ष्कं मवीजनात्प्रजा ४॥ ठ्ठु नियुक्ता दिनं गु, त्वा सौ नास्त ति नाग याः सदृ सोनं समालिं ग्य स्वात्मज मेवमब्रवीत्॥ नात
पू कं ज थ मृत स्व वाञ्छ मनन्म दृह्न यं नराध्यं त्व सारि संवका ४ श्व सत्य स्य पुत्र ज ४॥ ठ्ठु नि माता दिनं गु, त्वा सज्जात्मज ४ सुधीच यिस दर्शनानु वकात्मा, नांप्र
त्स मेवमब्रवीत्॥ नयाविनाकृ पस्य तुं मयिनाजाद मृत्सद रजीविकुं दिनया सार्द्धं मतु मपिव प्रात्मदः॥ किं मजजीविना यिनया सार्द्धंच मिं विनानद दं कृ
गाच्छ यं डकू न स्या मृस्वां म्बुजं॥ ठ्ठ ल स्था मांसमत्र्य मामयं संकू ४ सुफ ४ समीक्ष स्तनु सान त्वा नन ४ सं प्रक्षिना सत्वन्॥ नन ४ सन्द्य निर्गत्वा ब्रा साधा यविसंहि
न ४ ज मा घ्रा स्मन्ति घृ ४ सर्वान्स मा मन्कोवमादि जनहवका संगमिच्छ मिद्र क्षु सुदर्शनाम स्वं न त्सर्वे पिस माधाय याञ्छ संपाउ मर्दथ॥ नया समं पुनि स्था
यजाम यं मकू मडमं सर्वदास मयाञ्जि त्सर्स्नजं न्कुयथ ममनन कु मान्द्या जामा स्वानु रुं च कू मड मं सम मया मन्त्रमं पध्य, सादन मेवमब्रवीत्॥ ज्वनज

स्वं मम ज्ञा न, न न्ह्यास न थ्वा जि न ४। ॐ दं याश्वं समाधाय, सर्व संया जुम र्स मि॥ ॐ मि ज्ञा ज्ञा कु ।मनी कं निम म्य स कु गङ्ग म ४ अ न थ सी मि थ मि ॐ लवा त्स सा दय
वा धिन ४। न भी वा जो स मु क्व य स नि ४ स दाय ड न्ह मना ४। वी धा म को गर ही ब्वा गु स्व पू या त्रि र्ग भी य च न॥ न मा इ च थ्या न सो से हू कं व म मा द ध नु। स संगाय
वी दयागी नं, लो का न्चि ना य धा व च नु॥ उ वं सु धा व च न्हा ए गी कन्य कु डु पू या कि कं। अ म मा सा य विभ्रो न्को नि व मि डुं स मा वि अ नु। न डु स मी ख्व व द्वो या मा र्या
४ स स नु या च च नु॥ य दा ष गी न या गी न गाय यं न ल्हो थ मा दि न ४। न त्सु गी न स मा क र्वे व द्वा य्य न मा दि न ।स मा म न्कु गर से का के ग यो स न न्ह्य व मय नु॥ न ज्ञा स न
स ज्ञा ति स मं श्रीं मि वा धि न ४। या न थ वी ध या गी नं गाय यं न्हू स्वा थ मा दि न ४। न त्सु गी नं म ना च म्यं ॐ त्वा च वा यि मा म ना ।नं पू च ४ स मु या ङि स सं प ग्ये न्ह्य व म
थ्रीं भ्रू। नु य मा ध वि हु अ म ड त्स या व र्ह न म हा नु। न ङे व वी ध या गी नं गाय न्ही को चि ना दय॥ ॐ नि न क्ष दि नं ॐ त्वा वी ध्रं ध्व त्वा स मा हि न ४ स ग त्वा न ज स मा
ङि ह सु गी नं स म न य य नु॥ ॐ त्वा न सो च सं गी न, लो का ४ सर्व हि मा दि न ४॥ सो च स्यं वि वि धं हा य्यं न सो सं यु म ड सु दा॥ न त्स मी सु ज्ञा य, न डु व द्वा ल य ग न ४॥

ॐ दा

त्वि सु ख्वा ३ सा ४

मां निसर्वाणि व ह्मायामित्युवाच नय नृपादा समीक्ष्य तानि सर्वाणि, ज्ञात्वानि विविक्तानि सा च ह्मा संदर्शितम् स्वात्मानम् एवं व्यवि कृत्य सा तु कास्ताव मयं कृत्वा
दिना न प्रबुद्ध उदपि तन्मतः पम मम सत्व त्याद्धि मा श्रिकं छिमा श्रिकां ॥ ततः समीक्ष्य न ह्यास्य संमोच स्त्रे विविधं नृपाः ॥ नद र्ष वृद्धं यं गी तन्मे षी दत ॥ ततः वं हास्य मा
लोकव ह्मा कूलि माभ या ॥ ततः पं तत्व सर्वं मम दी निव्य विकृत्य नृ ॥ ततः समाव ह्मया सार्धं तयालपं प्रमादि तक्ष नदर्षं भष ज्ञां च च धाद यत्र मानेन ॥
॥ नत समीक्ष्य व सो च ह्मा लात्व्याकूल मानसा ॥ ततः को भषमाया कुमिक्ष नी समस्या ग्रयन्तु ॥ ततः हि त्वा मूढ तस्मड पृथ्वी कान्चिनि गतिः समीक्ष्य सर्वाणि ता
कान्यून तत्र समागतः ॥ ततः पशापहास्य मादाय निः क्षगर्वं सर्वमास्व नृ ॥ तत्समीक्ष्य च सा वे ह्मालौ तत्व्याकूलं मानेसा निया श्रेव व्यवि कृत्य तः ॥ नून मयं पि भा
वा तः समागता न या गतन्तु ॥ नद यि मद ज्ञात्य मकं ना श्रूडनक्रिय तृ ॥ नून मयं पि भवा ता मयि ध त्वा तु हा ष कि निः क्षितिविनर्कसाव ह्मा । तस्मै तयाकूला
या ॥ एवं नत्व किं नं मत्वा मत्तूगिन विचाव विन्तः मां च ह्मां नयहि त्रास्यां संस्पृश्य त्रव मत्वा वीतृ ॥ ज स्व मा तक तथा श्वं कां नष्ठि मह्या ल त यं नव । जये वा त्र सयि

व्याह, प्रानर्याख्या म्यमाःअवं ॥ छुनि मञ्ज दिउं ॐ ख्वामा वृक्षाय विर्त्तिं किमा ॥ धैर्यजागय धिं कख्वा नडा छिं व्यनिलं धयगु ॥ मन थ्वान थ्व समूह्याय वीक्षी ध ख्वा समीक्ष
नां ॥ मन थ्व संपुह्लिमाया ॥ गंगम यंगी नं मूदाव यगु ॥ मञ्जगी मख्व यं ॐ ख्वा सर्व लाका थ्वपुसादिका थ्व विविधंहा जनेवसुंडे वां नस्मेद इर्म पा ॥ ७ वं सपुवय मा ॥ गंमर्व
लाकाचिनाद यगु ॥ कन्त्र वृपूयाया कडयान समूपा ॐ यगु ॥ मन थ्वसपुवय श्रीमान्सर्वकलाविचकृता थ्व मालाकास ख्य आलायां पुविभ्यस मूपा ॐ यगु
॥ मालाका नाम्ह पाया हू, क थ्व मालां विचिजिंना ॥ मकूपं विवि ॥ धे थ्व पुष्पेव विख्वासमसाधयगु ॥ मडविनांस मालाक्वस कुम स्म छिवकृता थ्व मदनि ॥ नाहि
नां माला, मकूं कुसमेव्य धागु ॥ मजुख्व नाम विक्रं सलिखिवसा मास दर्गेना, ज्ञानीयादि निसंख्य, मालाकाव पुयानयगु ॥ मदनि ॥ आहि नांस र्व मालाकाया थ्व
समीक्षना ॥ ज्ञ हि विस्मयमाय त्वा थ्व पञ्च्य मउ वमकूवगु ॥ अक्षास, वि नामाला, मकूटं वा निसंडयं ॥ छु स्मनस थ्वम्य मस्मा हि थ्व कूजायि यविकुंक थं ॥ छु स्वा
लोसमादयमालाकाय थ्व पुसादिन थ्व मर्व पुष्पायविस्त्र प्य, वा हू थ्व पु जड यानयगु ॥ नान्स मीक्ष सवाजायि समान्हिजन सवक थ्व जनि विस्माथि नख्वांन, ख्वजनम,

वमादिशन्॥ ततो मांसरचितां मालां मकुटं चाभिसन्दधे मी ख्वास्वान ४ पूयसर्वे या माल्यमूर्यद्दीकय॥ ततो निर्याह्य समादिशं ततः त्वा तीसरूनामृ दासग
ती त्वान ४ पूयगात्वा। याञ्चा ४ पूयउयामसेयन्॥ ततः स मकुटं मालां पृष्ट्वा तामभि। आभिर्मां सर्वज्ञोऽह्नाउयस्वाय्य। सयभ्यस्त्वेव मउवीन॥ यद्ये तान्मकुटां मालां
पृष्ट्वा तामभि। आभिर्तान्॥ न या ह्येया मयानी तोक्त्व स्यैमन्तमादद॥ ततः स ह्वानानृयानीय। सर्वान्समुपद्यो किनान्॥ स्वदामभीक्ष्य सा याहीविस्मितैवमब्रवीत्॥
अहं तथ। आभिर्मा माला मकुटं चाभिसन्दधे। यनैताच विनायृष्ठे। हन्त्यो सौभिस्थिविरसुधी ४॥ ततो निर्त्यानुभ्रमरकौ। मामात्मजां सुदर्शनां समुपामन्त्र्य मां स
वन्सदास्थैवमब्रवीत्॥ पुत्रि सुदर्शने पश्य पृष्ठ य विन सूषणान्। समीक्ष्य तांस मादत्स्वय पृक पूच्य क स न ४॥ ततो मात्रा यिनं त्वा। समीक्ष्य सा सुदर्शना
सर्वाभिराभिर्मां माल्यं मकोस मादरोमृदा॥ कृमिनामां किमं नस्यां। समीक्ष्य सा सुदर्शना॥ तांविदायाय वां मालां। समालोक्य गृहीत्वा न॥ ततस्मालां क्ष सा माता
दिति ४ भाकं विहित्वा ह्यासुदर्शना। अस्यां मम मनाचक्रमि सूंकावनमाखडं मृ॥ ततो निजालयं गत्वा। शय्यासने मात्रि तान् कृमिनामां किमं स्त्वा मं कि मेव व्याधि

२

नय भूतानुचमउसमायाम ६ सकृ । आनुपिनाक मिति शालीकाविज्ञायसर्वपिनिन्दययुहिंमामयि ॥ स्कन्दिविन्नाविघार्लसाहायिविविच्यतासवा । लक्ष्मीविख
दिनस्वाका । नक्षोसनयफमीनमाश ॥ एवंस्मिनांसमाल्लाक्षस्वसत्वीमांसुदर्शनानयुवन ६ समयाक्षिसूवमहावना ॥ स्वामिनिसांद्रनंकिंमवेषायमेउजायनमन छे
यें स्वंसमालन्वेपूवनमकवदस्वमे ॥ उक्तिमिप्रीकुपिनतसरव्यास्वामिनीमासदर्शना । लक्ष्मीसदा × यञ्च्यनयञ्च × विशावानेवाकिचिदसायनया ॥ नेअन्येनउवला
नंसकृ । आपिविषादिन ४ । नन ४ संपुष्किनावीक्ष्य कृमिकायालयखडन ॥ मउसमीक्ष्य कृमिति । कृमिकाये ४ कनानिम ४ नदनिहृन्दयवंकृमि प्रवकायपु
। आस्तिनानलिखनामविक्रीस । लिखिखायपयि । आपिनं सर्वेषांकृमिकायाद्भूसमपातामयत्युच ४ ॥ समीक्ष्य कृमिकायासु सर्वनमदि । आहितंतजनिविस्म
यमन्यनविहतएवंवसाचिय ॥ जसाविउमिदंयनकनमयंसशिस्याविन ॥ स्वाइ क्षिन्दयंकृमि नासारितहङ्गनकुविनु ॥ ननसमक्वचनानकृमिंयवि । आसितं
सर्वसाम्उपविस्मयभावनयच्चपाक्तिकं ॥ नदक्ष्मासनयच्चापि । विस्मितामितिपेहर्षिन ४ । सुखानंपूवन ६ स्त्रीयाप्रीयमयत्समादचानु ॥ नत्रनंसमूयानीनं

समीक्ष्य महत्त्विद्यीमूदा । सत्कां सद्धर्मनां सर्वाचामाध्मायएवमब्रवीत् ॥ पूजनाज्जसमानीत मिदं कुंकुमं प्रभो । आदितं नं । स्नाप्य दृग्नत्वं मथ्यफसमाकिशं कुकुमं चापि कदाचन
॥ तज्जसाजननी पूजीं समाम न्कुम मृद सद्धर्मनां । सर्वाः पूजी सत्रवीग्धापि समयमथ्यन्त्यं वमब्रवीत् ॥ सद्धर्मनसमा दत्त्व कुकुमं मिदं प्रभो । आदितं नं । कुंकुमिमा ज्ञार्पि
तं कुंकुमं नमप्रसीत् सद्धर्मनां ॥ पश्याननीतज्जसा वित्झा कुंकुम नामांकितं थ । नविताया पनकुम्भं समीक्ष्य स्वयमादद ॥ मत्तो मीक्ष्य पुत्र समर्वाक्ष्य गिन्यापि सरवी
जनाश्च सद्धर्मनां समालाक्य विस्मिताः एवमब्रुवन् ॥ जपि विज्ञमन्निर्द्र्ष्टा कथं त्वं विनिम धूनार यच्छिताय वचं कुम्भं समादतस्वं वरस्वयं ॥ एवं प्राकंजन
मापि, तगिनी स्त्रि सरवीजनेश्च कि चित्रद पावदन्त्य वन सौमावनमानना ॥ ततश्च सा निर्गतात्तज्ज, स्वालयस सत्सोगमार । मयनासन ज्ञाप्ति तत् सौलज्जा
समानमयाम सर्वमत्त्व वत्ना कं । ग्रत्वा कुंभा विष्यादितश्च तमावर्द्धकिमालायां, समीक्ष्य समुपावचन ॥ तत्र पश्यन्तु विषश्च सर्वद्धनि प्रकृताकान ॥ उप
स्व रथकायांस्तान्मयपश्यत्रेव मब्रवीत् ॥ जद्र समयि समिक्ष मिकर्तुमी दृग्वचनं थं तद्धा नृक्षां समासाय प्रकयाश्रित्य प्रसीदत ॥ कुंकुमिनक दितं कुसर्वभवच

हृक्रियगेक्ष्वयदृप्तयउस्तम् हृक्रियपक्रिनृपमता मनकक्षिमदनसृदतनायाफक्रिवकाराकाल

थकायकऽयदोखुमिकृवृघदग्रथमिमिम्दावदय् ॥ मकृत्वासमधीर्विङ्कः ऽ सर्वमिस्यिविवक्ष्यदशसर्वाहि। आहनंकाम्यंवकाय। गम्भयथवयं ॥ म
मस्तंस्कमाँहिसं सिदंयथंकृत्वासमस्नमिऽसर्वाणुथकयान्विङ्कान्तेमामन्कोुवमखवीम ॥ साहवक्कालिपम्यन्कुमयाध्कमसिदंवथ। मिवग्रपूवमाः
वामविस्मिमाण्वमङकृवनू ॥ धन्यायंसमकिऽ मिल्पीयमदमूलमंकमंजस्माहिर्द स्यमेमदस्तुयमवकदावन ॥ ममायथकयाऽ सर्वयुयम्लयापि
मेयथं। मानृगवग्वयथन्मर्याग्राह्ः ऽ युवउयानयम् ॥ ससमीक्ष्मयन्तुस्कं। गमयथंसर्वमन्यदं। मृदाग्राव मयम्जसदर्गनावयाधमे ॥ मजगंसमूपा
मीमदसूासर्वस्खीजनाऽ मामासर्वाहिगिन्यापिविस्मिमाऽ संप्रहर्षिमाऽ ॥ सदर्भनासमामकृसंदर्भ्रमममोयम। सदर्भमिगृहा। दयदंपुववंयथमूलमं
॥ दृमिमाज्ञादिमंकृत्वासमीक्ष्यासदर्गमा। मंयपमसिवाञ्छ क्रिसर्वजसमयश्रम ॥ मजापिकृतनामांकसमीक्ष्यासदर्गमा। विहिन्नवदनागखास्वास
यासमजागुयम् ॥ न्रवंमांस्वासयंगत्वा अयनासमजाग्रिमांसमीक्ष्य विस्मिमामान्यसम्पउयन्त्यवमखवीनू ॥ जयिसडर्गपुत्रियहवंमंयथमूलमं।

।समीक्ष्यैव विचिन्त्वा स्यात् सहसाऽज्ञमागमाः॥ एतच्छ्रुत्वा मसद्वृत्तं समाख्याति पुत्री मम। किंमद्गृहे स्वयं पुत्र जातं च मया न कृत्यमवद॥ इत्युक्त्वा पितृश्रमाज्ञा
स्वदर्शनात्मजा यथा स्माः। किञ्चित् त्वं त्वदुःखं नैव ददाव। धर्मरक्षिता॥ ननन्द साऽज्ञानती मत्प्राणो त्मजाया विषादनाः। विचिन्त्य स्वालयं गत्वा मत्स्यौ संदिग्ध
मानसाः। सर्वं मन्त्र्य वृत्तान्तं नित्यं सम्यक् सकृद्गमन ॥ निर्गमो। भिक्षो विकारात् दंतं समीक्ष्य सम्मूढा विमत्या॥ अतः समीक्ष्य वक्तुं ... सर्वसां न पर्यालोचितः। विचिन्त्य स्वा
लयं गत्वा मत्स्यौ संदिग्धमानसा॥ सर्वं मन्त्र्य वृत्तान्तं नित्यं सकृद्गमन॥ निर्गमो। भिक्षो विकारात् दं समीक्ष्य सम्मूढा विमत्या॥ अतः समीदं च वच वक्तुं प्रक्षालितुं स
मुत्सदं न दिदमन्य वदं त्वा पश्यन्तं न श्रुतं मम॥ इत्युक्त्वा भिक्षा पिण्डं गृहीत्वा सर्वे ते भिक्षो विकारं मद्यानां भिक्षो विकं परिज्ञाय यत् ... एवमकुर्वन॥ यदि ते विघ्न वा
क्यं दिक्षित न दं गुरुकं प्रक्षाल्य निर्मलं गृहं कृत्वा तु सदसा नया॥ इत्युक्त्वा निर्गमं दिनं गृहीत्वा सकृद्गमन प्रतिनन्दित॥ नदं गुरुकं समादाय प्रक्षाल्य सु निर्मलं स
नन्दसमन्वितम् ... त्वा न दं गुरुकं स आनीतं॥ भिक्षो विकानां पुत्रा नीत्वा समस्य तन्दयन्मुदा॥ तत् प्रक्षालितं वक्तुं दृष्ट्वा सर्वे पि भिक्षो विकाः सम्विस्मितं समीक्ष

कालि विस्मयं समृपाय यूक्षाम नमस्का (ओंविकाया ह्राज नक्ष पूयनदं गुकं । यनी स्वाम मृय स्वाय्य सुदर्शनाम दर्शयन ॥ नदं गुकं गुछ नयं, समीक्षसा सुदर्शना ।
सूभा नामा कि मंद स्नानाए ही त्वय माम्न नक्ष आम हू स्वा ज ननी सर्वाग गिन्यापि मरवी ज नाक्ष सुदर्शनां विहित्रा स्वां, समीचे वंव स्वाषिय ॥ सुदर्शनस संगुछ मियं
सर्वाति या कि नं स्वां गुकं किं नज्ञा ना स्मियत समी थेव मृथ्श स्वा ज वंस वांदि कंगु, स्वा सुदर्शना हिया षिना । विका किम ज्ञयु ष्मा कें मिलु ह्या स्वालयय वय नाम दं गु
कमना दायस रवी सुदर्शना लयं । ज का कें समृपस्वाप्य गजु वस मृया ज्ञय न ॥ कां सरवीस मृ पा सीनी पञ्च न्की सा सुदर्शनो ॥ मरू निग्व स्वयहि त्रा स्वा, नस्लेक्र गा
गला मृया ॥ नाम वंभ य नासी नां समीक्ष नम्न नक्ष स्वरवी ॥ विज्ञाय समृ या ग्रिस पे ज्ञय न्से व न्यषीदन ॥ सर्वमनत्यु वला नगु, स्वा कू (आ नियाग्नि नक्ष ननन्य यन्त्र मा
सांकी, वज काल यस मा व व नू ॥ नदा नेवज केल ज वं जिमा न्यं गुका निस । समीक्ष समृ या ग्रिस, वज कस्येव म व ब्रीनू ॥ जूदमयि समिका मियं जिगु मव मंगु कं । नलु
नूकं समा ला प, समहि वज्ञ या म्य यं ॥ कंनु निम ह्रा षिनगु, स्वा वज कक्ष सानूमा दिन क्ष मं स मि स्थिनमा सा क्ष, सा दय भेव म व ब्रीनू ॥ यदीच सि मस्ता विज्ञां संवं ज्ञा यिगु

मं सुकं । ध्यानं सर्ववज्रिणं च स्वासमानीय सद्दर्शय ॥ ॐ नित्यादिनं गुरुं त्वा सकृन्म ८ संप्रसादितम ८ मद्दलमं अुकं गुह्ये यं तो ८ समाध्ययं ज य नु ॥ नम ८ सनस्समादायसं
ड्वयं गायज्जिनं । वज्रकानां यूयानी त्वासमम्सदर्शयन्मूदा ॥ मदं गुकं समालाक्ष सं वं ज्जिनं प्राज्ञानितं । सम मीक्ष वज्रका ८ स्तर्वं विस्मिना ८ संप्रस दिय ॥ नमा वज्र कनं
ास. समासायनदं सुकं । न्वयम ८ पूर्वभागत्वासमूपानामयन्मुदा ॥ नङ्गं गायज्जिनं वीक्ष न्वयनि ८ संप्रसादितम ८ सद्दसान ८ पूर्वयाक्षा ८ पूर्व ८ संप्र वयन्मूदा ॥ नत्ते
ीक्ष नयानीनं सर्वजिनं ८ मूयात्रि ना ८ या ॥ ह्री सद्दर्शनासायिविस्मयं समूपायय्यु ८ ॥ नम ८ साजननीयाह्री. नमात्मजांसद्दर्शनां । सपश्यकिसमामन्त्र्य दर्शयि त्वे
मत्तवीन ॥ सद्दर्शनं ॐ कास्यं सर्वं गायज्जिनं वयं । स्वदर्शमं भकं यश्यग सादयदि कांक्ष ॥ ॐ निमाजादिनं गुरु सद्दर्शनासमीक्ष न नु । सर्वं गायज्जिनं कां कंप्रा
सीत प्रसादिता ॥ नत्त्र समीक्षन यनं कुर्वां कि मं सद्दर्शना । समस्तश्च यवं वीक्ष समादयन्वयज्जिना ॥ नत्समीक्ष प्रसयाह्री. नानिन्यायिसर्वीजना ८ सद्दर्शनां वि
त्रास्यां संवीक्ष्य वमत्तवीन ॥ सद्दर्शनं वयन्नित्वा ग्राक्षिनिमनमं । नमह्रूं समास्वायसर्वीय त्रान्त्र वाधय ॥ ॐ निमाजादिप्राकं यिनिमस्थेवसद्दर्शना ।

स्वयं नतु निहत अद्द सर्वबीवी क्षात्यवादयन्॥ मत्युविनिनं पयिक्षाय, सात्त्वी वतुयास धीश्च सर्वंगवज्ञौ नंकानं, नदं कं केसमादद्य॥ नन श्च सूदर्श नास्ताय
यन्यास्त्वा सहृद्धनं। स्वास्यहि गमान उत्सर्यास्तिन समाभ्यन्॥ सर्वभनत्स्वत्ला नंग्र त्वाकुअक्षनागनश्च मद्दकावा ग्रयगत्वा, समीक्ष समूयाभ्यन्॥ नत
कमानि नेवाहा विविधमाउ नानि सश्वकूअश्च समीक्षकान्सर्वा सं पंज्य म्नवमतुवीन्॥ जहमपिस मिक्षमिकतु मीहक्रूहाउ नं। नत्समीक्ष प्रमीदत्तुयन्मयामे प्रसा
धिमा॥ ह्रियिनक्ष दिनंग्र त्वा सर्वमन महकायकाश्च मृदानं मिस्थिनेम त्वामध्यन उवमेक्र न॥ यदीद क्रूहाउनानि त्वंकतुं मिहसमिक्षक्षि। कत्वाउ सह सानीय, सर्वाय
स्वान्तुकर्मय॥ ह्रू निनेहाँ अमंग्र त्वामकु। आमिविवक्षहश्चसथनि नन्धि त्वामथकनुं मसायनन्॥ सतुप्यानां स्वर्हिनां, हाउनामियकाय सश्चमानि सर्वाघि काकानि
सर्वाघि। आनतान्॥ नि॥ नन स्त्रमानि सर्वाति विविधहाउ नान्ययि प्रयादायन द्दकाघां, पूयनश्च समयानयन्॥ नत्समानि सर्वाति समयस्ताप्यनन्यूवश्च फान्सर्वान्मद
कावा संपक्ष्णनवमतुवीन्॥ हवकश्चयम्यममानि, सर्वाघि हाउनान्ययि। मयाकमानि सवीक्ष सर्वायुयं प्रमीदन॥ नत्कमिनिसत्त्वा, सर्वनन महकायका श्च समी

स्फकानिसर्वाणि विस्मिमाठवमडुवनु ॥ जहा ठं मानिसर्वाणिकाज निवयान्यपिरक्का पिरयकने र म्फजनमनिसन्दयं ॥ न नल्न्नायको विक्राथ त्वा सर्वाणि
कानिसक्षनयस्यपूवमानी त्वा. समूपानोमयन्मृमा ॥ समीश्रकानिसर्वाणि सर्वानिसन्दगाणि सक्षनयनि विस्मृन क्षयम्य स्फंपपडेवमादयानु ॥ कस्पदंस्म्हनं
कर्मं कमायीरमनेठम्यमरकी रक्षू कूनज्ञायाक्षप्रवस्फकोपूवामम ॥ ठं स्नाधि स्कंनयडुगम्रु त्वा समनर कत्पञ्नुक्ष विस्मिनं नं मही पालं सन्यम्यत्रवमडवीनु ॥ न
यडुमानिकाकानि. काजनानि. कर्यानियक्षरसाइसरमअविनु यां रमोदृयाकानिर्विवक्ष ॥ ठं निनफ्राषिनम्रु त्वा. सनयनिक्षप्रसादिनक्षकानिसर्वाणि कार्सीया
नेनक्षपूयशिखथयन ॥ नजुनडयानीकानिसर्वाणि रम्भाहि कानिसक्षयाक्ष्रीसमीश्रसविस्फयाक्षप्रसाद्दिय ॥ नजुमाजननीसर्वाक्षयूजीवापिसुदर्गनां रज्ञामस्नु
कानि सुर्वाणि. दर्गयन्हेवमडवीनु ॥ यम्यमानिसुरभ्माका निसर्वान्यपिसुदर्गने रयजेयावन विनृं समादस्वनमीप्मिनं ॥ ठं निमाजादिनंम्रु त्वाविन्वावि फ्राय
वटयाकनक्ष ॥ ठं मान्वपिकूनस्यनि. नागुमीसासुदर्गना ॥ ठकमयिगसीनंकुयूआसमीश्रसाप्रप्रम्र रसुदर्गनासमोष्फमीयनयवमनाघन ॥ सुदर्गनगसीनंन

त्वयैकमनयितोऽनंतं किमर्थं समाख्यातं महत्फलं खिदं खलु ॥ एवं सर्वाहि गिन्यायि सर्वत्रायि सखीऽन्ता ॥ सुदर्शनासमात्रेक्ष्य युक्त ॥ प्रतिवक्ताषित ॥ ॐ नि
माउ दिकं वायित गौ नीतिक्षम स्वीऽन्ते ॥ ॐ त्वायि मायिमा विकित्रास्या सिकिता किंचित्कष्टापनाः ॥ नम ॥ सासाय मत्वाय स्व सखीहि ॥ समन्विमार गत्वा स्वालय जाति
स्वभार्यासनन्ययीदन ॥ सर्वभनत्तुवरलाकं ॐ त्वाकुभमक्षमागन ॥ समवर्गुकायमालायांसमीक्ष्य समप्याविभक्तुमन्तुरुषधकायव्यं ॥ कनानि विविधानि स ॥ स
मीक्ष्य रूपधाव्यवं कर्तुं समतया वांछन ॥ कर्तुं समनयात्रिस्यसर्वपांनिस्यिमांमस्य ॥ सप्रमत्त्व मस्वामेऽऽः पूर्व ॥ एवमहापन ॥ एवकाहमयीक्ष्य मिकर्तुंमीदक्षुरु
षदांनददृशोऽमत्वाऽसमीक्ष्य मांगुधंमम ॥ ॐ निनक्षापिनं ॐ त्वा सर्वमनिस्यिनामस्य ॥ नकृतं दुर्लभकायं समीक्ष्य वंवहाषित ॥ यस्यैतदक्षधदांकर्तुं समर्थोसि
नथाकृत ॥ कत्वा मं आनिनं सिद्धमिहानीयाहित भय ॥ ॐ निमेर्तापिनं ॐ त्वा सकृत आनिप्रदर्शिन ॥ एवं वकायसर्वाहि रूपधानिवयात्ययं ॥ नन स्नान्यनिका
नानि सर्वाहि सत्यानि सधत्वान मांप्रयागत्वा दर्शयच्चवमतुवीक्षु ॥ यऋमामा निसमानि सर्वाहि रूपधानि कृतानि नरयुक्तं सर्वसमासाक्ष्य दर्शयनतयाधि

ॐ ४॥ ॐ मितद्र क्ष माकर्षे सर्वतथागतकायवाक्चित्तसमीक्ष्णानि कानि निरुपघातानि भस्म दिव ॥ मन स्त्व मनि मास सर्वाणि रूपघान्यपि नक्षत्राणि समादाय प्राव
न रूपम ४ पूर्व ४ ॐ हे सम समूप स्वप्यस सर्वाणि रूपघान्यपि नरूपम स्वव ॥ न त्वा संप श्यत्व व मत वीतु ॥ द व याजु स मा या न ४ स क्षिति स्थिको इत्याक नि ४ क्ष यानी
मानि स वाणि कान्कानि रूपघानि स ४ ॥ न मि मम्यनय स्त्वा सो स मी क्ष्णानि विस्मिन ४ मर्द्र ४ य स्वयत्व स त्वा त्मा संप ४ स्थि व मत वीतु ॥ धन्या सो स न्मानि विह्नु ४ सर्व
मि स्थिवि वचक्र ४ ॐ मान्य पि रूप कान्का निरूपघानि क वानि य ४ ॐ क्ष त्वा सन व स्त्वानि सर्वाणि रूपघान्यपि ॥ सार्याया ४ सर्वया माघं पृच ४ ॐ यन्मृ दा ॥
नि निम मी क्ष सा या ङ्की सर्वाध्य पिन या मऊ ४ सर्व स स्वीज नाभ्य पि वि स्मये स मूपाय यू ४ ॥ न ४ सा म सि षी द ह्वां नं स्थि स्थिकविनायक ॥ मादय ४ वं ४ स मूयाम
॥ प श्य न्त्यव मय च्छत ॥ कष्य दं ॥ ॐ मि मं कर्म थयम र वर्षुन्य वाणि दि रूपघमन्या णि द ध्यानि । कनानि मि सानय ॥ ॐ मि न यादि नं ॐ त्वा स न क्षि स्थिकनायक ४
॥ मि रूप षी मत्रा विरू संप श्यत्व व मत वीतु ॥ द विस सन्मानि विह्नु ४ सर्व विया विवक्ष ४ विव ॥ ॐ द मनी यां ॥ गा विछ ध्या इ यि मा कृ नि ४ ॥ न दिसन सज्ञागव रू ॥

तं संकाशितमात्मनः सप्त सर्वज्ञायि पृच्छन्त्यत कार्यं विनान गच्छन्ति ॥ ७ ॥ इति तन्त्रापितं गुरु स्वामदिवी तानि विस्मितान्यस्य दृष्ट्वा इति तं कर्म्म धन्या सा विनि भावदन् ॥ ८
तस्य वर्मरवी ज्ञानं निशाम्य सा सद्धर्मं नाम तं ज्ञियितं कृ अं मत्वा तानि न दृष्ट्वा मेच्छत ॥ तत ४ साज ननी स्वदास्वा मज्ञा मां सद्धर्मनां बोधयि स्वामत मामनष्ट तानि सर्वा
ण्य दर्शयत ॥ ज्ञानि सर्वाधिकाम्यानी सह घरानि समीक्ष्य सोऽसद्धर्मनाविविक्त्रास्यायज्ञ्यन्सवन्यथीदत ॥ एवं सतां निषीदन्तीं समीक्ष्य जननीय त ४ ॥ ज्ञात्मज्ञां तावि
त् त्वास्यां समीक्ष्य स्य वमतृवीत् ॥ किं मर्वं निय सपृच्छि विविक्त्रास्याविधीयितान ग्रतषवां ञ्चकत तानि गृहा स्वावीक्ष दिः ॥ ७ ॥ इति मातापितं गुरु स्वा इति तासा सद्धर्म
नान्तानि सर्वाणि पश्यन्ती नस्क्व वं च नाग्रही तु ॥ तत्र मात्ता पुत्र सर्वा सक्रमि न्याय्यि सस्वी ज ना ४ सद्धर्मतां विविक्त्रास्यां समीक्ष्य वं व का षिय ॥ किं त नाविषयत
वाक्य दियानि सन्धय सीयं समीक्ष्य त स्वमादस्य ये ज्ञाति याव तमन ४ ॥ ७ ॥ निजाक्ष यि सर्वा नि ४ समीक्ष्य व सद्धर्मनास्त्वाय स्वालयं गत्वा गम्यास तन्यथीदत
ऽ साज ननी सर्जा तनि न्यायि सस्वी ज ना ४ ऽ कमयि तस्मा इति किमर्थमिति भावदन् ॥ सर्व भत तु लौवेनं गुरु स्वा कृगस्त नागत ४ समदिकावा गृयं गत्वा समी

ह्सम्मूयाविभक्ताः नक्षह्रे ४ सर्वतथागतां मालादिहृषधानि सक्ष ४ यविनाभिसमालोक्य मान्यन्ध्यत्रवमखवीकृ॥ हवन्मादमयीका मितवविक्षु मीहआन्यनीः॥ माला
हृषधान्यवंतथागतानांयालनक्षूयाः॥ ॐ हि ह्रामिमंत्र त्वासर्वममहिकानकाक्ष मंभिस्थिनपयिस्नाय, पञ्यन्मत्रवमक्षुवन्ना॥ सा अक्षसर्वतथागतानांमालादिह्
धान्यपिः कर्तुंयथास्मिनवांछानवयस्यथप्रिमंत्रः॥ ॐ हि ह्रे ४ समनन्दिपस ४ कूग ४ समनन्मादिनक्षासंगुह्यसर्वतथागतानां, मासादीकर्तुमायरकृ॥ क त्वाहि
कथागतानां, मालादिहृगुह्यतथागतानांसमालाहृषधान्यपिः ॐ हृगमालानहृन्यकेतथागतानांहृषधान्यपिक्रम ४ सतत्वमालास्फ ४ सतत्वहृषधान्यपिरमक्षिस्थिना
मीनाकु ४ समादायपूर्वावक्ष्यकृ॥ कवसमसमूयास्कष्पकामालाहृषधान्यपिकम ४ सतत्वमालास्फ ४ सूतत्वहृषधान्यपिरमक्षिस्थिनायकोनाहूःसमायायोसनाहु
व॥धानन्त्वासमसहृदयेवत्युत ४ सफा ४ समालाः ४ समालाक्षकानिसमहृषधानिसक्ष ४ वाजाभिविस्मिक ४ यन्त्यपुरुवंगमादचाह॥ कस्यदंसच्चवंकम्मीहकाना
पु॥ आहिनं॥ ॐ हृगानयमकास्यंहृम्मफनकयावना॥ ॐ ह्यादिपंनयह्रुपशृः त्वासभिस्थिनायक ४ अफनपंस्प्रसन्नासां सेमन्यत्रवमखवीकृ॥ यवसान्

मः भिन्तीयनेमङविनंस्वयंनुपायामरमस्त्यद्दानमाद॥४कविनः॥ ॐ किनकदिनं ॐ त्वाजाभिविस्मयाचिन॥४॥ कोसरखीसमामन्तुसम्यअत्रवमाः
भेजन॥ सा॥ असर्वा ॐ मामासा ॐ मानिरुषधान्यायि। सर्वान्यनक॥४॥ पूयनीत्वा सदर्गयसूदर्गना॥ ॐ आदिपुनेयनुमा ॐ त्वासामूदिमासरखी। मा॥४॥ सर्वास्मानिस
वाल्तिडोदायाकपूयववयन॥ मनुसामसूपस्कायासर्वास्मयन्नमानिका॥४॥ सहूवधान्यायिसर्वापिवाज्ञा॥४॥ पूयाखदेकयन॥ मा॥४॥ समासा॥४॥ समासाक्ककानिसहूवधा
न्यायिनासीसर्वास्नियम्बायिप्राचूयवंडमर्षिना॥४॥ जसाविज्ञमिदंकर्म। यनसं। आसिमंकनं। विन्वकर्मावमायासोनूनमनुसमागन॥४॥ जवंसर्वाहियास्वयामंनिम
न्यमासदर्गना। सूयधायिमानासा। स्वस्तुं मनुमूमायथो॥ मनुनासमूपायायामंसमीखजननीमूदा। समूयामन्तुनामालासूवधान्याय्यदर्गयन॥ मा॥४॥ समासा॥४॥ समा
सान्कसानानिसूवधान्यायि। जमिविस्मयिमस्वामानस्नेसंदिग्धमानसा। मनुवृक्षिंसरखीआदंअम्यसासूदर्गना। कूभकमयविस्वायनग्रहीतुंसमेवन॥ समी
कासनिकनीजननीसासूदर्गना। विलिवदनां मूगुआपेम्यस्नेवमसावनवल ॐ मांसयत्वानामाला॥४॥ सरूवधान्यायि। नरुतिसहुनाकन। मखदस्वपूयामम

॥ एवं मो अपि । श्राक पितनि समयी व सुदर्शना । पञ्चक व स्थि मात्रे वकि किस्त्य सूल वंदयो नमउ लक्ष यमा मुग्ध सदर्शना निजालय ॥ गणमय्या सनासीना, न स्को
संदिना गया ॥ सर्व मनत्युवला कगुरु त्वा कु । आनि वाजिन क्षम नमी निकुमध्य मंख्य सदकवलय कमृत । पविश्व नक्षं नंवी क्षवलयं समयाज्ञे यनू ॥ मुदावलय
केलर्यं सर्पयं त्रैव मत्रवी ॥ तव तत्समयी कमि, कर्तुवलयमीदृशं । नदमक्षुं युदानन, मनामयालयनन्वय ॥ ॐ मि नत्या थिमं गुरु त्वा समनद्ध सयजिस्थिकक्ष
मं कुसं जिस्थि कंमत्वा सम्यत्रैव मत्रवीनू ॥ यदि कमिमसा हाग, कर्तुवेलयमीदृशं । कुनू स्व मंखवदना नावलयानीदृशा न्वयि ॥ ठं मि ह्मावि नंगुरु त्वासकू क्षसं
व मादिन क्षमनुसं स्व स्यदक स्यवका वेलयानि सक्ष ॥ न थावक हि का कानि पूध्या घिवि विधन्यपि । जाहत्र धानि सर्वा घियाजा घिहाउ नान्यपि ॥ हं गमवकं स्वकु
हं च, पीठमि सामनानिव । खवांक्षमर्या सनाव्यवमं वा ति विविधानिव ॥ एवं ना नाप्रकाया घि, अंखवदकमयानि सक्ष । कत्वा नान्यवि सर्वा घिम त्वक हि गामद मंय
॥ न त सर्वा घिसं वीक्ष न भंखवदक कानकाक्ष सर्वं मि विस्मयापन्न स्वा का एवं मू दाहृतनु ॥ जक्षा सर्वा घिपी मानि सकाक । आहिन्यवं । ॐ दर्श । आह नं कर्म हृदय

कनकदानव॥ कानि सर्वातिमध स्वाहा सर्वं यिथिलिस्थिकामदा॥ नयनेन्द्रस्यपूजानी स्वाहा सहायां समदर्शयन्॥ मानि सर्वादि संवीक्ष नयनेन्द्र॥ समराजन॥ विस्मि मानि
सत्रासमस्य स्व नवमादिजगन्॥ क्रुसा किरमिदं कर्मस॥ आहनाहि सद्धेवं। ठ्ठा दक्षं॥ आहनं कर्म। ठ्ठे व्यनन नमयाक्षयिनि॥ यनदं साध्यनकर्म। विश्वकर्म विका
नक॥ कनेलसाध्य नकर्म। नद्दे धू वामम॥ ठ्ठ नि याजसमारव्यानं हूं स्वाहा नि स्वनाय कश्वरयमि नं समाला क्षयुद्ध सैवं च्यवदन्॥ दवयस्थायमानाम्नि
पुपस्यामि क्रुवा क्रुं न४ नस्य दं॥ आहनं कर्म। क्ष पूर्वदर्श निरवस्ते॥ ठ्ठ मि न क्षा पिनं हूं स्वाहा सनयनेन्द्राणि विस्मिन४ नभवकील्य कं म स्वाहा पूनय वं समाद्धि सन्॥ ध
मासो सम्मानि विङ्क ४ सर्वकर्म विवक्ष ४॥ विरूपायि विभुजा सा सद्विया॥ आहि नाश्य ४॥ ठ्ठ सादि व्यनयनेन्द्रासो। काकूकी यं महाममिनिं सहसासमया मन्त्रु।
मास्यस्व वमादी गन्॥ साध्य मानि सर्वादिनी स्वाहा नडावचाधनरम हिषीडम स्वाहा४ सर्वाचा मा४ समहिदर्शय॥ ठ्ठ निरूपसमादि दृं निनमस्य सजु नामु
॥ मानि सर्वाध्ययिनी स्वाहा मुद्धाने समदर्शयन्॥ मानि सर्वादि संवीक्ष सामहिषी नयात्मजा४ सर्वाचा माम्यस स्वाहा यि विस्मि माध वमकु वन्॥ जसा सर्वा

ध्यर्यीमा ति. क्षीका न्या न्यमानिद्दि। यस्यदं। आरतनं कर्म्म मभिहानीयदर्श्य ॥ ॐ ॥ नि सर्वाधिमं ॐ त्वा का चूकीय ॥ समीक्ष स ॥ वाङ्या सत्सर्ववृला नं
पूय ॥ प्रासय थ ॐ मं। मज्ञसख्यासमारख्या मं नि भमध्यसा सू दर्शना। ॐ दमपि कूनस्य नि विहाये वं व्यविकथ ॐ। नुनमजुमजाया फि कुम्भा नि दृयि का कू
नि ॥ झायन सर्वलो के दि. कुम्भायमी दृ। आनय ॥ ॐ फि निम्बिलसमामृब्वालस्मासकी विनाभया। र्भीका विमानिसे नफनस्त्रीभ्यासना क्रिमा॥ कामवंखा
लयासी मं ॐ वामाजननीस्वयं। समलसमृपामन्युमानिसर्वाभ्यदर्श्ययन॥ मानिसर्वाधिमं वीक्ष समीक्ष कि सू दर्गना। कूशस्यि नि पधिपविञ्चा
यमसी ॐ नसमे च्छ न समीक्ष मामनिच्छ की. मामासर्वाभ्यकन्यका ॥ रतगिन्यै ॥ सकला ॥ सरखा ॥ प्रथ्यामृश्यवमभुवनृ॥ सदर्भनसमीक्षे व. गहीॐ
नानि मं च्छ नि। ७ न ख ॐ समारख्याय. सर्वान ॥ पविवा.

२

चैत्य...मिमाप्रार्थितं कृत्वा लगिनीलिः सर्वेजनेः॥ लक्ष्म संकाविमखाना उकिञ्चित्रे वालेन ददौ॥ ततः सासहसा...॥ काननत्रनिर्गालय॥ तस्थं का
वि... संनपा...स्थो मया सुनाछि माया॥ सर्वे मम खुव स्थानं कृत्वा कृ...नित्या मिमतः नमा निष्क्रम्य तं वीक्ष्य यन्त्रका॥ प्रभव वनू॥ तत्र सत समूपात्रिलय
...निविविधान्यपि॥ क्रीडनकानि संवीक्ष्य शिल्पिकाम वदलधा... वन्ने समपीड्यामि कर्तुमीदृक् यन्त्रकं॥ क्रीडनकं वम...त्र समनू ...प्रयत्
नु प... मिमत्प्रार्थितं कृत्वा यन्त्रकवाः समीक्ष्य मां यदि कर्तुं मवद्यसि कृत्रवधि समद्भुवन॥ ...मिमहाविनं कृत्वा कृमः समनूमादितः॥ तथा
वकानूपन्नाहि नानाक्रीडनकान्यपि॥ व्यअश्नान्यहि...नानि, मायूनपक्षकान्यपि॥ पादस्थलकरयन्त्राणि, तथास्यान्दिनकान्यपि॥ तथ मुके
मयूरंवंवेहंसकाकिलमत्तिकानू॥ काष्ठमयानापग्रोथ्य सर्वाण्यकानपक्षिगणः॥ एवं वकानकाम्यानि विविधान्यस्थलान्यपि॥ उमसंचानि सोः
दिर्घदर्शीयंमनाहन्तं॥ एवं नानाप्रकाराणि जन्तुलाश्चानि सत्त्वानि॥ सक्षमस्थानि सर्वाणि॥ तत्कर्मिहितं प्रत्ययनू॥ मानि सर्वाणि संवीक्ष्य

सर्वतिर्यग्योनिकाः ॥ विनिर्मितास्तं कुशलं वीक्ष्य धन्या सीमितमदावदन् ॥ ततस्ते निर्मिताः सर्वाणि स[..]वीणि तथागतापूर्वाणीत्यापसंस्थाप्य सत्वायां समद
र्शयन् ॥ तानि सर्वाणि संवीक्ष्य सत्वाज्ञानोत्पादयः ॥ विनिर्मितास्तान्समामंत्र्य पप्रच्छ एवमादयाम्बू ॥ कस्येदं लालनं कर्म दृश्यमानं दृश्यते विनायकान्
स्तोमत्ता विज्ञा विश्वकर्मा च नायकः ॥ एवं न पादि संप्राकं पृच्छत्यां तत्कर्मनिर्मायकः ॥ सर्वालोकान्नपं वापितमीक्ष्य वं न्यवदयन् ॥ यस्थाने विय
लोकं नपस्पस्तदृशेक्ष विभूय मस्येदं लालनं कर्मिस निर्मितानान्याधिपा ॥ ॐ निन हा धिनं पृच्छत्वान्नपतिः सान मादिन ॥ का कृ कीयं समामन्त्र्य
पूर्ववं समादिनत् ॥ साधू तानि सर्वाणि नीत्वा नग्राव नाथन ॥ सर्वासामपि यामानां मप स्थाप्यापि दर्शय ॥ ॐ निया स्था समादिष्टं का कृ की
यानि मन्यसः ॥ तानि सर्वाणि प्रादाय मग्राव था धनन्नयन ॥ तानि मद्दृपनीतानि सकलानि समीक्ष्य ताः ॥ मदिवीप्रमस्वाः सर्वाः स्त्रियामि विस्म
यंग्याः ॥ तत्र सर्वे प्रवलानां निसं स्पसास्तदर्श ॥ कृ म स्पदामिमिह्वा त्वा उक्तमपि च वां चन ॥ सर्वमनत्रवलानां पृच्छत्वा कृता निया निमः ॥

णानि निक्षिप्य संस्थाप्य वन्दनं मम वस्त्राणि मनुष्यमत्र नानाप्रकाराणि वस्त्राणि श्वेतानि समानानि समालोक्य तत्सर्वमब्रवीत् ॥ सूत्रमपि
समिश्यामि कर्तुं गुलांशुमी दृष्ट्वा गन्धानदन्हां प्रदत्वा मयपथ्यम तस्मिन्स सर्वं ॥ कृतिमस्य वचः श्रुत्वा सर्ववन्दकाः वकः ॥ वन्दन्ति ल्पकं मत्वा मंपभ्य
नवमब्रवीत् ॥ यदीदृशानि तान्यानि । कृत्स्नमत्राहि यां दृष्टि कृदकू वनून तान्यानि । प्रवृत्तश्च यथा सूया ॥ कृतिमद्रूपदिक्षु संकृगः श्रुत्वा तन्मा
दिननानाना वनूट तान्यानि वकाय स्वय्यामदा ॥ पात्राणि मालवन्नानि । पात्राणि विविधानि च ॥ कनकशुक्लानि कांस्यानि नानावर्णकानि च ॥ वि
जसूपोपमंचादिवस्त्रासिंहासनानि च ॥ यथांवनूटकानांस गानि सवीरप्पूपानयत् ॥ गानि सर्वाणि संवीक्ष्य सर्ववनूटकानका ॥ विस्मयापन्न चि
ताः तपन्न मैन्द्र वमब्रुवन् ॥ जस्त्वित्रमिदं कर्म निरवमं समकृत संवा ॥ कृ दृ कृत्स्नाहि मं कर्मैतत्स्य मनकदावन ॥ गतस्थानि समादाय सर्वाणि तानि प्रसा
दमादवनूटकानकाः सर्वे यान्ति पवन्द्यानयन् ॥ गानि सर्वाणि संवीक्ष्य तन वन्द्रा विस्मिताः ॥ तस्मात्तान्समालोक्य पप्रच्छ वंसमादरान्मकः

स्य दं हस्तल नेकर्मिन हसं दृश्य म क्षविनू॥ यन्नेवं व स्वि गं कर्मिं न मि हाम नत्रादर्शय॥ ॐ त्यादिषं नवरु नुस कुला मक्कर्मिनायकाः॥ प्रश लाम मं महोपालं स य भ्ध
न्नवं न्य व दयनू॥ वा म न्ननना नि म र्वो लि प्रकृमा नि म हात्म ना॥ सू म मि ना वि व पश नि रूपमरू वं मि ना॥ ॐ मि न रु दि नं कुला न पमि: सा मि वि क्षि म न:
ग स्ये व ना नि कर्मा लि सर्वा ह्य पी त्य मन्य म न:॥ नमः समी स्व हमीन्द्रः समृ हिहर्षि ना मयः॥ का स्कू कीयं समा मन्त्र्य सं पँ व ष्य न्न व म ब्रवीनू॥ साध विमा
नि सर्वो हि ता नी त्वा म म्रा वँ धनं॥ महोषिधी प्रमुखाः सर्वाया माः समगि दर्शय॥ ॐ स्या दिषं न व्र न्दु से का वू कीया नि म म्य म॥ न थ म्भु गा नि सर्वो हि न त्रा
व वा धि न न यनू॥ ता नि सर्वा हि सं वी क्षू महिषी प्रमुखाः स्त्रियः॥ सर्वाः संहर्षिमनस्का नाः पश्य न्त्य न्न व म ब्रुवन॥ कस्य दं सन्द र्यं कर्मि न दृ कृ दा
पि द श्य म ना॥ धन्या सो स न्मा मि: मि लि पि यन्नेवं व विमव वं॥ ॐ मि न हा षि मं गुलाका स्कू कीया नि म म्य स:॥ सर्व म नस्त्र व क्षा नं महो ष्या: पद मी व
दनू॥ म त सर्वा हि: समा ख्या मं नि म म्य सा स दर्शना॥ कृ ग स्य द म पि ह्ला खा द्रष्टु म पि व वा र्के ना॥ स वीं म नस्त्र व क्षा नं गु लाकू म्म नि वा सि न: म
ना नि कृ म्य सर्वा स्व स्प का वा ग्र म व्र ग न॥ न त्र स स म्पा त्रि त्य मा न्सर्वा न्नि प का न का नू॥ समा मन्त्र्य प्र सन्ना स्य म स सं पश्य न्न व म ब्रवीनू॥ हे व नी

३ हंसहीन्द्रस्य सुरूपकायः सुप्रकाशित ॥ ॐ दृ अंमतिसोवर्णं हीरजनं पद्मसूत्रहा ॥ यन्ममाँ ऽ प्यासाधितं लक्ष्मं गद्दस्त्राभगुणानपि ॥ मखोत्रसाघर्वं
तांधं संक्षा वधिनुमहेसि ॥ ॐ भितत्वार्थितं गृह्णा सर्वम सुरूपकायकाः ॥ गं समीक्ष महासत्वं पश्यन्तोव्रवमह्रूवन ॥ यदिदिहक्षाजनं वाहूः संता
भिदूरमिरसि ॥ मदीदक्षो वसं तागधं सं सिद्धं संप्रसाधय ॥ मदनूह्य मितिमत्वा सकृगः संप्रमादितः ॥ तथापि सोवसतागधं नपतः स
मसाधयन्तदहि साधितं तागधं समीक्ष सुरूपकायकाः ॥ सर्वविमितिस्याक्रान्तविलाव्रबं वतावियः ॥ अहावित्रमिदं तागधं संसिद्धं सोवसाल
मंत्रसाहिश्री ह्रेतागधं संसाधितुनभक्षमया सर्वानिमानि तान्यपि सुरूपकाय सायकः ॥ तात्रजनसमयं याहूः सम्रूपा नामयत्यनः ॥ नानिः
सधीविसंवीसूसनवन्द्रः प्रासादितः ॥ यथाक्रमं समाख्याय वृत्तु जखरः यामदा ॥ नदत्तिसोवसंतुष्टान्नृपतिः सानुमादितः ॥ कनदं साधितं
तागधं प्रभृतिं गमादवाक्तः ॥ तन्निगम्य महाविष्टः सुरूपकायनायकः प्रसन्नान्तं महीपालं साञ्जलिर्वमब्रवीन् ॥ देव कोऽत्र समायातः सुरूपका
नाधिवसमः ॥ तनदंसाधितं तागधं शुद्धशीलनसंधियाः ॥ ॐ जिनमदितं गृह्णान्नपतिः सानिमादितः ॥ तं सुरूपकायक्षुमावं संपश्यन्त्र वमा

नमो ... स्वाध्य मंद्र रूमित्र मिसूपकारं विवक्रुद्धं॥नदि तु समृपानीयं संदर्भ यपूर्याम म॥ॐ श्री यो ॥ ज समादि संग्रृत्वा सतत पञ्चस्व्रु ॥ नद्य क्षि प्रमिवि
स्थापनतोवन त्रि आग्रयं ॥मतत्र समस मृपास्त त्य सूपकार वि वक्रुद्धं ॥ नंद सं समृपामन्त्र संप भ्यन्त्र व मत्र वीमि॥ सा भ्यय त्स्वाध्वि मं हा गंधं त्व या मदमता
व मंव तुल्का सतन वमिस्तुष्टामृदा तीद्र रूमित्र मि॥म स्तूं वांस्त्री मम मन्त्रस्य पन्ने इन्द्र स्य पूर्या मृदा गत्वा वादां म्बुजं न त्वा संपभ्यन्नू पमि स्तुत्वा न्नूनं
सनपमि विहृत्वा तु स संप्रह्लादि मः॥ मवाहि वांघि मंद्र वां ग्रन्थ या संप्रदास्यमि॥मद हित्वं प्रगाध मि वनत्रन्द्रस्य पूर्या धूना गत्वा सं दर्भे संकत्वा
प्रसाद यतु तन्मन ४॥ॐ जिन ता विमंश्च त्वो सत क्रमः स म हिन न्दि मः॥ मस्थमि प्रमिताषि त्वामतत्र गन्तुं समेत्य॥ मनमः सस्रूप कृत्वेमाम मंत्रमंसद
तु ग्रन्थयं॥पूर्या ध्य यन वे न्द्र स्य पूर्वं नमः सम्पा च न म॥मं विनू पर्या कारं विरुन्द्र विमानिकं॥सभी क्ष्य सन यन्त्राणि विस्मि तन्नू त्य वि
नाय नं॥ज्ञा हारूपं वा कारं समय दत्तं न दत्त्वा मंवा तु सं वा पीद त्वं कोप्य सदत्तं मस्य विश्य मं॥ॐ श्री सं विनय या जो सतत कुसुम संप्रसादि मः॥ मंसूप
हि विनेमा वंस मास्व स्वीव म त्रवी मृ॥ॐ मंसपकवं विहृत्त समाज्ञास्या हि न न्यय नूः॥ पाक कर्म हि संच समद दत्त्वानि साध्य या॥ॐ त्वादि संन

ते हृदय नित्य सानमादिनः॥ तथागतं मानयस्मार्गेषु पाकमास्वेष्वन्तस्यानुग्रहाय॥ ततः कुमारः सुधी विक्रुः सर्वरोगेभ्यः न याचितं॥ सं सिद्धं सो न सात्साद सं प
या वा समायन्तं॥ ततः सं सा भि महारोगेभ्य निस्तीर्णा नि सन्त न पामृदा॥ सम स्का स्वाद्य सानन्दं वृतुज सुविस्कृ यामृदा॥ ततः सो च स रोगजनं गुरु ग्लानं पतितः सं प्र
सादितः॥ अमात्य सन्निहि विक्षू स मा मन्त्रेव मखुवीत॥ अस्मि स सूपका याय सर्वा व कन स्मान्यपि॥ आवा समान्दिना च म्याः सर्वे समधि सं पदः॥ स
वोषधि पिश्च वक्तु स्याधि सर्वा लेकेव स्मान्यपि॥ संपाद्य ब्यालि ददत्वा मनास्य सं प्रसादय॥ अपूर्यं॥ यागं कुर्वे ल वापि सदा वाच गति मृदा॥ यथा स्वयास मा
लौक्य प्रवन्य हि न हिंद॥ ॐ त्यादि स्वं न वन्द्यते नमु त्वा मा त्य गा स्थ मि तः॥ तथा सर्वे ददो त न स्य यथा दिस्सं महीगुणा॥ ततः सर्वे स समा दायदानं
स लज्जं मादिनः॥ तेषां स्य स्थ प्रिमं गु स्वाप्र वचा वा सि नन्दितः॥ ततः सस मू पा भिय सर्वेषां गत्र मन्त्रिणां कुमारावां च सर्वेषां सलाषि मे मना
न यमात्र वं स सर्व लोकानां नाना विध सलाषि मेः॥ इन्द्रियाणि प्रसन्नानि कृत्वा मूदा समाच नमः॥ एवं सुपूर्व न स्कृतं तु स्य कूलन्नमी विः
तांश्च सव कानां सर्वेषामपि मनास्वनादय नूपा तस्ये वं स हृष्टो हूत्वा सर्वजनः॥ पूजाचित्रिमा महिषी प्र मूत्वा नामा समहिड हूमीशि॥ तत्रैव

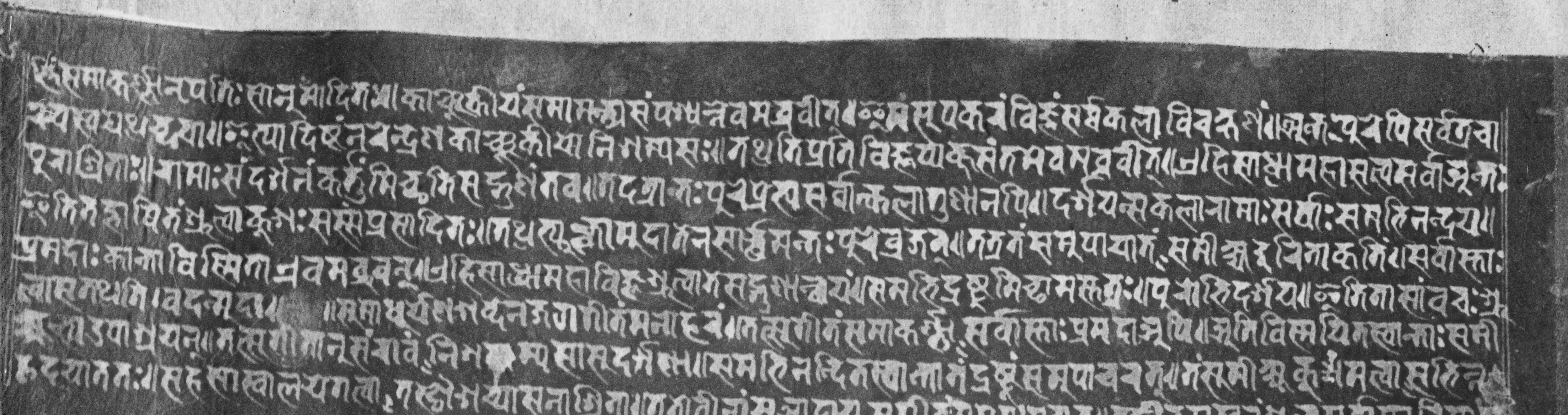

वसक वाग

व नः॥म नाम दं।मा दाय गीमं गम्य न्न माउय नू॥म तह मी श्रृत माकं ग्हिस वी या माउ ह्ह्र क्षि य॥ नमा वं सत ग मी मा नि प्र गम्य न्म ध्रू न खवे: स वी स्का: प्र

म मा मा विस्मा प यम को ना दयनू॥म मा स्नू ऊ मा दाय गम्य न्न गीम मम ना उय नू॥म तसं श्रु त्वा स मा ला क्ष स द्धीः का न्ना म दं यश्य: ॥ मथा क्ष्मा प्र

वा दन स श्री स्ता: संवा नी दयनू॥ मश्रि व कं स मा लं व ह्नु टी म ह्रु दि ञ्छु मा नू॥ ऊ म वं मे दनं या पि, श्रमि वा दी न मा उय नू॥म त स थ वा यसं वा वं श्रु

या व वा: प्र स दि व यं वं प्र स्ता द यस्न वी न्स्ता या मा: प्र म दाज्ञू पि॥ निःशंकं प्र य मं सत्र प्र व वा व स म नमतः॥ प्र वं स मत्र स वी हि स्ता हि या मा हि व

वि म॥ वि व वं श्रु स्व या श्री उ स्नूवं तु ना म दा व न नू॥ प्र वं स स्वी ऊ ना: स धं मं श्री ज व सि के म दा रू स्त्रा या प्य वा ह न्ते स्व श्री ति व स मा न्न मा: ॥ प्र

स श्री मा ना स्ता: स थी: स स्वी: प्र मा दि मा: इ त्रु त्ता स्त्र दन्ते मत नू स्ना प थि ता थं व म व्र वी न॥ जू व हि श्री उ थ श्रु वं, लं ज्ञा पि वा न वि यम॥ मा श्री उ

प य म श्री उ म वं पृ ना ह स्वि:॥ न्नू कि म या नू षा प्रा कं स धं चिम स स्वी ऊ ना:॥ नां पू नू षा प थि रा थं नि स मी श्रे वं नू षा व द नू प सू द मं हि कि म व त्वं

म प म यव ह्रु म नं क या न ललामा म सर्व भावित्र सर्थ ( ) ॥ प म स त्स ला म शी पि प जा हृ थं॥ य तु म य हि मा न स्य हि म म र्थ, त स्म सर्व प श्र जा दा म त वा

म म य उ का ना॥ वि मृ प का मि ता स स न मु व उ जा नी ( ) मा न ( ) स थं॥

त्रुषामनःप्रविशायस॥ अथ पंक्ती आनकामात्मानं किं मरणमित्यस्य पि॥ मनुष्यान्नुपाक्रान्तां हृदयास्थां सदाप्ररुदितस्य॥ मांसं वीर्यं श्रेष्ठियानुष्ठद्दृष्ट्वा वीक्ष्यैवमब्रवी
आय दक्षिण्या हिमवद्र्याथापि यं स्वयं स्वदपि॥ नूं रयनृता मांसमनोन्यग्रगाङ्गे कान्त्या गृहस्य चरन्तु॥ मांसमग्राहिगा कां विक्रयस्कूरास्य वनु या शिमतः॥ सदसा दृ
थमानस्कः सदाप्ररुदितमांमृपास्वनमनु भगवन्तं समुपायामं समीक्ष्य सा सदाप्ररुदितमांसं॥ मत्स्वग्रहस्यस्यमंविताम मस्तोसंस्थहि मासया॥ मांसमग्रेव हिमां वीक्ष्य सकूलस्थ
नूयाति मनःम संयव्य न्तमपा शिरसस मामश्यस्यैवमब्रवीत्॥ सदाप्ररुदितमायाशिदुहू मिद्दरुधं मव॥ मत्स्यदृश्य समीक्ष्य नीदयस्य मांसं मव॥
हेः सदाप्ररुदित मनुस्मला हृदयं न किंचन॥ नम संदर्शनेन दत्वा मनः संपरिवावय॥ एवं नष्ठापितं कृत्वा मं वीक्ष्य सा सदाप्ररुदितम॥ लक्ष्मा संकाविक
स्ताकोविनिःश्वस्यैवमब्रवीत्॥ किमर्थं त्वमिमं हृदया हि स्वात्ता या कांगा संपदं॥ कथममकोऽमन ग्रहणं हि स्वविवेवमागमः॥ गाढ त्वमिहमाति
यस्वां दृष्टा मनामम॥ उक्तः सन्मनदास्यं मदुःखैर्वाधितां

...स्त्रीयासर्वप्रियंवन्नेत्यसु क्षीयाका

त्वंललनः॥ स्त्रियायांसससंपत्तिकीर्तिधर्मसुखवान्यपि॥ रूपवान्मन्त्रितया महत्वं किं हनूमस्त्वंललनः॥ मनुष्यमातृसंहितया वंशवृक्षमातृवत्स
॥ पितृप्रवादात्तिले इत्यौ निधन मिहृयास्वामि॥ ज्ञनक्षिहाय वाजन्तुगत्वा स्वयाश्च मातृधन॥ स वंशस्त्वहिं कत्वा दुःखायधस्त्वं नमः॥ [illegible] निगहा
पंश्च त्वा सहृभस्त्रांस्सदर्शनां॥ तत्र्यौ निहानन्तकान्तामासमध्यश्वन्न वमत्रवीमृ॥ त्वां विनाहं न गच्छामि स्वपत्नकः सुदर्शनायादि धर्मस्त्रिकावांश्वमा
त्मानु विश्व अत्या मदिव्या विना धर्मः॥ साधयितुं ब्रमं वचनः॥ नमस्यासिच्च नधर्मी स हृद्गी सत्वसा धनों॥ न हि नाहं त्वया नक्षामहि घ्यास्वकुल
[illegible] तुं न समिश्चामि यमा धर्मं न हि छाम॥ हससनु मांसमालाख निन्दन्तु सर्वे पो विकाः॥ कथा याहं न गच्छयं त्वया विना कथं वन॥ [illegible] स
पनिहाय यदि धर्म किमनर्थ विना हितमा त्वास्वबाधस्वकुल बंगं वनावहं॥ एवं वञ्चौस दा लड्वधर्मी कीर्तिस्त्वा निद्रि॥ निवृत्य कं [illegible] सा
सपितृवृत्तीरहां॥ [illegible] मिमञ्जदिकं [illegible] त्वासदर्शनाप्रवाधिमा॥ जनाति नन्दिमास्वान्माकृतं नमवमत्रवीमृ॥ यमवामि दुर्योस साईमहिषा

ऽनुव्रतं वानरहित्वी गमनमुद्दिश्य गतः सत्प्राववव्रतं ॥ अहं तु न त्वया सार्द्धं व्रतं च विमुक्तस्त हतो कुमति न वांच्छामि गन्तु स्वपूरद्रुतं ॥ एवं गताषि गं
त्वा सत्कृतं नृपिनाभ्ययः ॥ समीक्ष्य मामनाथकां ता यत्यामि व मत्तावमं ॥ यदि स्नेहतां नयामि त्वं मयि न वियम न वा ॥ वंचयित्वा त्वां न यिष्यामि किं कुर्यी
पि मामममा ॥ श्रुतिमनवृषाप्राकं निभम्य सा सुदर्शना ॥ मं प्र षवि तिस्त्रा स्वपश्च न्त्रीवमला षता ॥ यद्यहं व स्वपनाथी लेया वाह्य पिद्रमीमराज
तं ना स्वामा स्मानं त्यक्त्वा यायां यमालयं ॥ श्रुतिमयानृषाप्राकं श्रेत्वा कृत्वाशिरि मं किमतः ॥ मां वाषा नलसंगता पश्चन्नेवमृवाव च ॥ यदि यावा
मात्मानं हत्वा यायाः यमालयं ॥ याम स्त्वां पापिनी दृष्ट्वा नव केवक्षि पद्भृत्या ॥ नव कश्चपि सर्वषु रष्ठत्वा तिनिविविधान्यपि ॥ दिवा निर्मं प्रकुं मानाया
रुवं स सत्र मः ॥ एवं स त्वप विहाय लंड्र सो स्वांस्यदि स्त सि ॥ कुलव्रतं मया सार्द्धं स्थित्वा या याम्प्रमवच ॥ एमत्तु नृपानुता वन नेवयास्यन्ति मूर्त
स नगा व व संज्ञा मास्त्वान्प वस दान्नृपाः ॥ एवं स दास्त्वेनेव प्रचव [illegible]

न्यद भुञ्जीयास्या सस्तु या लयं॥ तत्र दिव्यामनं भुञ्जास मदेवी गन्धैः सत्वा॥ वमनि स सस्या वान्यव भुञ्जानि ष्ठ स्तदा र वं॥ न्नवं मत्वा स दाल द्रसो
ताकुं यदीय रक्षि॥ याक्षश्री सस्व संप्रविनि भुञ्जीकुलत्र गं च व॥ प्रवं मत्स मपादि ष्टं निमय सो सदर्शना॥ वृक्षमानाप्यनी यन्नी रुद्ध सपाव मत्र वी गं॥ न
विमन वस्त्रां हिड्र मपिन वांद्दक्षि लं विनयं रूयाकानं सस त्वा पिग्रसिमं सदा॥ नृत्य हं न त्वया सार्द्धं त्र गं व वि भुमत्स ह॥ मेघ रूख पनाहि
मेक्ष्मानाप्याश्रमं व न॥ खिलार्थी याप्य निर्द्धं त्यास हन मिनुमि रक्षि॥ सकिं काम सत्वं भुञ्जा ह्न नामि व स विप्र हं॥ मप्यिस्त हानू यागत्वं मा कृत्य स्व
मत्सूक्षी॥ दवादर्हं त्वया सार्द्धं व मिनुं न समत्स हवा निशूर्द्धं स्वालस्य स्थित्वा प्रमदा हिर्यैथ्य स्व॥ या॥ महानन्द समान्वकः संबंनि त्वा सत्वं य म॥ प्रवं
रकमावर्क्षि सकुलप्रनि बाधि मः॥ सत्य सदर्शनां नाथों गोपभ्यन्त्र वमब्रवीत्॥ यदि त्वापि मया सार्द्धं स मागन्तुं न वांरक्षि॥ सखी हिः सार्द्धं मा
स्थानं यं पूनाममब्रज॥ यदि नाप्या सिम वा अत्र रूः हत्वा पिमया सह॥ स्तिहानू याग संव का संव व स्वकुलत्र गं॥ अरुहं म वव नभोहि त्वा स महिनः
देनाभेत्यः कुल स्व वं स समत्य र्थी स द न॥ मिनुमत्स हवा गिद हत्वं मया सार्द्धं समत्य यीकुलाधि यं॥ सदा हार्वं यथा कामं भुञ्जा सत्वं समाचर॥ नृ

ष्टैव सावधार्हिद्रं महानन्दसूरवं तवकृ॥ स्यावक्षीवं सरवमुक्ता संप्राप्यावः सुपालयं॥ गत्रा प्याबा समस्त्य यिकूलमानं मृदासदा॥ शुक्लाम्लगंसनैः सा
र्द्धं संवं विषावदसूरवं॥ यद्यपित्वं मया सार्द्धं संव मिमृनं वांछसि॥ ॐ देवा हंस माश्रित्य कूलद्रगं वव यदि॥ अथ माया मयं सर्वं त्वक्षा गखा
वनाश्रम॥ स्त्रि स्वा कूलश्वरं धमत्वान्व व याहं गं पात्रगं॥ अगमसूश्च नतावन कूलश्वर प्रसादगं॥ पवनं त्वां समीरास्यां लक्ष धर्मान्वावि
द्यानृ वं न तसमूपादिदूं निश्चमध्यसास दर्शनार रक्षीव नं महासत्त्वं पश्चन्त्यवमूपा स्थ्यनु॥ गोस्मिन्नवस वनग्र सूदर्शना प्रियास त्वीयत्रकाग
ताम्मिताव वें समीक्षता वृपासनकृ॥ कां सर्वी समूपाया ता समीक्षता सूदर्शना॥ लक्षा हिन्न मत्वा मोनीरता निशालय व्रजगृ॥ नग्रसासद
साधित्य मर्या सन मत्था मूर्खा॥ अं कूर्म निगर्लोवं सत्त्वा गस्ते विषादिना॥ अत्र वं मया समाश्रित्य निषीदति मत्वा मूर्खी॥ वितिन्न वदनां
लीक्ष्मा वयस्था समत्र वीनृ॥ अपि तद्र किं भवत्वं भिक्षु सत्र विषादिना॥ किं गता गं महदूःखं गत्सभा स्वा हितिम पूर्वः॥ अत्र वं सरवा मया कें

पिनददमिः सुदर्शना॥ किञ्चिद् दय्य वदन्ने वनस्थोसं माहिता वसा॥ स कृत्वा पि नर्गा गत्वा, सहसा नगर निष्काल यथा॥ स तत्र सुदर्शनाम व, गत्स्थो निश्चलि
ग श्रिय॥ गग दान्य कृत्रियाः सफत्रा मितीम निकान पा॥ श्रू मि थि हिः समास्यां गं, श्रू कृ वू य य मादया मू॥ सुदर्शनाम ही न्द्रस्य, मद्रकस्यो स्त्रसू
रगा कृ मंथ मिन्त्पं हित्वा पि कुर्ग्हि मृपा प्रिता॥ श्रूमि विह्वा यग सफ कृत्रिया स्यां सुदर्शनां॥ श्रु हितेनाः समाहर्तुं सर्वे पि सम ही छि, वा॥ नक्षे
मपा हिः सर्वे मिडकं गं नयाधि पं॥ सुदर्शनां सफोकानां स्व स्वरूप न प्रार्थयमू॥ न दूतैः प्रार्थितं श्रुत्वा, मद्रकः समहीपतिः॥ इमानां पूर्व नस्कथां स
र्वेषाम वमद्वीनू॥ कृ म स्यन्न पम हीयां सुदर्शना प्रियासमि॥ कथमन्यस्य रूपस्य दातुं मया पि मक्षम॥ श्रूमि म नादि मं श्रुत्वा इमाः सर्वे पि न तथ
स्वस्व प्रताः प्रयाग त्वा सर्वे ममन्ना व दयम॥ ममा रूगे स्कथा प्राकं श्रुत्वा सर्वे पि कृत्रियाः॥ सुदर्शना तु बा न का॥ स्रु रू ल मि ग मानसा प ग न स्कथां म ही
पानां रू मितिनाम रूपमिः॥ वलवान्वीर्य कोवां म रू कन्त्र वं व्याधि नयमू॥ सुदर्शना कुसा न का, मातु ग दस माप्रि मा वस्त ना पि मस्या रूपन्न मिथ्या मन्यास

स तत्कृतिं निश्चित्य सैन्यकान् धर्मनिः स महीपतिः ॥ तत्फलि क्षेमे महीपालः सहसैन्यसमन्वितः ॥ भास्करस्य महोद्यानुस्य कन्यकुब्जपथा निष्क्रम्य ततो वनं समाक्रम्य
महात्मा हे: समाश्रय तु ॥ मानस्वीनृ या कुमार्या तां कृत्रियान्सफमदकोमान् पतिः स्तूयमानो वह्नाम स्थौ पल्लाद्विनभागत्र सम प्रकोनाजानान्सर्वान्वलिनान्
पान्तु मम हावीर्य महात्मा हात्विज्ञाय वं व्यविंनाय यतु ॥ जन्मीमसर्वं न पावीया कृत्रियाअूतिमानिकाः ॥ कथमनान्यवाजतु म हम कातिमकृत्या तु ॥ नूनमस्त मः
हीपाला निर्जित्य मां स्वदर्शनां तमाहतु मिहायाताः सर्वसैन्यास्तन्विमाः ॥ कथम कावलनेवैमान्निर्जितुम हिमकृत्यां ॥ नूनमदं विनष्टः स्यां किमुपायं क
रि ... ग ॥ प्रनांस्वदर्शनां पुत्रीं यस्य कस्यापि दास्यम वानूनामन्यनृपाः सर्वे सर्वेपि स्यर्ममद्विषम गद प्रकिंकरिष्यामि यन मम मंगलं लवत्मा हा मया किं क
रोम्यवर्तनयं धर्मनिः स्तूना ॥ स्यघ वान पमहिर्तुः कमस्य मन हीहितु ॥ नस्यादो द्रविपालि मेकू मस्यापि प्रलावकनः ॥ यदियं धर्मनिः हित्वा कृत्यं पतिं नृप अवते
स्वयमिदनूजायो ना मा तु: ... ग्राहिता ॥ ग्रम ... ना पि दंदः स्वप्रज्ञानं मम हृदयं ॥ कीर्तयान्नृपतिः साधु कृपाल्याप्रातु मात्र उत्तमं मदसंकं महतवीनं कृत्यं स
वं नृपगर्वनं ॥ वावयित्वा प्रयत्नेन प्रार्थय यं महावलं ॥ नृतिमं विस्वरपाला मप्रकस्म हृत्याकूलेः ॥ स्वदर्शनालयं गत्वा नृपापत्यं नृपासनं ... गत्र स्वसं

मृत्वं दृष्ट्वा निर्वीक्ष्य तां सुदर्शनां ॥ कापाप्तिर्वा पितस्त्वान्या नृपवंशपरीक्षणं ॥ क्रूरयन्त्र समेत साध्वि प्राणिं स्यक्षाय दागता ॥ त्वन्निमित्तमया त्यन्नमीदृग्विवन्म
तारूपं ॥ तदा तस्मात्मया हत्वा कुलधर्मो विसर्जितो ॥ कृत्वा संसप्तरत्वंगुणानि दासस्य कामहीसुजां ॥ एवं पित्रा नृपादिष्टं निशम्य सा सुदर्शना ॥ विलिन्नहृदः
यामास दुःखात्मा संसतास्त सनत्तु ॥ तत्र माकुः पदद्का प्रस्त्वा सा सुदर्शना ॥ पूर्वतः समुपाश्रित्य नृपदत्त्वं वमलापकं ॥ मातः पिता हि नूपत्रात्मा सप्तरत्वंगुणानि मम
तं कृत्वा इस्तनं पत्यापि सप्तस्या दानुमिच्छति ॥ तन्मामाश्रित्यौंस मादाय संस्कृत्या पियथाविधि ॥ उद्यानं दत्तमलंगुरुं प्रलुकाम वयापय ॥ न इत्थं पाविसमाया
य कन्यिका नं तं व पाप्य कं ॥ वृद्धं स दासिसंपाल्यस्संवर्द्धयिष्यन्तुमर्हसि ॥ ततः कन्यिकानां स्वकः समहिवर्द्धिनः प्रवृद्धो [illegible] मपुष्यारेः पूर्वोः संसोलिता
रुवनं ॥ तत्रुपं नृविनं कानां स्रवक्षः नं मनानमं ॥ स मीक्ष्य मामनन्स्य त्वा सर्व [illegible] त्वमाप्स्यथ ॥ छत्रिसनादिगं पूत्वा जननी सा विषादिता ॥ पुत्री विद्यागहू
त्वालीनं दन्तावं मलापकं ॥ हा दैव किं मया पापं प्रकृतं यत्स मात्मजां ॥ पिनापि निर्दयाना ज्ञास्यं हन्यादिहा प्रनः श [illegible] मि विना निसंतप्ता ॥ कथं मि ५५य

णाद्भिर्मार्गान दर्शं स्वयमात्मानं दित्वाय मालयं ब्रज ॥ अथ ङ्गिनिश्चित्य तामाता खात्म ज्ञानां सुदर्शनानां ॥ निःश्वस्यात्यन्तं परम्पकीन स्त्री संक्लिष्टमानस्या ॥ मानवं:

णां विषादार्त्तीं समीक्ष्य सा सुदर्शना ॥ नत्वा खात्मजानाश्रित्य मनसैवं व्यचिन्तयत् ॥ मम दैवानुभावेन तत्कौतुकं न हि हा गतः ॥ नदस्तंस मामन्त्र्य प्रार्थयस्व

महाव्रतं ॥ नन्नमस्व महासत्वा महावीर्यपराक्रमी ॥ अत्र कार्यं मात्र पालसर्वाध्निर्ज्ञकुमपि न कृत्या तु ॥ अङ्गनिसं चिन्त्य सा वामा सुदर्शनाकुसंपदि ॥ स्वालय

समनपामन्त्र्य संप्रार्थितुं समेत्य नयानदात्मत्र समायामं समीक्ष्य मंकुजे मू दाता सादनं सम्पापामंत्र्य सं पश्यन्नेवमब्रवीत् ॥ यांजन्यचित्तिर्मं वांछ्य मयाम्त दस

भवामंनेमसं प्रार्थनां कृत्वा जनक महिनन्दयत्र यत्सफल प्रियात्मिका मामकं जनकं नयं ॥ मामा दानुवल्लनापि सर्व पीहससमागता: ॥ नमां सफलच्छे:

कृत्वायं जननान्मसूपा ससफास्यः स्वगुमकोकं नृपस्यादात् कुमित्र ॥ भिायदि स्त्रीसानवागस्ति दयावविद्यनमपि ॥ कस्त्वं मां जानकं नाम मपि संत्रानुमर्द

एवं मत्प्रार्थितं श्रुत्वा सन्तपन्तुः कृत्स्नमुदा पश्यन्सुदर्शनां तां यीविदसन्नेवमब्रवीत् ॥ जूर्वा किं मायननमन्त्र स यि स्त्रीसानूनावागता ॥ त्वां संप्रश्चमित

यापि दित्वा नाम्ना मयि स्वयं॥ स्त्रा त्वापि मामि हृतयाः कं डश्रू मपि नवांप्र मि॥ ङ्कृय त्का लं ग मं मेत्र त्वहं गमस मि द्व मः॥ व र्हिम व न मङ्गु त्वाप्रव यामिः
समनुसकः॥ इदानीं किं कवि ष्यामि मस्हृ्य स्कृ यस्ति मः॥ यत्न मात्र ससत्यान वलसेन्य गहा पिन॥ एक प्रमीं नपान्त मी कथं ङगुं प्रअकृ या॥ यया पि
मरेति निं प्रास त्का नं द्वमं त्वयात्तदा॥ मदिदानीम मि त्र्य या प्रार्थने वं कृत्ता कथं॥ ययि त्वमस मान्य कासवां कर्तुं समिन्द्र स्थि॥ मदात्वया यथा प्राक् कृं नथ
कर्तुं समर्थ स्त्वा॥ निर्य पत्रः स्वजीव पि या म्ना ह्या प्यपि नि स्पृ स्॥ कृ त्रिया स्तवि पूजि त्वा ह्यय श्रियं समा प्नुयां॥ यज्ञ वस्त्रं त्वा विना त्वां व सव निः सर्व कालव॥
कार्यं वदहि यो स्थितं॥ तस्मा द्धर्मः प्रयत्नेन साधनीयः स्त्वार्थिभिः॥ धर्म ते व स पाई है य मः श्री स्त्वा न्यपि॥ समा साद्य नन्पाला का न्तं पाल्य सकृ मिं ब्रजे
[illegible]
रत्ने वं कृ त्वं त म स मब्र वीमू॥ यच्च त्रकृ अ नं मखा मि न्यथ संप्रा र्थितं म यया॥ तदा यथा त्वया दिष्टं तथा सर्वं क मीम्य हं॥ एवं त स्या षितं श्रुत्वा मा ना स्व च्छ मि

विस्मिता। सहस्रा परस्परा परन्परस्पराच्छे संस्पृष्ट माद्रिमो वानाय वमाद्रिमो वीक्ष्य जननी सा निविस्मिता। आत्मजां मां समीक्ष्य नीप प्रष्टुं वं समादवान्॥ किमनन कु
रूप सह संलप सखे नाय दस्य दर्शनं चापि अनुगुणां वनस्य सिग्ध दं नीमिं कृत्य पस्मि न्विस्यन्द इति माग्रया। सस्ने हात्मन संचकं मनस्क लवमं कथं
कं कि माग्रा हि संपृष्ट निभम्य सा सुदर्शनावन ॥ जननी मां समीक्ष्य नी सा अञ्जलिं च वमब्रवीत्॥ मातर्मे विवदस्वात्र न जानी षं कं मं रवल्प्या सो या क्षमस्ती
त्रुस्य कु लम यमात्मजः सकः॥ कं क्वा कान्त पगमस्य पश्च पुत्र भ नाति हि याम वा म वा म हा वाजः सर्व्व धर्म्मा धिपा न पः। म हा स त्वा म हा प्राज्ञः सर्व्व विद्या
वित्र सम य शुद्ध शीलः समाचारः सर्व्व सत्त्व हितार्थ त नृपसस्वधर्म्मानु संचक्रा लुडश्री स कुम्भ ग्रयः। म हा वीर्य सुधी वीरः सर्व्व दुष्टा धिमर्द्दकः। प्रगत्भ
रूपं मस्या ख्याति विख्यात त्वभिमंतं एवं। कृ मं या मा हृदयं मा कः संभादन स्व सादन्नं। नूनम काप्ययं वीरः स फ मानु रु प्रियान पि॥ निर्द्दिस्य खवलनाम्नास्वी
को हं प्रम कृ या नु। कं भि पुत्री स मा ख्या मं कृत्वा मा मा प्रमोदिता॥ विस्मया पन्न [illegible] विरुदं सख्य कि मिस्य विनय यत्॥ ततः सा जननी हृयः स मीक्ष्य मां ४

सुदर्शनां गत्वा तं च समालोक्य प्रवलोपवमादयामास । नूनमयं कृत्वा नाशं हि कौमारं ममयदि वा सत्येनापि समाख्याहि मान्यथात्र वदा स्म गतायदर्शनं पि
श्रुत्वा लज्जायमानोऽत्र लोपमनुखयाः । तथा सर्वं प्रलपितं श्रुत्वा दर्शनया मिपतिं मत्वा । कृ मि मा रहस समाख्यानं निर्गम्य गतात् दर्शनाः । मामनवं तां समीपे । नौ सा अथ लियव्य
मब्रवीत् । सत्यमेव मया नेव यन्मया स्यं पतिः किल । अत्यिनृपमनवं तं मत्सर्वं पुत्रा निवेदय । कृत्वाऽस्य ज्ञाः समाख्यातं गत्वा मामा नाप्रसादिता । प्रसन्नम
स्वाम्यज्ञा प्रतीतार्थं पुत्रोऽब्रवीत् । समीक्ष्य मामनुपात्यामतो मद्रकः सन्नृपः पतिः । प्रसादवं सम्प्राप्तं सपत्नीन्वमादिमम् । अथ पितरं प्रसन्नायाः किमर्थं
खमिहागतामत्तुरा मम समाख्याहि यदहि वोधि मंगव । कृ मि हक्रीन वन्द्रसेन समादिष्टं निर्गम्य सा । सर्वं समाख्यामहिषी तन्मुने । तस्यापादावुपाश्रयन्नाम ननः
सामहिषीन्वाह । यत प्रसन्नमूर्ति वा मृदा । हृक्कीननं महीपालं सम्पत्न्या व मब्रवीत् । स्वामिन्निश्चयो ह्ययज्ञाता कृतः सुदर्शना पतिः । खयमिह समाख्याता मया
विहायमनुनां । कृ गिरा तं सा समाख्यानं निर्गम्य सन्नृपः पतिः । नाम महिषीं प्रसन्नां सम्पत्न्यां अन्वमब्रवीत् । अयि किमेवमाख्यातं त्वया मम पूर्वमामनुनायं
आज्ञा समकृत्सख्यो कित्व्यापि विहाय मनुनां । कृ गिरा त्वयामुदाप्राकं । किमन्याललसिसं प्रमत्तायत्कृत्वा सा सौमहिन्द्रोत्र कथमकः समागमः । कृत्र सा नृपति विह

२ कृपटिना

किमगवनमकेथं॥ ॥ ह्रत्वं समयामन्त्र। दर्शनीयत्वं पूजा ममवा॥ नवं हलीनयचन्द्रनेस मादिष्टं निभमय सा॥ मद्विषीनं पमिंहवं संपर्श्यं स्थवमन्त्रवीनू॥ स्वामिन्यस्मै
सूर्यो विहः सूपकाया महानस॥ सोनर्स राजनं पक्व सक्तुम पिनपिना श्विय श्राय श्वापाकः पूर्वसाईं कन्याहि: क्रीडितमभूदा॥ सत्रव हि कूलम नाजीहामा
गाहायमांप्रली॥ ॥ मितायीदिनं कृत्वा मट्कामवनायकः॥ विहितं न कृपया हीन स्नेहकं विमाहितः घननाश्रेयीसमा साश्र विस्मया पन्नमानसः॥ याणीः
वसं सनन ध्या त्वामनसे वंध्या विकर्य ना॥ हामया किं कृतं पापं स्यदी हन्द्रूहगम कृतिः॥ जामा मालत्यमं ६ हेपम वाज्यायंनवा घमम॥ नूनम घमहा सत्वाम
हावीया विवकृतः॥ हार्यासदर्शनानां हन्तु वलनापी हप्रागतः॥ नूनमीघा विनूपां गं पमिम नं सदर्शनानां॥ निवीक्ष्य निस्व हा नकाहित्वे हस्वयमागमा॥
मे हर्णाः कूमसंनकष्ठकृश्यं स्वयमागमश्यानूनं सदर्शनामी घान्कृयी छिह ० नामिह॥ कूजाहं किं कनिष्या मिमहा स्यानं लवदर्थि॥ धिगनां प्रमसांम
नर्थ यछनीमन वछिपह॥ नदग्राहं कृतौ मस्यास्य याचं विनाय्य यहनः॥ संवाध्य ननन्स्य विछि लं कुर्यामहि प्रसादिनं॥ ॥ मिसं विन्यहृपाला मद्र
कः हनिजाल यवां गं कूनं समयामन्त्र सा॥ अलिय व मन्त्र वीनू॥ रुमत्वाम पवा घत्वं प्रसीदमा कृथानूषं॥ यदहं त्वां नजानामि जामा मवं न पंप्रला॥ ॥ हनि

संप्राप्यितं जनं ध्वगुवस निमग्नस्यसः ।। कृत्स्नं हि संप्रसन्नात्मा सम्पश्यन्नेवमब्रवीत् ।। मेवमादिशन्महमीन्द्र स्वेममानानपाछिपय ।। सदा मन नेत्रहो हि त्वात
शनं कर्तुमत्स्तद ।। कृ ति मत्स्याविगं श्रुत्वा मडकः ध्वगुवाम् तदा ।। तं कृत्स्नं प्रसन्नात्मा स्यसम्पश्यन्नेवमादिशत् ।। मावदत्र शुलाम्कालिः स्नानं कृत्वा सत्यं वि
जि ।। शुद्धवस्त्रा वमादवकृत्स्ने अमायपा ।। अगमनं समर्वेय ।। तथा लाज्यं मया सार्द्धं शुद्धालं कारवस्त्रापितां ।। समहितं समहा पात्रसंचवनस्वसदा मन्दा ।। कृ ति
पित्रा समादिष्टं निशम्य सकृन्नामदा ।। नम्रशिरनत उत्थाय स्वानगृहे समावनत्य ।। तत्र सगत्वि गोलनवस्त्रै नपि समां चिति ।। सर्वकार्ये समस्तागधस्नानं वस्त्र
शुलाम्बु लिः ।। तमनस्वीनां शुकल्पा इ प्रावतः शुद्धमानसः ।। ध्वस्त्वा कृत्स्नं ध्वनं स्म त्वा समानर्वेयथा विधि ।। ध्वगुवर ततः पित्रा सहास्त सहप्रमादितः ।।
तोनस्यं विविधस्ताग्धं प्रवस्त्र्यथप्सितं ।। तमनस्वीनां शुकोमार्य शुद्धाम्बर समावृतः ।। सर्वालंकृत हो: शुद्धेः सर्वां मत्स्यमनुष्यन् ।। ततः सद्रकाचा
शा आसा ग्रामं तनसिद्धिया ।। सार्द्धं दर्शन शालायां मदा सन समाश्रयत् ।। तत्र तदा समागत्य गंधर्वा विकेः ससांघिकः ।। संगीती गीतिवादनेव म्यथ मदा
सहमवानयतान्नत्स संगीतिसंगायं श्रुत्वा दृष्टा हि नन्दितां ।। नृपतिप्रमुखाः सर्वलोकाम्मृहि प्रसादित ।। तदा गर्वां मद्दीपानां सफानामपि

१४ विद्विषां॥ सैन्यबलं महत्कामम महामध्यमूर्धा वनतनू॥ मन्मसात्कामं निर्घोषं श्रुत्वा क्रुद्धा॥ अपि वि स्मितः॥ भगवन्तं महीपालं पप्रच्छ वै विलोकयन्तु॥ क
स्यायं बलसैन्यानां महात्मा हे महानवः॥ कुतस्त्वागमः कोहितवमाइ र्मीमि विपू॥ कुमितस्त्वष्ट्रा आलोकामडकः भवस्त्राना न यः॥ जामानतं कूर्मं विह्ल
समप्यमयन्नेव मद्रवीनृपलाजामानवखंमध्यः सफानामपिरूतुङ्गां॥ सबलसैन्यं सघानां महात्कामसमृद्धिमतः॥ यच्छित्वा त्वामिहायाता सदर्शनाप्रसादि
तानानमी क्षेमेन पाः सफसूदर्शनार्थमागताः॥ अतः सफनृपाजित्वा मां च हर्तुं सुदर्शनां॥ पवित्र वक्ष्याहि मित्र क्षत्रबलसैन्येश्विमं पूर्वं॥ अर्थां सैन्यगहा
त्ताना मूल्कोकामं महानवः॥ समृद्धिमत्कृत्वा याम अतः पगच्छाहि मन्यतां॥ कृत्वादि वृन्दं नरेन्द्रसंघ्य युबं निम्नमध्यसः॥ कुमतः कृतिय उत्थाय सम्यग्भवत्वं
व अब्रवीनृप॥ मा हीनं क्रम महीपाल॥ यत्तद्धं तयनासि कः॥ नद्विषां दंपवित्र यक्ष सं मि धु वयथास त्वं॥ यथेमक्रुत्रियाः सफसर्वे निमनलोहितः॥ नाम॥ राज्यपूः॥ भ
सनंधत्वा कर्यामप्य हन्तथा खलु॥ नूनं ममान्नपानं सफलितं क्रियाहमिहाननयः॥ नदेवाननपि सर्वा हत्वं वशीकृत्वा हि पालय॥ अगपि कृत्रियाः सर्वे सदा म
मपहितामः॥ मूदान् भासनंधत्वा राज्यपूःस्तात्काय यथा॥ नदर्वतोप्यदमाक्रम्य सर्वा धीन्स्मानृकृत्रियान पि॥ निर्जनुमत्त हन्ताच्छमदनहांप्रदहिम ४

नगः ॥ विकसिता भासा [illegible] सर्वविमानविर्जिता [illegible] उपवासं [illegible] पुनपक्ष [illegible] लाभ्रता कृति

ङ्किसंप्रार्थितं मनमहावीर्यान्तां विना ॥ ग्रामाग्रामस्वभुवः प्रत्वा प्रत्यानन्दप्रबोधितः ॥ न मानन्हांस मासाद्य स्वभवस्यकृत्स्नमुदा ॥ धनूवीहीक्वयाणं

त्वमत्वा संप्रहृष्टमस्तकः ॥ जनः सत्क्रियावीनः समानुष्कगज्ञापितं ॥ पुनश्चाव समभ्यात्य महात्मा हेमदासव गुर्वीं जगन्नृसत्तन्स्वंगत्वा सर्वीन्स्फारप

न्नु ॥ समीक्ष्य समपाहत्य हृस्व स्थन्नवमब्रवीत् ॥ कुश्मदं सत्क्रियाप्यस्यस्वष्मा स्थिर्वीह्व मागतः ॥ नदायान मयासार्द्धं याद्धं यदीहमङ्कृथ ॥ यस्त्र कीयं क्र

क्रियाः सर्वं जित्वा मम स्वभुवं नपं ॥ सद्धर्मं नो वलनापि प्रादाद् गुमिहप्रागताः ॥ यदिमङ्कूथ मां कतुंयं यं तर्वं वले सह ॥ याङ्कूमि हतसमायाम ः मयासार्द्धं न

याधमाः ॥ जित्वा मां सर्वथा पृष्ठं गृहीत्वा मम सद्धर्मं नो ॥ धर्मकीर्तिस्त्वापन्नाः प्रवरवर्थ्यं प्रमादिना ॥ यदिन हतसमायाताः यूयं याद्धं मयासह ॥ संमिश्र

वंसमाक्षयः याद्धं महं समासव ॥ न न मदं पराक्रम्य जित्वावः क्रियान पि ॥ धर्मकीर्तिमहात्सा दृसमापन्नः सदावन ॥ एवं गनमहीन्द्र सक्षहानां

त्वादृवादिना ॥ महात्सा न समभ्याषं प्रमृकं संप्रसादितं ॥ तत्र निर्घोषं समाकर्ण्य सर्वमङ्कृत्रियाश्रपि ॥ मत्यवा ॥ जयसंत्रस्ता स्तस्ततः कितमानर्स

॥ नान्सर्वान्स्फ्रि मान्वी क्ष्म सकृत्स्नाभिसमस्त सहः ॥ गजान्नरासिमस्त्वामपनदहि मस्त्वमा सवनतः ॥ ममवं संमत्वा यामर्: वीक्ष्य कृभंन पार्थिवं ॥ मत्वा सं

[illegible] जित्वा धनमी [illegible]

न्यापराधः सर्वपापविशोधनं विविधं ॥ गत्वेन्द्रसांधिकान्सर्वान्न्यवापिमान्समीक्ष्य सः ॥ सर्वपिकृत्रियाहीना, मनसेवं व्यचिन्तयत् ॥ नूनमेष कृत्स्नवीर्याम
तासत्वातिवीर्यवान् ॥ अस्माभिः कृत्रियैः सर्वैर्न पिजितुं न शक्यते ॥ तदेवमेव महासत्वा, महावीर्यः पराक्रमी ॥ अस्मान्सर्वान्विनिर्जित्य, जयलक्ष्मीम
माप्स्यामृ ॥ इति निश्चित्य ते सर्वे सर्वपिकृत्रियान्नृपाः ॥ हीनास्तत्सैन्यमाश्राय पिशाचवशगाः कुमीश्चिव ॥ ततः सर्वे विनिःसृत्य गर्वं हित्वा समानताः ॥ आनं
कृत्स्नसमपाश्याशं समीक्ष्याहि प्रसमिन ॥ नान्सर्वान्नमतावीक्ष्य कृत्स्ना राजाहिनंदितः ॥ सम्यग्धर्मसमूपामन्त्र्य समाभाष्यैवमब्रवीत् ॥ माविहीन लक्ष्मी
सद्यदि लक्ष्मीं समीहथ ॥ मन्नेहं समूपाश्रत्य नमत मद्दर्शनं नृपं ॥ सदा मत्समहिपस्य मन्त्रहा समूपाश्रिता ॥ धर्मानुभासनं धृत्वा, संवत्सरं सदाहरवं ॥
एवं वदतः सदा तद्धनिवृत्याशं समेन तत्नः ॥ सद्धर्मसाधनात्साहं समावश्यत्निवं नवं ॥ एवं तत्समुपादिष्टं श्रुत्वा सर्वेपि ते नृपाः ॥ मदमानं समुत्सृज्य तं
समीक्ष्यैवमब्रुवन् ॥ जयनाथ महासत्वा धर्मश्रीसङ्गुणाधिप ॥ स्ववशान्नायथादिष्टं तथा समावरमहि ॥ एवं तैः कृत्रियैः सर्वैः समाख्यातं निशम्य
सः ॥ कृत्स्नानिसं प्रसंनास्यः संपश्यन्नेवमब्रवीत् ॥ यद्येवं दिशत धनालुस्तस्मायातं मया सह ॥ महासत्वा इति प्रत्त प्रत्य पश्यन्तु गं नवाधिपं ॥ इत्यादिशत् ५८

सर्वाचन्द्रस्कान्सर्वान्नृकृत्रियान्नृपान्॥समामन्त्र्य पूनवस्य महात्मा हे: पूनव यनृ॥नत्र मकृत्रियाः सर्वं समीकृत्य: समन्तान: पोव लोके: प्रसन्नास्ते:
प्रक्षमाना: समासनमृ॥मान्सर्वान्स्मनपायामान् समीक्ष समद्वीपभि:॥मण्डके: सप्रसन्नास्यज्ञायामनि मृदावदनृ॥नकृत्वा मनन्याः सर्वं समनि नति
गामयाः॥समत्येमस्वरूपस्वपदम्वृग प्रब्रह्मिव यानम कृत्रियाः सर्वं स्वस्वमङ्गिरुना विमा:॥नारमि स्वसमाग्निरुप मस्तु: स्वस्वसलासन॥नननः स
कृमज्ञानत्यश्वमुवं मण्डकेन्नपं॥मनन्ने स्वासमनपाग्निस्वसम्यन्धन्नवेमत्र वीनृ॥दवमानममहानाऊ नव धर्मान्नृलावनः॥सर्वयीमनन्नपावीवाः नवहीत्रस
मारमा:॥मह्वान्नपनिन ग्रौं नान्संपञ्चधन्नैौ न्स्वात्मज्ञा निव॥संमानपन हिमानृकृत्वा: स्वस्वपूर्व हि प्रधय॥नूनममममहावीबा. नाज्ञान: कृत्रियामदा॥स
मानमनहिहि त्वा: हेऊयूर्वत्र मानसा:॥मदासर्वं सहीपालाल्कव धर्मान्नृलावनः॥मूदानृ॥सनंधत्वा संहेऊत्वन्प्रसादिमानृ॥मदनेस्थान्नपस्थापिसप्र
स्थु: सफकृन्यका:॥स्वात्मज्ञा मङ्गिमाकृत्वा: संप्रदत्व यथाविधि:॥ज्रवममान्नृपान्सफः ज्ञामालत्व पिनन्दनानृ कृत्वा विधाय सौवर्णं संक्षिसमनृ
वानयम॥मधुमपिनन्पा: सफज्ञामानवीनपाविधा:॥सदानृ॥सनंधत्वा सवांकुर्य्य — थात्मज्ञा:॥मदासर्वं पिहपाला हृमवीर्यान्नृलावनः॥सदाम

गचताहित्वातजयः श्रीजिनमानसाः ॥ तदा स वान्महाराजः सर्वनृपाधिपानयः ॥ सर्वधर्माधिपः शास्ता वज्रवत्नीलवदपि ॥ एवं तत्समुपादिष्टं श्रुत्वा
समडकानयः ॥ स त्वामिमिषयविहाय यथाकर्तुं समेत ॥ तदा तत्संख्या महीपस्य सुपात्यापि समडकः ॥ प्रत्येका स्वात्मगां कन्यां विधिना समयस्त्र. तया
एवं तां नपतीन्सर्वान्सत्कारैः प्रतिमानयत् ॥ त्यावेद्ध्यैः सनाजन्द्रः समहितनदिता न्यधात् ॥ ततस्तत्कृतियाः सर्वेन तस्मिन्नामहितं दिताः ॥ नं व्रतयुवे
सदा राजानत्वैवं प्रार्थयन्मुदा देवतान महीपालं कृतं त्वा नापवाधनां ॥ सदा तत्तवहृहित्वा तज्जमहीय यथा समज्ञाः ॥ तत्त्वां परिविहाय समहितन्वि
नीकृवान् ॥ स्वात्मज्ञानि वसं पालय समहितं कर्तुं महीपति ॥ एवं तत्प्रार्थितं श्रुत्वा सम्बद्धगुवानपां मुदा ॥ आमात्यमात्याज्ञापात्सर्वान्संपश्यन्नवमब्रवीत् ॥ प्रसी
दामि समीक्षात् सर्वथा त्वा इमि सन्मतीः ॥ तत्सत्य धर्मेन लोकान् संवदं तं सदा तत्त्वां ॥ गत्वा सर्वमहात्मानः स्वस्वराष्ट्रं समादिताः ॥ संपालय सकलान्
काश्चान नय धर्मं यथा हृत सर्वं ॥ त्र मद्धर्मी नरावन सर्वत्रवानिव नतं ॥ निवृत्या तं गुरुरात्माहं प्रवर्ते तत्सर्वदा ध्रुवं ॥ तथा प्रयात सर्वेपि स्वस्वराष्ट्रमाश्रिता
: ॥ कुलवयाविब्रतं धर्तात्मा संवदतं तदा सत्वं ॥ एवं तत्समुपादिष्टं श्रुत्वा सर्वेपि ते नृपाः ॥ प्रसन्नात्मा स्वस्वगुरुं तं स्वधर्मं कृत्ने वापि सुदर्शिनां ॥ स मन्त्रहां स

सांसाय समसमन्त्र समीक्ष्य व ॥ स्वस्वकार्यी समाप्य मन्त्रं मनागात्तुं मूढाववनू ॥ ननमस्त्रीः सफ कन्यास्य ज्ञानकं मामवं कुर्यां ॥ सुदर्शनांसमान त्वाममागातुं
मूढाववनू ॥ ननमसर्वविपिमन्तपाः स्वस्वकार्यी समन्विताः ॥ स्वस्वनथसमाद्यत्वामहात्मा हे स्कृनासवनू ॥ सर्वविपिमन्तपाः स्वस्वमन्त्रिसैन्यजनान्विताः
प्रनवनतीमहात्मा हेः स्वस्व मू ॥ यमूढाववनू ॥ ननमः क्रतांपि नाऽजेन्द्र सत्काय मानेन्द्र नन्दितः ॥ सर्वासि नार्थसंसिद्धः स्वपूनूगन्तुमर्च्छितिनाम
तनः सप्रसन्नो त्मा श्वमुनं मद्रकेनयं ॥ उपसत्यसाञ्जलिर्नत्वा संपश्यन्न वमब्रवीत् ॥ मामा हु स्वपूनगन्तुमहिवा श्वमिसांप्रतं ॥ मदनृक्षां प्रदत्वामः
वांश्चितार्थप्रपूनयच ॥ इति नत्वार्थितं श्रुत्वा मद्रकः श्वमुनीन्तपः ॥ नहीर्यगुनसंनक्ता ॥ ध्यात्वैवं सम विलम्पयन् ॥ नूनम घमहासत्वः स्वपूनसाम्प्रतं
गतः पुत्रासत्वात्मज्ञानाष्टि ॥ कोवायसक्ति पालयन् ॥ इति संज्ञामानयं विहृः सर्व्वविद्याविवक्षणं ॥ महासत्वं महावीर्यं कुर्यामि हननाधिपं ॥ इति नि
श्चित्यनाशास मद्रकः श्वमुनं पितः ॥ संज्ञामानवमामंत्र्य संपश्यन्न वमब्रवीत् ॥ नूपुत्रात्रमवाक्षं यदात्मज्ञानविश्रमत्वामत्र समिच्छामि कः
प्रजाधिपं नयं ॥ नदिहत्वं समाश्रित्य लोकोधर्म्मंश पालयन् ॥ कुलवर्य्यी त्रमेधत्वा संवस स्वसदा मुहु ॥ अहं वृद्धो गत्वा ज्ञाना [illegible] त्वज्ञाना

वना सुमबास्थित्वा तथा व्रजंत्युत्वा निर्वृतिं याकुमत्स्य ह ॥ अस्य गृत्स्य महासत्त्ववाक्यं प्रमसमाश्रितः ॥ कुलं चर्यां व्रजंध्येत्वा संवत्सरसहस्रं सदा ॥ त्र
न तस्म पादिसं गुत्वा कुलं महामतिः ॥ एवमुवं जनं महीपालं सम्यग्ध्यन्न्वमब्रवीत् ॥ मा मा ः त्रस्य यमागत्य विन कालं च वाम्यहं ॥ तत्र वाक्ष्य
पि पानासि ... मन स्त कुमार का ॥ गन्म सा ... ननी माना स्त दुःखा त्वा ह ताभया ॥ मित्त्व मागम मिष्टं ... मिष्ठ नूनं दिवानिशं ॥ गरुजन्या मूर्खं द्र
वि वां ... मि सांप्रमे ॥ मनाहं गन्तुमिच्छामि नदनन्हां प्र दहिम ॥ स्याव्य सं महाबाहु द्रष्टुं तवनमु त्वा स्वजं ॥ ननमिच्छ स मायास्य मत्प्रसीदन्तु मप्र
... गिन्तस्वार्थिकं गुत्वा महद्रकः ॥ एवमु वष्पिता ॥ कुमं ता मा गनं वीवं सं पन्थश्चैवमब्रवीत् ॥ यादि गन्तुं समिच्छसि स्वप्रयाहि तन याचि पा ॥ कुलचर्यां
... त्वा प्रवन मामनुस्मरन् ॥ एवं कुमा य ... दत्वानुज्ञां समद्रकः ॥ पिमां सर्वं ... पुत्री स मामन्त्र्यैवमब्रवीत् ॥ अपि पुत्र महासत्त्व स्ववंश कुलं कु
... पूना ॥ मातुः संदर्शनं कर्तुं स्ववाञ्छा गन्तुमिच्छसि ॥ मत्वा मयि सहानन ... समहि नन्दिता ॥ गत्वा कुलवृतं धृत्वा संवत्सरसहस्रं सदा ॥ यदनन

१२

कृ श्रीमन्गसर्वसंव क्रिमावयं॥ मदस्यमनवहाहि त्वालकधर्मान् वापि वी॥ कृमि पित्रासमाश्रि दिष्टं निशम्य सासुदर्शना॥ ऊनकंपमानमपसा ऊ
वदमवब्रवीसू॥ पिनसूनं यथा हष्टं तव गाहं समावब॥ प्रम तसत्युं तवान्मत्वासदाम सनुम हृमि॥ कृमि संप्राष्य सासाध्वी सुदर्शना सूदाससमा॥ पिमु
दाम्यगनत्वामाकुवनाः पूर्वब्रगम॥ मत्रनां मानवं वीक्ष गलद गश्रा विलाननां सुवि वं सामनेस्कनिय पान पूर्वा कुवि॥ समीक्ष निपापि नजीगां ख्या
सं कनी प्रियां॥ सहसा लिंग्य हस्तो त्यां समाश्वास्येवमब्रवीत्॥ स्प्ये पत्री समहिहव्यवैर्य मालंव्य पभमां॥ स्वयं मत्रवेया मं सर्वषां तव वाम्यि सो
सवधत्ना वेनीना वाह वम्नि सर्वदहिनां॥ मद्दिशामलं वः सर्वा वैवम्यं हिस्याय वसं सत्वं सदा॥ नृपमात्र मकिंहकुर्वि चकं नम ना वनी॥ सकु ल प्र
वसहमालदश्रीकीर्ति सोत्त्वात सू॥ य हृ की मवि वृ पापि सर्व वियाग तेदत्वं मलासत्वः सर्वा वीयामहावीर्या विवकृस॥ प्रनकीर्य गुलेना पि वयं
सर्वहिव क्रिमा॥ मदस्य मनवाहि त्वा धर्मान् वावि सो हव॥ कृमि मात्रासमा त्वा मं निशम्य सासुदर्शना॥ प्रवा विमासमत्हायम थागकुंसमेद कि॥
ननामा कु पदाम्बा ऊ प्रस त्वा सा सुदर्शना॥ हस्तियानं समारुह्य सखीजनान्विता वव सूनन: कुमः समारुह्य हस्तिनं धं सहस्र स्व:॥ सुदर्शना पूर्वा

कायमतास्याद्धर्मोदावनभूतानतः पूर्वाधिनी कूम्यमनोन्यज्ञनान्वितः॥ संपश्यन्सर्वमामार्गीत्वाकाभ्विनायप्रासयमू॥ एवं वबन्तूरस्मीन्द्रः
प्राकान्यस्य महीपर्भेतः॥ ऋषिस्थान महायान लिङ्ग्याँ न्यवसत्सुखेन तत्र वयूः समन्तस्य प्राग्तः स्वात्रंसयावन्नणमतामलस्वकायस्य प्रभितिस्वमय
न्यवभानं दन्हसिस्वकायस्य प्रतिविम्बं समीकृत्य कुशाग्राजापिदितत्वासामनसे वंचाविनयमू॥ धिगमत्मानं मरीचिवं वदीदृकृतिमात्रयं॥ किमन
नमरीचनन्त्रीवनापिप्रथ्याज्ञनं॥ मदहमकृत्वलगमहनिपाति त्वा स्वयंकनूं॥ मोपापाहर्षिं हित्वा गच्छामि मम नालयं॥ मितं लिङ्ग्य यं महत्वा स्वना
तः स्वयं दिवः॥ सहसा गत्र संप्रत्य पश्यन्नेवं वाविनयमू॥ त्रयष्वागताकृत्सीधीवः सर्वसत्त्वहितार्थकृत॥ वाधिसत्त्वा महाप्राज्ञः सर्वविद्याविदन्ध्रतः
प्रतिविम्बं स्वकायस्य मलीवीक्षाहितकृत्॥ स्वयमत्र गत्वा हि स्वाकायं मर्कतमरीचूमि॥ मदहमस्तेमहीन्द्राय लाहितमकोकावली॥ दिव्यस्ता
वीवसत्त्रीमन्नामलिय त्वाहितमहिता॥ दत्वा सत्त्वहितार्थ नवानथयं सदावध॥ मिसंस्थितस्य संपश्य स्वं कृत्वा भवमादिमत्॥ महीन्द्रे वं स्वमात्मानं सा
मात्राहिलक्ष्या॥ सद्धर्मसाधनं कार्यं सर्वप्रोथ्येतु म[illegible] हितिया॥ मागत्तानन्द्रमीन्द्रलाहितमर्किकावलिं॥ मत्वास्वाकालिनसत्त्रीमन्नामहि

वियाजितां ॥ ॐ मां जिनसिंसन्ध्य पुकायं समलिमगुय ॥ जिनप्रत्तो नूलायन । दिव्यानि सुन्दयान्वः ॥ यदपि पूर्वकं पापं संदर्शयिनु सिन्धुसि ॥ नादा
जिनसमादाय ॥ ध्यात्वा नामं शुकेव व ॥ ग दानपूर्विकः कायालेवदपि नवाधिप ॥ ॐ स्वादि स्थ सुचन्द्रस्फामाल्लांददौ कुम्भयमां ॥ मंसुचन्द्रसमालाय
प्रसत्वा सकलमम्भू दा ॥ मां माललां समहो क्षामृगु संप्रसत्वा समाददौ ॥ श्रेणि नमः स्वस्तुव नंयथो ॥ नमः कृत्वाम्भूदानग्रस्नात्वा शुम्बवाव नमः ॥ मामाल्लां म
लकवस्त्रानं दत्त मस्तामगुयमू ॥ नमः एवं स्वमात्मा नमलं कृत्वाहिमादिनः ॥ सप्तात्मनाजल नत्र प्रजि विस्व मपश्यकः ॥ नं दिव्यसंदवं कानमाला
नः प्रणि विस्वकं ॥ समीक्ष्य सप्रसन्नाता स्मृत्वा नमंसुवाधियं ॥ नमः समतस्व मा त्मानं दर्शयितुं सुमृतसूकः ॥ सुदर्शनालयानुं घावालिकम्
मास्वनम् ॥ नं दिव्यानि सुन्दवं कानं वावालिकम्पागतं ॥ समीक्ष्य नत्र प्रणीहावा निर्वीर्यवमत्ताथना ॥ सूचमात्र स्वमायादि कृतं स्यनपनः प्रिया ॥ ता
धीतदर्शनाली हनक सहसान्यनः ॥ एवं नत्कथितं श्रुत्वा सक्रमः सम्पाप्तिनः घावपालं प्रगाल्हनं संपश्यन्न वमब्रवीत् ॥ कृत्वा संनपोमी वाज्ञाक
थं नह्यान्यनत्वया ॥ ॐ निप्राकाश सहमीन्द्रा घावालिकं समावसत् ॥ एवं नं प्रक्रमनंस घावपालेः समीक्ष्य ॥ सहसानत्यवनः स्थित्वा निवावयन्नः

मिश्रुर्णि न या ॥ न म वं स्हि म मा त्ता क हे स सा सक्र आ ग म : ॥ ला यी स द र्ग ना द्रष्टुं स प श्य न्त स म पा स त नू ॥ नं दि व्य स न्द वं का न म पा या नं स मी क्ष सा ॥ त्व
र्गं ना खि रि न्ना स्या ही मा म ह्लै प वा घ्न स्वा ॥ स मी क्ष वं स्हि गां ही कां म त्वा स स्त सा क्र ग : म द्धि नि त्त य मा दा स्य पि क्ष य वा स सा द व नू ॥ पू न ग : स स म पा
श्रि त्त स मी क्ष स क्रु ऽ म नं प ॥ पू र्वि का यं स मा ध्य स्य द र्ग य न्न व म प्र वी मु ॥ क्ष यि स द र्ग न त द्र प श्य मा स्वा मि नं क्रु गं ॥ ग व द म तु नं नू पं द र्ग स्थि तु मि
ना द्र क्षे ॥ स्न मि त लो क्र म ना कं श्र त्वा ता यी स द र्ग ना ॥ ल क्षा स्त का वि न स्वा ना म स्थि वा द्रु क्ष सू से क्ष न ॥ ग न : स द र्ग ना प श्य त्ल पू व : स म पा श्रि नं ॥ दि व्या
ग स न्नू व नं का नां नि पे नू मं म ना ह वं ॥ स मी क्ष न स्त्र ना का वं स द र्ग ना नि वि ल्मि मा ॥ ॥ का य मि ह स मा या नि मा या वि नि व्य ग्नि न य नू ॥ ग न : स्ता न पू न
श्री स्य ली मा म ने : स म हि ना ॥ प ना यि तुं न मी न्व ग्र ग न्कु म ल्स म स्वा व व नू ॥ नां प ना यि तु नि स्त्र नी ला स्वा स मू हि ना क्र म : ॥ ष मी क्ष स ह सा य त्वा :
स मा ग्म स्थि व म प्र वी मु ॥ मा रे : स द र्ग न का न नू नं न ह पं पि क्रा ॥ ८ ॥ न नै न्मा लें श्र द्व या प श्य ना ग्र का र्य वि क ल्य ना ॥ ॥ ग नै त ड स मा ध्य य य

कुसस्ल नकुथ्य गता ॥ तन्नितांम्य समालोक्य संप्रसीदनदा प्रियं ॥ ततः प्राप्तसमुत्कण्ठाय स्तां कुं यामि स तावत ॥ प्रति विम्ब स्वकायस्य पश्यम्य दं
तदेश्रिसि ॥ सुवर्णं रविमाकारं दृष्ट्वा लज्जाहता सेयं ॥ तत्कुलं तिपतन्त्रा सः तत्कुं निश्चयमादधे ॥ ततः सूक्ष्मनत्प्रवरत्नाकं श्रावयामास तां प्रियां ॥
मद्ध्वलानमाकर्ण्य सा चैश्चर्यीहतसुदर्शना ॥ तथा पुनः कुशो वनेत्तमालामादाय मञ्जिनि ॥ विक्षप्य यासु सा यस्या स्वात्मनः पमर्दयत् ॥ तद्दृष्टुः
पुरीकं नयं समीक्ष्य सा सुदर्शना ॥ विसस्याक्रान्त विलावनस्थेलज्जानमानना ॥ ततः कुशः हरित्यमाद्दिव्यवर्णमालिकां स्वयं श्रीवप्र तिष्ठ
प्य दिव्यानूपमदर्शयत्ततः ॥ तं दिव्यसुन्दरं वं रूपं तद्दृष्ट्वा सुदर्शना ॥ समहितनन्दित स्वान्तास्य पश्यती मूर्दाश्रयत् ॥ ततः स कुशः आदाय तां ग्रीव
तावलिमदावादर्शयन्त्यां प्रियाशायंसि म्पम्यन्तव मत्रवीत् ॥ इयं रत्नावली हृद्य सचन्द्रस्य समर्पिता ॥ तमेष्याम्नूनं तावन दिव्यानि सुन्द
रीहर्वंतः ॥ इति तत्तीसमादिष्टं श्रुत्वा प्रहृष्ट सुदर्शना ॥ तस्य मितिपयि हृष्य प्रायन्तन्दन्त्रवाधिता ॥ ततः सुदर्शनादवी समहितनन्दितानया ॥

दवनागं सहृ:सत्वाप्र गस्वैवमसाषमवा धन्याःस श्रीसुवभानःसदा तव तुदवयाएतयना स्म लुपयादिव्यन तमालासमर्पिता:॥ ततः कृतः प्रसन्न
मनास्वनीक्ष गान्तु मनस्तकः॥ राजयान समालोक्य सदर्शना सवीरु नेः॥ स हृस्वयं समायक्ष गगत्यानं प्रभादितः॥ सदर्शनां प्रवाक्ष यमसात्ता हृ
स्तितावननृमक्र मार्गे समालोक्य सर्वे लोकाविनादयन्तोवास महितन्दिता त्मासत्वानां समूपाय योवाप्र त्यागतं तमाकक्ष्य सर्वलोकाः प्रमा
दिताः॥ कसं सदर्शनाड दृष्ट्वं प्रतीतिनुमपायास नकृतानम मिस्स वं दृष्ट्वा सर्वलोकाः प्रविस्मिताः॥ कायं नृप तायान कसं तस्य नृपस्वा
नृनमयं कसं हत्वा समायाय सदर्शनां॥ त्युनुंवाय्यं हस्यान निप्राक्ता क्विविवा॥ एवं ततः सकलैर्लोकैः प्रत्याख्यातं निगम्यस:॥ समीक्ष्य स
हस्ता यात:स्वपूनं समपास नमु॥ स्वप्रजं कृतमायातं गृत्वा सर्वप वाश्रिताः॥ लोकाः संहर्षिताड दृष्ट्वं स्वस्वगृहान्मुदा यननृ॥ तंनृपे मे सपायातं
समीक्ष्य दिव्यसं देवं॥ कायं नागा कृत्स्नं नैव नृपिसवी पप्रावदन्॥ एवं प्रत्याषितं सर्वैः पौरैर्लोकैर्निगम्य स:॥ यागा कृतामुदा लोक्य नाजक

लम्पानवत्॥ तत्रनं समपायां तं समीक्ष्य दिव्यसन्दन॥ कुमाराः जनाः सर्वे विस्मिताः स्थितवन्त॥ सर्वेपि सन्निहिता माम्याः जनाः सैन्यात्ववस
वकाः॥ तं दिव्यसन्दानी वीक्ष्य स्मिता हृष्टवनस्थितव॥ मान्सवी स्मिता वीक्ष्य कृतास्य सहदा जनाः॥ तस्यान्तस्य सर्वे वत्तान्तं यां पृच्छान्य वदस्य तत्॥
त्र वं तदा विनिंर्गत्वा सर्वेपि सन्निहिता जनाः॥ कुमाराः सैनिकाः गत्वा पिप्रायनन्दत्र वाधिता॥ धनतनस्तत्र मनः सर्वसंदत्वा कुलं गत्याः॥ तं वथ
द्रू समीक्ष्य ताः स्मृत्वा संस्मिता हृष्टवा॥ ततः स कुमाली श्रीकान्तवीन वमास्थितानू॥ मातुः सन्दर्शनं कर्तुं वा जकुलं समद्रा विनत्॥ तत्र तानः पृ
गत्वा मातुर्न त्वा पदं स्पृष्ट्वा॥ तं पश्य तत्प्रसन्नास्यः पूर्वक्रमात् समुपाश्रयत्॥ तं पूर्वः समपाहीनं समीक्ष्य दिव्यसन्दनं॥ सा त्सिन्दा विस्मयापन्नापप्र
च्छ वं तताननां॥ कन्त्वमित्र समायासि किमर्थं तद्वदस्व मे॥ आत्मजः स कुमारो नाग्नानहायामि गतः॥ कुत्रा त्रवं मा जानन्याम्याकं गत्वास कुर
श्रीलः॥ मातनं त्वां समालोक्य संस्मितेन नव मत्र वीत्॥ मातनवदं कुलान्तनें गत्वा स्मज्ञानवाधिपश्चात् सदर्शनां समानीय पिवादिह समागतः॥ अ
भि [illegible] हाविनिर्गत्वा सा स्त्रिन्दार पितिवा विता॥ समीक्ष्य तं सुतं द्रागं पूत्रवमत्ता वन्धा॥ किंन प्रत्यहि ज्ञाना मिस्या तस्मै गमे कुमेनपः॥ इति

सा जननी प्राज्ञा संस्मृत्यैवं व्यचिन्तयत् ॥ नूनमयं कृष्णं त्वा समादायसदर्शनां ॥ इदं वाक्यं समाकर्ण्य स्वयं लोकं मितामतः ॥
इति निश्चित्य सा लिन्दा मामा म्नत्वात्मजं कृष्णं ॥ मम हा तु त्वाग्निसंमप्को विललाप विधीदिना ॥ जननीं नां प्रसन्देह स्वास कृष्णः सहसा द्विज
मः संपश्य रुदन् ज्ञात्रित्य समागत्य स्येवमब्रवीत् ॥ मातः ईर्ष्यासमालम्ब्य पश्य मां त्वात्मजं कृष्णं ॥ नन्द हं त्वात्मजं रूपं दर्शयामीह मे धनाय इति
स्य सस्मादाय नत्व मालां त्व भीर्षमः थाविश्यय वासस्ता ध्यत्वा त्वामसृपमदर्शयत् ॥ मं समी स्थ स्व नृपस्थं सामामा विलिख्या त्विमा ॥ सखिवं समरी
य:नि पुनरेवं व्यचिन्तयत् ॥ अहो कायं मत्तो हि हा मायावी हसमागतः ॥ इति निश्चित्य सा लिन्दा मस्तोसं दिव्यमानसा ॥ अवं स्थितां समार्ले
स्थमागत्वं मां सनन्दनमा संपश्यन्समपात्रित्य संस्मिन त्वब्रवसब्रवीत् ॥ मातः कथं न जानासि त्वात्मजं नन्दनं कृष्णं ॥ अयं स्य वत्सलानामा रख्यामि तद्द
सध्वस्त मा हिताय त्रिहा वात्सल्य नृपा हे श्री लोकार्ये लेहस्तथा ॥ इत्यस्मान्निज वत्सलां तं कथयामास मातरं ॥ इति वत्सलानामाध्याय माप्तः प्रवः सञ्ज्ञी

ग ग

गताः ॥ रत्नमालां समाश्रित्य समीक्ष्य समदर्शयत् ॥ तां समीक्ष्य प्रसन्नास्या सालिन्दा गगनीमदा ॥ प्रणत्वा साञ्जलिः प्रेक्ष्य सादरं भवरं ब्रवीत् ॥
नाथ देवाधिपः पश्य सदृश्यं मम मात्मजं ॥ रत्नमालां स्वयं दत्वा संपाल्यास्यु न वर्द्धितं ॥ ०॥ स्यक्षा साम तादवी संस्मृत्वा मां स्रवाधिपं ॥ समहित
दिनायाना प्रणनाम कृत्वा मजं ॥ प्रवंशाः सकला वामा श्रुत्वाः पुनः समाश्रिताः ॥ रत्नमालां समालोक्य प्रहृष्टा बहिनन्दिताः ॥ तत्र सदर्शना देवी
दिव्यम्नाम हिमवन्दितुं ॥ मदा सर्वो जनैः सार्द्धं पश्यन्ती समुपाश्रयत् ॥ समीक्ष्य तां समायान्तां सा स्वपुत्रं संप्रसादिताः ॥ प्रहितं कृत्वा मङ्गलं तेज संपश्य
न्ती स्वपुत्रघनं ॥ तत्र सा समुपासन्ती तस्याः स्वपुत्रः पदमूजं ॥ नत्वा तस्याः समीक्ष्य सर्वास नसमुपाश्रयत् ॥ तत्र तस्याः सर्वोत्सवा मातुर्द्व्या उपाश्रि
ता पश्यन्ती सर्वबालानं विस्मितं तं न्य ● वदयत् ॥ गता समाकर्ण्य सालिन्दा देवी समन्तादिताः ॥ सत्यमिति परिज्ञाय प्रास्यनन्दस्त्रवाधिता ॥ तदा
ताः सकला वामाः सु परत्याः रक्ताः प्रवाश्रिताः ॥ सुदर्शना महि द्रष्टुं मुदिताः समुपासनं ॥ ताः सुदर्शनां वीक्ष्य संप्रहृष्टा कृताञ्जलिम् ॥ वन्दित्वा
समुपाश्रित्य संपश्यन्तीः समाश्रयत् ॥ ततः कृत्वा महीनाथः सुदर्शनं शिशुं स्वनृपकं ॥ सर्वलोकसभामध्ये सिंहासने समाश्रयत् ॥ तं सिंहा

८२

सनक्षत्रासिनं समीक्ष्य स पूर्व्वादिहागताः ॥ ब्राह्मणाः स्वामिषं दत्वा सर्व्वे पूर्ववदुपाश्रयन् ॥ तथा रत्नगाः क्रमात्पात्सुप्र स्नुनमर्म्मप्रभं नपं ॥ वन्दित्वा नन्दि

मस्वान्ताः सर्व्वे द्विसमूमाश्रयन् ॥ ततस्तमग्निरूपमात्याः सर्व्वे सैन्याधिपाजनाः ॥ वन्दित्वा तं महावाजं सपञ्चशतं उपाश्रयन् ॥ तथा रत्नश्री वि

नाद्रव्याः सर्व्वेपि सवकाजनाः ॥ समीक्ष्य तं स्वलक्षितं वन्दित्वा पाश्रयन् ॥ ततो ग्रामसहाजनाः पौरा वैश्याः पितामहाविपाः ॥ तं कृत्वान्य

पिं प्रश्नप्रात्यनन्दत्त्रवाधिनाः ॥ ततस्त्रान्सकालोत्ताकान्त्रवाधिनान्समीक्ष्य सः ॥ क्रमात्संदिव्यलक्षणांगं संदर्शयितुमसमे द्रष्टं तथा ततः समितसि

स्थाप्य मां दिव्यरत्नमालिकां ॥ दिव्यरूपं लक्षणांगं स्वात्मानं समदर्शयत् ॥ तं दिव्याकृतिं संदर्शं कान्तं सलक्षणांगं प्रलम्बालिगं ॥ प्रेक्ष्य सर्व्वेपि ते लोकाः

प्रात्यनन्दत्त्रसादिताः ॥ सर्व्वे प्रसादितात्मानः कान्त्यान्समीक्ष्य कृताञ्जलिं मुदा ॥ सद्धर्म्मं समुपादर्शं सपञ्चशतं व मादिमतः ॥ सर्व्वे प्यत्र समाश्रय

न्तरत्नं धर्म्मामृतमं ॥ प्रबदामि गृहात्मा वंहद्रष्टी स कुशार्थदं ॥ धर्म्मी वान्तोय वान्हाभ्यः सर्व्वे विद्याविचक्षणाः ॥ सर्व्वे लोकाधिपाः स्फस्तास्सर्व्वेसि

द्धिहितार्थहनूनां ॥ धर्म्मं समस्व दारउंन्तिरत्यानं समन्ततः ॥ महानन्दसुखावहं मुक्त्या यानिसुबालस्यं ॥ धर्म्ममद्रउं स्त्रान्सर्व्वी प्रिन्त्वा मु

ष्टिभिर्गुप्ताः ॥ तद्धिताभिनिर्म्मिता लोकास्तान् संप्रयाति सुखावहां ॥ धर्म्मश्रिष्ठ स्वयं गत्वा लक्ष्मी स्वदासं निष्ठमसुखं ॥ अथ श्रीघनसदा मत्रनमस्कृ
समालोक्य महाविनेयेश्वरः सन्मतिः प्राह ॥ सर्व्वे विमागुप्तश्रयः ॥ सर्व्वसत्त्वहितात्साही चतुर्व्वर्गविस्तारकः ॥ धर्म्मसंसमज्ञाज्ञानामाधिव्यवस्थि
तमानसाः ॥ सर्व्वसत्त्वहितं कृत्वा संप्रयान्ति सुनिर्वृतिं ॥ तत्सत्समागत्या नं सर्व्वे च पिसनीग्ध्वनेः ॥ एवं सर्व्वपविज्ञाय संवत्सरं ध्वंसस्संवत्
मानप्रसन्नज्ञासाध्य सद्धर्म्मं संवन्नित्यानंगधां हि निरूद्वैलं जन्मसौ विनं चरत्व सदा ॥ तद्धि सर्व्वे नावानाद्रः गोलाद्विमान्वताः ॥ स्वपर
सामित्रं कृत्वा संवत्सरान् सदा गुरु ॥ ततः क्षमापापि नाद्रक्षाः सदा रः स्वाद्यनिमापिताः ॥ रः स्वान्यं च सदा उत्साम प्रमावृ जन्तिं द्रगीर्भिः ॥ एवं सर्व्वैः स
मागत्य मनि निर्द्रिष्टिं हृत्वच्चपि ॥ सत्त्वं मितिं पविज्ञाय संवृद्धं हजनानवं ॥ संप्लुत्थं मनीन्द्रास्यं सद्धर्म्माविधिसाधनं ॥ संघानां हजनं कृत्वा
संचव ध्वस सदा गुरु ॥ तत्तिनत्सम पादद्या नं कृत्वा सत्तासमाश्रिताः ॥ लोकाः सर्व्वे च त्वा तस्यानुज्ञासनं ॥ सद्धर्म्मसाधनात्सादिस्स मावचनन्स सदा गुरु ॥
तद्धर्म्मानुमादनैः प्राप्य नन्दन्त्रवाधिना ॥ एवं कृतः सनमीन्द्रः सर्व्वांल्लोकान्स्त्रवाभयन् ॥ संस्थाप्य कृत्वा चर्य्यां स्वप्राज्ञावतत्सदा सुखं ॥ एवं सन्

३ यमीनागाद त्वार्थिख्यायप्रास्त्रिमं॥वाषिवर्ष्यात्रनं धेता समावनक्रुराष्क्षि नयात्र्यवंसर्वेदपि लाकास्तृ षत्वा नस्यान सोसनं॥सत्व र्म्मिसायना
त्याहि समावनन्सदामुत॥न्नतद्धर्म्मा न्नुलावननक्षिषयसमनानः॥निवृत्यानं भुलात्याहं पावर्लनिवनानं वं नत्सं वहिं समालाक्षसः
तीनाकाधिपामृदा॥सहस्त्राहिसमी कर्नासत्व वक्रः सदामि वंधनसेमक्षिल सोवस्त्रं प्रसा॥विनं समनानः॥सवेदि पाः समाघ्रायवि॥
सन्नं सम्प्रायययः॥ननः सर्वेपिनदपानिन्नयनस्यस कुभनू॥सहिनन्दिनत्वान्नासत्य रास्त्विवाष वांयननान्यनयः सर्वेक्रअस्य॥
सनानः पला॥मूदानभसनं यत्वाप्रावव क्षनुशाग्निमा॥प्रवंसर्वोन्महीपालानसं पालस्य प्राहिनन्दयनू॥सर्वेधर्म्मोषिपः॥स्त्रानक्रवली
सभनवनू॥स्याश्रीकूलेसमहीपालस्य वक्रवर्लीकूलभत वक्रू॥जेहूमवाहवंनूनं कामनागविमाक्षिनः॥यासोसदर्गेनादवीकूतस्यप्रिया
सभीयात्रषान्यमाधनादवीरवनि समनदाखल॥नदालिन्दासहादवीयासामायाममप्रसे॥न दायारत्तवं क्षाव्यः नुक्षादनाघूनापिना॥
ननाप्रासमद्र कानाजादमुपानिवरदयं॥इमपिन्नामयानाजामाव्र॥तव रुपा॥नदायषोमद्य॥इदः कृमेनेक नसउिया॥इकी २१

मातृस निर्जित्य निर्मदी कृत नः॥ तर्म क्ष्मेपि मये कन मालत्र बा मिर्दर्मि मिः॥ वाधिमलात्रिन नेव निर्जित्य खवमा॥ कृत नः॥

॥ःमि श्री हद्रकल्पावदानं [illegible] लोकापगुप्त संलाव हाक्षन संदर्शनाप थि वर्ली नाम त्रिंमतितमो ध्यायः॥ २० ॥ अथ सो श्री

धनी नाथः पुनः प्राह निर्गो कथा॥ पूर्वा त्र स्थाग मः पूर्वत्रगां दीवाहमि पार्थिवो॥ श्रूयमां सकलो लोका ःम॥ ॥ मपूर्व कथं

[illegible] नार्थ उपमनः पत्नीं त्वक्त्वा प विग्र तन॥ तत्पथ्महत्य नाक [illegible] प्रिय दर्शन नाथि पः॥ स्रनीति वर्म्म हरु स्ता पजाव त्सलर लोम

लिश्रीत वश्री माल्वा वंश स्यां वनि क्रिया प्रियस नालि ख [illegible] मान्ताथे नाद ः समृद्धिमान्॥ तस्या त्म जोत वश्री मानू सद्गो या स्वा ःस

नवादि या सिसुन्दनः कान्ता दर्शनीय ःरु तंलि कःयम बाल [illegible] सत्रीर्विहः सर्वगुरु स्त्र रक्षिमान्॥ सुभाक्तारक्त कला विद्या पालं गता

॥ःमात्रला सार्थ दिवि क लिक्ष्य वहा न्तयि कार्थ त॥ तदा तस्य पिता [illegible] गीत गार [illegible] वैलः॥ स्व कुत्ते म [illegible] थ्या कान्तगता दिवंययो॥

प्रियदर्शन रुद्र आय सार्थ वा सात्व निम्न थः रत्ना [illegible] माधि निमात वंद्या॥ एकदा स्व जनानां हृद्वा स्व [illegible] स्वयं ज्ञाना न्वपि

पकी नागा दक्षार्थिस्याय यक्षिनं ॥ या विवर्ग्यो ब्रूनं ध्वा समावव [illegible] गा छि [illegible] नयाम्प्र वं सर्वद पि लाका स्रु धत्वा नस्यानू सा सनं ॥ सद्व म्भि सा धना

तां हि स्स मा व [illegible] न्स दा भु ला ॥ प्र नद्व म्भि स्न ला व न न तु छि घय स भ न्ना न नः ॥ निव्र लाम भु ला त्वा हु पा वर्ल्म निय न्ना यं व न त्स वर्हि स मा ला क्व स्तः

तीका धि या म दा ॥ स द स्त्रा हि स मी [illegible] कना सत्र व क्रूः स दा भि वंधन लि न त्कि ल सो न त्वं प्र सा ॥ विनं स्स म न्न न नः ॥ स वृद्दि पाः स मा प्राय वि ॥

स्न [illegible] सम्भू पा य यः ॥ न नः स र्व पि न द पा निज्ञ म्पन म्पस कु [illegible] नू ॥ स म ह्नि न न्दि न खा न्ना स्न त्य ह स्कु छि वा ध वां ध न न ा न्य न यः स द्वं कु अस्य ॥

स न्न नः पलो ॥ मू दा नू ॥ स नं धत्वा प्राव व ख नू [illegible] ग्रिमा ॥ प्रवं स र्वो न्म ही पा ला न्सं पा ल्प प्रा हि नन्द यनू ॥ सर्वं घ र्म्मा खि पः ॥ स्ना [illegible] कु वलि

ह ह्त त व नू ॥ स्या सो कू त्स म ही पा ल [illegible] क्व वली कू भत व नू [illegible] ह म वा ह वं नू नं का म ना ग ॥ वि मा हि नः ॥ या सो स द र्गे ना द वी कू स त्य प्रिया

स [illegible] ॥ प्र मा न्य [illegible] धि ना द वी ल वमि स्म न दा ख ल ॥ न या लि न्दा स हा द वी या मा मा या म न प्र स ॥ न दा या त त्त वं [illegible] [illegible] ः स [illegible] द ना धू ना पि ना ॥

न दा [illegible] स्स ह्रु का ना जा द भु पा ति व ल द यं ॥ [illegible]

॥ मात्रस निर्ज्जित्य निर्म्मदी कृत ॥ अनङ्ग ... पिमयेकन मालत्र कामिदर्म्मि भिः ॥ वाधि मूला प्रिमनेव निर्ज्जित्य स्ववमा ॥ कृत ॥

॥ मिश्री हद्र कल्याव दानञ्ज लक्षका पगु फसं लाबला कृ मसं दर्श नाय घि वली नाम छिं मति नमा ध्यय ॥ २० ॥ अथ सोग्री

प्ली नाथः पुनः प्राह निर्ग्गो कथं ॥ पृ नात्व त्याग नः पूजां प्रगां ॥ दी वा हमि पार्थिनां ॥ कृ यमां स कृ ला लाका: मा ॥ ॥ मपू वे कथं

... नार्थ ज्ञमनः पतीं त्वक्षाप विग्र तान ॥ तु पथ्य हत्य नाक [illegible] प्रियदलान नाविषः ॥ सनीमि वर्म्मि हच्छ स्काप ज्ञाव तसल रीम

मिरी ल तव [illegible] मा त्वा वंश स्यां वतिक्क भिः ॥ प्रियस नाशिवः ॥ मा नार्थ बादः सम्रद्धिमान् ॥ गस्या त्वञ्जाल वशीमान् सश्री याश्व: स

नवादि या गिसव्यः काना दर्ज्जलीयः कुलां त्रिक: ॥ सवाल: स सी विह: सर्व्व गुनस्त क्रिमान् ॥ सभ्य स्का स्कुकला विद्या पालं गना

॥ मक्ता सा पृ विभिन्न लिव्य बहन थि मार्थ ल ॥ मदा कृष्य यिना क्षा दाषी ल मा रमिद्र वेल: ॥ खकृ ले मभा मिं [illegible] काल गगा दिवं यया ॥

प्रियदेलनल्लु ज्ञा ॥ सार्थ वा हाव लि पसथः रलास मानि निमाल व ॥ वक दाल्व गना ना हद ल्ला स्य लह माना [illegible] ॥ स्वयं ज्ञाना न्वयि

[illegible] निर्[illegible] नि[illegible] पिमये कन मा[illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible] सोश्री

[illegible] पूनः [illegible] निमां कथं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] प्रिय [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] प्रिय [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] प्रियदे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]